दीपावली महोत्सव विशेषांक
नवम्बर ९४
मूल्य-१५/-
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
लक्ष्मी कहां रहती है?
सौन्दर्योपासना सिद्धि
पुत्रोन्नति प्रयोग
घण्टाकर्ण साधना
नववर्ष साधना
सूर्य साधना उपासना
मंत्र योग से नारी सौन्दर्य
जीवन को सफल बनाती है :
सावर साधनाएं
लक्ष्मी स्थायित्व प्रयोग
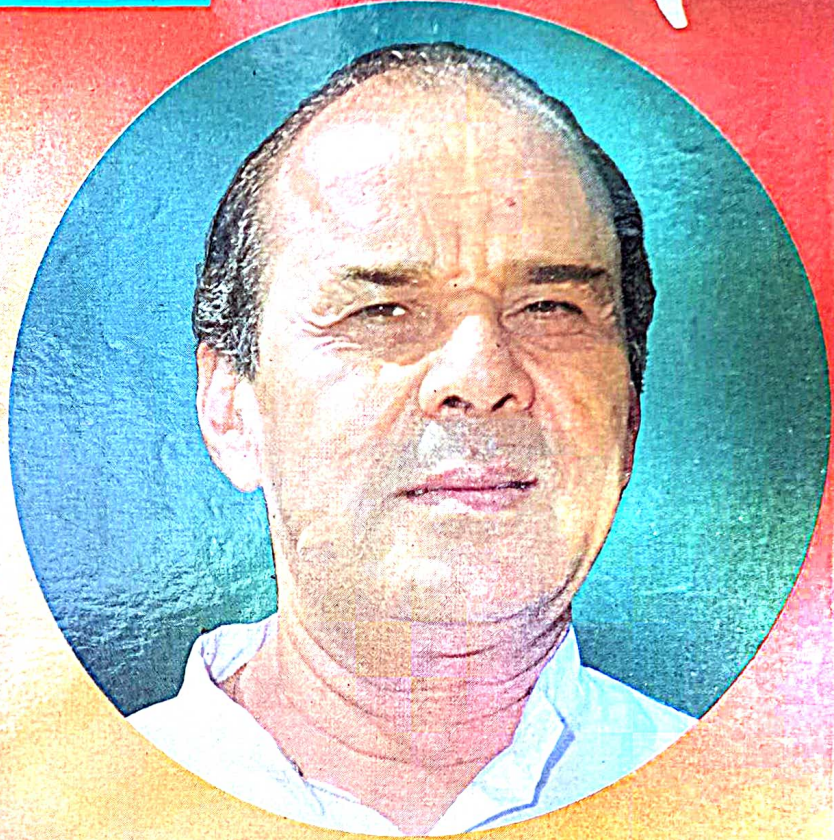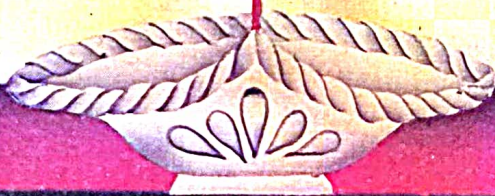
ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां
पूज्यपाद गुरुदेव
"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी"
द्वारा रचित

अनमोल ग्रन्थ. . . जीवन के हर आयाम को स्पर्श कर उनके रहस्यों को स्पष्टता के साथ उजागर करते हुए मौलिक और सारगर्भित ग्रन्थ जो आपके लिए एक अमूल्य धरोहर है. . . सजिल्द
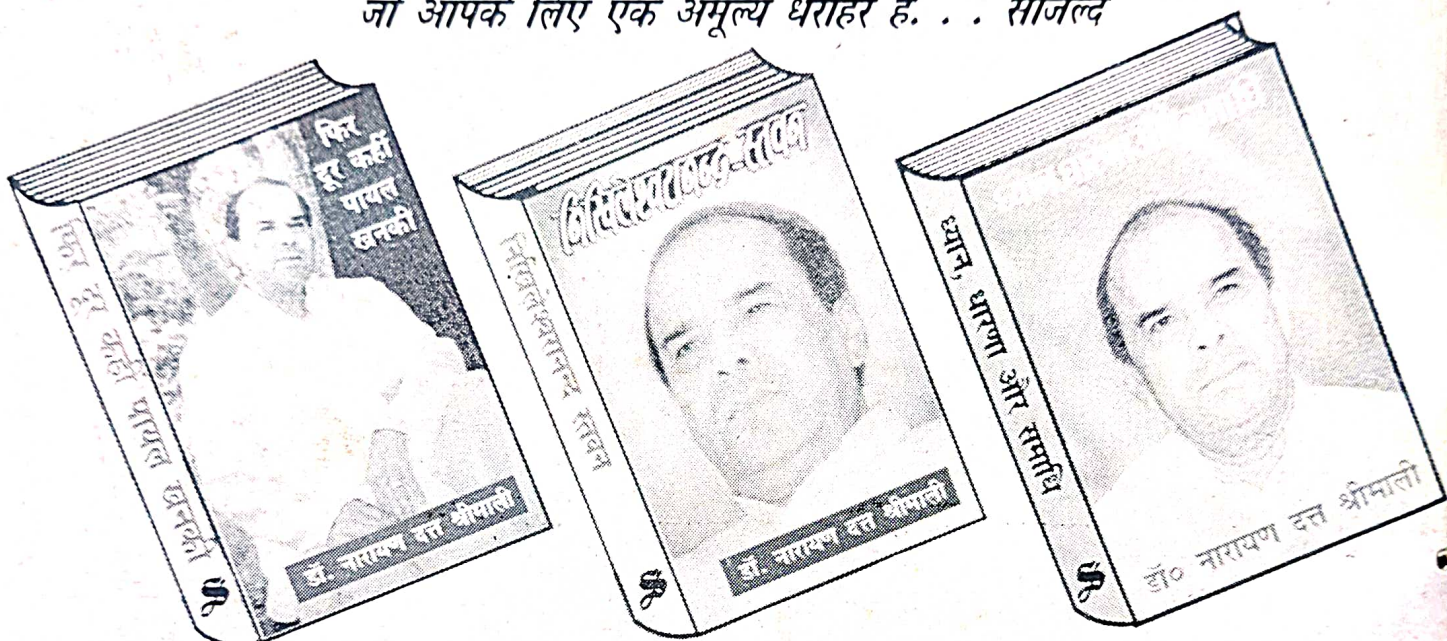
"फिर दूर कहीं पायल खनकी"

ब्रह्म, ईश्वर, आत्मा-परमात्मा के गूढ़ रहस्यों पर और कुण्डलिनी, ध्यान, धारणा, समाधि पर लिखना आसान है, पर प्रेम. . . प्रेम के रहस्यों को उजागर करना, स्पष्ट करना अत्यधिक कठिन।

और इसी प्रेम की व्याख्या तथा उसके माध्यम से ईश्वर प्राप्ति, कुण्डलिनी जागरण तथा पूर्ण साधना-सिद्धि से सम्बन्धित एक अनमोल ग्रंथ गुरुदेव श्रीमाली जी की लेखनी से लिखित. . .

"निखिलेश्वरानन्द स्तवन"

मात्र एक ग्रन्थ ही नहीं अपितु जीवन्त, जाग्रत व्यक्तित्व है, जिसके पाठ से ही अपूर्व शांति और पूर्णता प्राप्त होती है। जो भी श्रद्धावान शिष्य हैं, उनके लिए तो यह कृति **'पूजन' है, 'शिष्यत्व' है, 'पूर्णत्व'** तक पहुंचने की क्रिया है. . . जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाकर, आनन्द के गानसरोवर की गहराई में उतर कर, पूर्ण गुरुमय होने और सम्पूर्णता प्राप्त करने की दृष्टि से यह बेजोड़ कृति है, जो संन्यासियों द्वारा पूज्य गुरुदेव को ही समर्पित है।

"ध्यान, धारणा और समाधि"

मात्र एक ग्रंथ ही नहीं, शब्दों के माध्यम से सरल भाषा में समझाया गया है— किस प्रकार शरीर, प्राण और आत्मा के अन्दर पहुंच कर ध्यानावस्थित होते हुए समाधि अवस्था प्राप्त कर ब्रह्मानन्द में लीन हो सकते हैं।

जो **ध्यान, धारणा और समाधि** का वास्तविक अर्थ है!

न्यौछावर सजिल्द मूल्य प्रति – ९६/- मात्र

: प्राप्ति स्थान :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०९

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

अजय कुमार उत्तम "निखिल"

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

प्रार्थना

या देवी भवभोग भाजनवती दृष्टिं च पुष्टिं प्रदा,
यस्या माप्र कृपा कटाक्षकणिकां लब्धुं परां दैवतां।
सर्वैराधन तत्पराखिल विधि देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु धनेश्वरी भगवती लक्ष्मी च दीपोज्ज्वला।।

भगवती लक्ष्मी संसार के समस्त भोगों को देने वाली, ज्ञान एवं आयुष्य प्रदान करने वाली, जिसकी पावनतम कृपा को पाने के लिए समस्त जीव मात्र आराधना में संलग्न रहते हैं, जो देवों द्वारा वन्दित एवं पूजित है, वह धनदायिनी भगवती लक्ष्मी, जो दीप मालाओं से दीप्त होती है, वह सदैव मुझे धन, ऐश्वर्य, सम्पन्नता से पूरित करे।

नियम

अनुक्रम

साधना

०९ ऋद्धि सिद्धि अनुष्टान प्रयोग
१५ भैरव पूजा साधना आराधना
२४ सौन्दर्योपासना सिद्धि
२७ लक्ष्मी की पूजा नहीं उसे घर में स्थायित्व दीजिये
३० शालिग्राम उपासना और रोगनाश
३२ घण्टाकर्ण साधना
४९ नववर्ष सर्वोन्नति प्रयोग
५५ पुत्रोन्नति प्रयोग
६५ सूर्य साधना उपासना
७० जीवन को सफल बनाती है : साबर साधनाएं

दीक्षा

६१ उर्वशी दीक्षा

सद्गुरुदेव

०५ गुरु व्यक्ति नहीं एक शाश्वत शक्ति है
३४ वे गोपनीय प्रयोग जो . . .

सौन्दर्य

७६ मंत्र योग से नारी सौन्दर्य

स्तम्भ

०४ पाटकों के पत्र
२२ साधक साक्षी हैं
५२ राशिफल

रिपोर्ताज

४५ आश्विन नवरात्रि महोत्सव लखनऊ

कथ्यात्मक

१२ लक्ष्मी कहां रहती है?
१९ जब विवेकानन्द ने काली साधना सम्पन्न की
४२ शाक्त साधना की पृष्ठ भूमि में वैद्यनाथ धाम
५७ रससिद्ध खेचरी गुटिका
६७ राजयोग के सोपान
७२ मानस कन्या की दिव्य सिद्धि

दीपावली जीवन्त पर्व है, जो यह सिखाता है कि किस प्रकार जीवन में प्रकाशित होना है, किस प्रकार अमावस्या की महानिशा रात्रि में भी दीपक की तरह अन्धकार को पूर्णरूप से मिटा कर दिव्यता का प्रकाश फैलाना है. . . यह प्रकाश दीपक के माध्यम से मात्र एक रात्रि के लिए ही नहीं फैले, अपितु आप के अपने जीवन में भी यह प्रकाश उत्पन्न हो जिससे पूरे परिवार में ऐसी जगमग ज्योति जले कि सम्पूर्ण सदस्यों का जीवन आलोकित हो सके। दीपावली तो प्रतीक रूप में केवल एक दिन का त्यौहार है, लेकिन नित्य प्रति साधना, सेवा, तपस्या एवं दीक्षा के माध्यम से अपने भीतर यह दिव्य ज्योति प्रकाशित की जा सकती है, जिससे जीवन का प्रत्येक दिन दीपावली की ही भांति पूर्ण आनन्द युक्त, रस यु क्त, सौन्दर्य युक्त और चेतना युक्त हो सके।

पिछले माह **''महालक्ष्मी विशेषांक''** में कुछ विशेष साधनाओं के सरल प्रयोगों को देने का प्रयोजन भी यही था, जिससे जीवन धन्य हो सके। जिस प्रकार जीवन को हम अपनी सुविधानुसार कालखण्ड में बांट लेते हैं, जबकि जीवन तो एक निरन्तर बहता हुआ प्रवाह है, तो फिर इस जीवन में ऐसा विचार निरन्तर बनना चाहिए कि पिछले क्षण से वर्तमान क्षण और वर्तमान क्षण से आने वाला क्षण और अधिक उज्ज्वल हो, साथ ही जीवन के प्रत्येक रस से सराबोर हो।

यह दीपावली विशेषांक मुझे आपके हाथों में देते हुए विशेष प्रसन्नता इसलिए भी है, क्योंकि पिछले कुछ समय से साधना के बारे में जो हजारों पत्र आ रहे हैं और पूज्यपाद गुरुदेव की उपस्थिति में होने वाले साधनात्मक शिविरों में हजारों की संख्या में आप लोगों का एकत्र होना इस बात को स्पष्ट करता है, कि आखिर साधकों में, शिष्यों में नवीनता प्राप्त करने की चेतना जागी है. . . और जो अब जाग गया है वह कभी सोयेगा नहीं, अपनी चेतना को तीव्र से तीव्रतम बनाने के लिए निरन्तर जाग्रत ही रहेगा।

लक्ष्मी साधनाओं के ही क्रम में यह आवश्यक है, कि हम लक्ष्मी के उस ऋद्धि-सिद्धि, गणपति स्वरूप को भी समझें और इस बात को भी ध्यान रख सकें कि **''लक्ष्मी कहां रहती है''**– इसे भी इसी अंक में स्पष्ट किया गया है, क्योंकि लक्ष्मी की पूजा तो प्रत्येक गृह में होती ही है, लेकिन आवश्यकता इस बात की है, कि वह स्थायी रूप से साधक के घर में, हृदय में, जीवन में निवास करे।

इसके साथ ही वे गोपनीय प्रयोग भी दिये गये हैं, जो हमें कृपा स्वरूप **''पूज्य गुरुदेव की डायरी से प्राप्त हुए''**, इनका तो महत्व ही अद्‌भुत है। जैन साधना तंत्र में **'घण्टाकर्ण यंत्र'**, और उसकी साधना तीव्र तेजस्वी मानी गई है, इसका प्रामाणिक स्वरूप आपके लिए प्रस्तुत है।

जहां जीवन में शरीर और आत्मा दोनों का पूर्ण सौन्दर्य हो, वही जीवन सार्थक है, और इस विशेष क्रम में **''सौन्दर्योपासना सिद्धि''** और विशिष्ट **''सूर्य साधना''** देते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है।

पूरे **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** परिवार की ओर से आप सभी को दीपावली महोत्सव की शुभकामनाओं के साथ –

आपका

नन्दकिशोर श्रीमाली

पाठकों के पत्र

● अक्टूबर का अंक प्राप्त हुआ, अत्यन्त प्रसन्नता हुई। वैसे तो पत्रिका का प्रत्येक अंक अत्यन्त रोचक व ज्ञानवर्द्धक होता है, किन्तु इस बार का यह **"महालक्ष्मी विशेषांक"** अत्यन्त हृदयस्पर्शी है। **साधना, चिकित्सा, विशेष स्तम्भ, दीक्षा, सद्गुरुदेव, ज्योतिष** एवं विवेचनात्मक लेखों के अलावा **पाठकों के पत्र** व **साधक साक्षी हैं** अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्द्धक, प्रेरणादायक एवं सद्मार्ग की ओर प्रेरित करने वाले आलेख, अनुभूति सभी प्रशंसनीय हैं। भारतीय संस्कृति व हिन्दुत्व का ज्ञान, अर्थ, चिन्तन प्रदान करने वाली **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** पत्रिका के सिवाय और भारत में कोई दूसरी पत्रिका नहीं है।

राधाकृष्ण कुशवाहा
जगदलपुर, बस्तर

● परम पूज्यनीय गुरुजी, अवगत हो कि मैं आपके साहित्य से अत्यधिक प्रभावित हूं और "भगवती कुण्डलिनी जागरण" एवं "सप्त चक्र वेधन" (कुण्डलिनी सिद्धि) की मेरे हृदय में विशेष उत्सुकता है— क्या शक्तिपात के द्वारा आप कुण्डलिनी जागरण जोधपुर में ही करते हैं या दिल्ली में भी करते हैं?

राजकुमार पाण्डेय, सफीपुर,
उन्नाव

— शक्तिपात की क्रिया दिल्ली, जोधपुर अथवा किसी भी ऐसे स्थान पर जहां शिविर का आयोजन हो, सम्पादित की जाती है। आप से अनुरोध है कि, कृपया आने के पूर्व फोन द्वारा निर्धारित कर लें— पूज्य गुरुदेव कहां हैं, फिर वहीं जा कर आप दीक्षा प्राप्त करें।

— उपसम्पादक

● आपके यहां से प्रकाशित मासिक पत्रिका मैं कई महीनों से पढ़ रहा हूं, मुझे काफी अच्छी लगी, और अगले विशेषांक की बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा में रहता हूं। मेरी स्थिति के बारे में आप को मैं आज अवगत कराने जा रहा हूं, और मुझे आप के मुखारविन्द से निकले अमृतमय वचनों को सुनकर, मैं आज भगवती महामाया मां काली के समक्ष दिन भौमवार दोनों हाथ उठाकर संकल्प लेता हूं, कि आप के हर आदेश का मैं हमेशा पालन करूंगा। गुरु-शिष्य का सम्बन्ध वैसा ही रखूंगा, जैसा गुरु द्रोण और शिष्य एकलव्य का था।

विधान चन्द्र शुक्ल
चिखली, बलसाड़ (गुजरात)

— आपकी भावनाओं को पूज्य गुरुदेव के श्री चरण-कमलों में रख दिया गया है। आप अपना फोटो भेजकर प्रारम्भिक गुरु दीक्षा प्राप्त कर, गुरु मंत्र का अनुष्ठान सम्पन्न करें। पूज्य गुरुदेव ने आपको आशीर्वाद प्रदान किया है।

— उपसम्पादक

● मैं **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** का वार्षिक पाठक हूं, इसलिए मैं थोड़ा साहस कर रहा हूं, कि आपके पास पत्र भेजूं। योग्य गुरु से न मिल पाने के कारण दीक्षा के बिना मेरा अमूल्य जीवन बेकार बीतता जा रहा है। **"मंत्र रहस्य"** पुस्तक में देख कर **"सिद्धि विनायक मंत्र"** का जप आज तक कर रहा हूं, लेकिन उतना सफलीभूत नहीं हो पाया हूं, जितना होना चाहिए, मेरी हर तरह की भावनाएं मरती जा रही हैं। कृपया जीवन दान दें।

अर्जुन रजक, सिरामपुर
गिरीडीह (बिहार)

— आप गुरुधाम तक आने में असमर्थ हैं, इसके लिए आप अफसोस न करें। अपनी फोटो भेजकर, "गुरु दीक्षा" तथा "गणपति दीक्षा" प्राप्त कर लें, फिर साधना सम्पन्न करने पर पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाएगी।

— उपसम्पादक

● श्री चरणों में बालक चांद सिंह की ओर से कोटी-कोटी वन्दन। अपने ही साधक भाइयों से मुझे सूचना मिली, कि सिद्धाश्रम के निर्माण के लिए साधकों ने सहयोग देने हेतु फॉर्म भर कर दिया है पानीपत शिविर में, मैं भी अपना हिस्सा देना चाहता हूं, अतः मुझे फॉर्म भिजवायें।

सी० एस० पुरोहित
५६ ए० पी० ओ०

—सिद्धाश्रम का निर्माण आप जैसे समस्त साधकों के संकल्प व सहयोग द्वारा ही सम्भव है। आप अपना सहयोग जिस रूप में देना चाहें देसकते हैं इसके लिए फॉर्म भरना ही है ऐसा आवश्यक नहीं है।

—उपसम्पादक

● महोदय जी, आपका **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** का **अलौकिक विशेषांक** नवम्बर १९९३ का पढ़ा। एक व्यक्ति के पास ट्रेन में देखा और पढ़ा, मेरा आत्मविश्वास जाग्रत हुआ, धन्यवाद।

मनीराम जी चांगरे,
नवल नगर, जलगांव

● **"चण्डी"** पत्रिका को विनम्र उत्तर देकर आपने चरितार्थ कर दिया, कि—
"क्षमा बड़न को चाहिए,
छोटन को अपराध
का रहीम हरि को घट्यो,
जो भृगु मारी लात"

विजय प्रकाश शास्त्री,
नारनौल

● **शाहदरा, दिल्ली** से **श्री संजीव जी** का पत्र प्राप्त हुआ। उनके पत्रानुसार सितम्बर ९४ के अंक में "जैन तंत्र सम्पूर्ण तंत्र" नामक लेख में पृष्ठ १८ पर श्री वृद्धिकारक णमोकार मंत्र की आखिरी लाइन में **"हुं"** के स्थान पर **"ॐ"** आता है, अतः मंत्र है—

ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमः स्वाहा।

वर्ष १४ | अंक ११ | नवम्बर ९४

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरुसेवक, गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार -** अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राज.), फोन : ०२९१ - ३२२०९

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

गुरु व्यक्ति नहीं शाश्वत शक्ति है

संस्कृति में 'गुरु तत्व' को महत्व दिया गया है, उनके प्रति निष्ठा रखने के लिए अध्यात्म-प्रेमियों को प्रेरणा दी गई है—

''वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्''

''तुलसीदास जी'' के अनुसार **''गुरु व्यक्ति नहीं एक शाश्वत शक्ति है''** जो पात्रतानुसार व्यक्ति में प्रतिबिम्बित होती है।

गुरु तो वह जाज्वल्यमान शक्ति है, जो शिष्य के मलपाक तथा इन्द्रियजन्य दोष होने पर, चित्त पर से मल का आवरण हटा देता है, जिससे कि उसके भीतर एक अनुग्रह शक्ति का उदय होता है, अतः जिसके फलस्वरूप उसे शांत और निर्मल आत्मा का दर्शन होने लगता है।

उस अद्वितीय तेजपुञ्ज का अहसास मात्र ही मानव जीवन को साकार कर देने वाला होता है। जब गुरु का अहसास मात्र ही इतना रोमांचकारी और प्रफुल्लतादायक होता है, तो उसका स्पर्श कैसा होगा. . . इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि **गुरु तो एक ऐसी पुरवाई है, एक ऐसा झोंका है, जिसे अनुभव करते ही व्यक्ति एक मदमस्त हाथी की तरह झूमने लगता है, उसका चिन्तन मात्र ही व्यक्ति के होठों पर एक आकर्षक और मोहित कर देने वाली मुस्कान बिखेर जाता है।**

ऐसा होने पर उसके जीवन में अनायास ही एक मिठास सी घुल जाती है. . . और जिसने उस मिठास को, उस आनन्द को चख लिया, वही उसकी महत्ता को समझ सकता है, क्योंकि केवल मात्र गुरु ही ऐसा आनन्द है, ऐसी खुमारी है, ऐसा जाम है, जिसे पीते ही शिष्य अपनी समस्त पीड़ाओं और बाधाओं को ही नहीं, अपने-आप को ही भुला बैठता है, अर्थात् स्वयं को उसमें लीन कर पूर्ण आनन्द प्राप्त कर लेता है, उस परमात्मा से एकाकार हो जाता है।

— किन्तु यह मस्ती, यह खुमारी, यह आनन्द उसे गुरु-कृपा एवं गुरु की सामीप्यता द्वारा ही प्राप्त हो पाता है, जिसे पाकर शिष्य का जीवन धन्य-धन्य हो उठता है, उनके साहचर्य और शक्ति को प्राप्त कर वह अपने जीवन में पूर्ण सफलता और पूर्ण आनन्द को प्राप्त कर पाता है, फिर उसके मन में किसी अन्य सुख की अभिलाषा शेष नहीं रहती है, फिर तो केवल. . . और केवल मात्र गुरु ही उसके जीवन में आवश्यक और महत्वपूर्ण पूंजी बन जाता है, जिसे वह उनके साथ बिताए हुए आनन्ददायक क्षणों के रूप में सञ्चित करता रहता है, जो क्षण उसके जीवन की अमूल्य और बेशकीमती धरोहर हैं।

. . . और आज फिर मैं तुम्हें प्रेम का वसन्त भेंट करने आया हूं, मैं एक बार फिर तुम्हारे होठों पर गुनगुनाहट बिखेरने के लिए आया हूं, मैं एक बार फिर तुम्हारे अधरों पर प्रेम का नृत्य सम्पन्न कराने के लिए आया हूं. . . तुम घबराना मत. . . मैं हर क्षण तुम्हारे साथ हूं।

गुरु व्यक्ति नहीं, वह तो एक अहसास है स्वयं की आत्मा का। गुरु कोई हाड़-मांस का पुतला नहीं है, उसके सम्बोधन के पीछे किसी शरीर विशेष का आग्रह नहीं है, वह तो 'ज्ञान' है, और ज्ञान का ही दूसरा रूप 'गुरु' है।

ज्ञान के सम्बोधक शब्द को ही 'गुरु' कहा गया है, जिससे कि परिचित हुआ जा सके, जिसके माध्यम से व्यक्ति उनमें समाहित सम्पूर्ण ज्ञान के भण्डार को अपने अन्दर समाहित कर सके, उसे ग्रहण कर सके, उसे अपने में आत्मसात कर सके।

''शंकररूपिणम्'' उसे इसलिए कहा गया है, क्योंकि वह ज्ञान का कल्याणकारी उपयोग करता है। अन्तःकरण में स्थित आत्म-तत्व को अनुभव कराने व साक्षात्कार कराने में गुरु की प्रमुख भूमिका होने से उसे 'शिव रूप' उद्बोधन उचित ही दिया गया है।

योग्य गुरु के निर्देशन में चलने वाले को भौतिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार के कर्मों में सफलता मिलती है। गुरु की महत्ता के अतिरिक्त शिष्य की योग्यता भी आवश्यक है, इसलिए योग्य गुरु सदैव योग्य शिष्य की खोज में ही रहते हैं, क्योंकि पात्रता के बिना सिद्धियों का मिलना असम्भव है। ताड़का वध के उपरान्त राम का पराक्रम और उनकी क्षमता देख, देवताओं ने विश्वामित्र से कहा—

तपोबलयुतम् ब्रह्मन् राघवाय निवेदय।
पात्र भूतश्च ते ब्रह्मस्तवानुगमने धृतः।।

"हे ब्रह्मन्! आप अपने तपोबल द्वारा उपलब्ध सभी सिद्धियां राम को सौंप दीजिए, ये योग्य पात्र उन्हें धारण करने में समर्थ एवं आपके अनुगामी हैं।"

गुरु अपने ज्ञान व दीक्षा के माध्यम से अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में समाहित कर देता है। 'दीक्षा' वास्तव में आत्म संस्कार का ही दूसरा नाम है। व्यक्ति, साधक या शिष्य मानवी व्यवहारकृत दोष एवं पाप से आबद्ध रहता है, इन दोषों और पापों की वजह से उसका पूर्णत्व प्रस्फुटित नहीं हो पाता, इसलिए शक्तिपात के माध्यम से **सद्गुरु अपनी साधना द्वारा एकत्रित की हुई आत्म-शक्ति को धीरे-धीरे शिष्य के अन्तःकरण में वैसे ही प्रवेश कराता रहता है, जैसे माता अपने पचाये भोजन को स्तनों में दूध बनाकर अपने बालक को पिलाती रहती है,** और उस माता का दूध पीकर बालक पुष्ट होता है, इसी प्रकार गुरु के आत्म-तेज रूपी सत्व को पीकर शिष्य का आत्मबल बढ़ता है, इस आदान-प्रदान को आध्यात्मिक भाषा में "शक्तिपात" कहते हैं।

इस शक्ति को ग्रहण कर उसमें एक चिन्तन, एक धारणा, एक विचारशीलता, एक चैतन्यता का प्रवाह उद्वेलित हो उठता है, जिसके माध्यम से वह अपने जीवन की समस्त महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति करता हुआ अपने जीवन के उस रास्ते पर अग्रसर हो उठता है, जिसे पा लेना ही उसका अभीष्ट लक्ष्य है, और उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेने में ही उसके जीवन की पूर्णता निहित होती है।

सद्गुरु का प्राप्त होना पूर्व संचित शुभ संस्कारों का फल अथवा प्रभु की महत्त कृपा का प्रतिफल ही होता है— जिस प्रकार पिता अपनी सम्पदा का उत्तराधिकार अपनी प्रिय सन्तान को दे जाता है, ठीक उसी प्रकार आत्मबल के धनी योग-तपस्वी भी अपने शिष्यों को शक्ति का अनुदान देते हुए आनाकानी नहीं करते, किन्तु यह मूलतः पात्रता पर आधारित विज्ञान है।
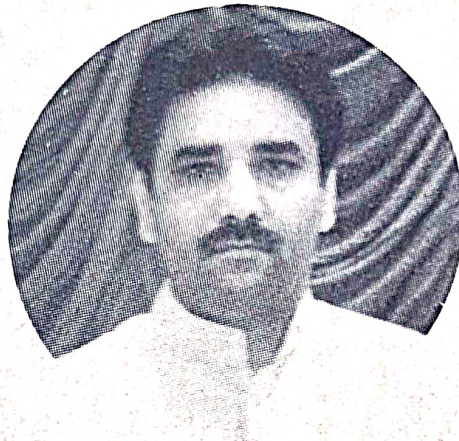
चिन्ता मत करो, तुम्हारे जीवन का जो अभीष्ट लक्ष्य है, वह इसी जीवन में पूरा हो जायेगा. . .

. . . क्योंकि तुम्हारे पास एक दिव्य पथ है, जाग्रत और चैतन्य गुरु है, और दिशादृष्टि स्पष्ट है . . .

आवश्यकता है इस बात की, तुम दौड़ कर, हुलस कर गुरु के पास और पास पहुंच सको।

प्राण-उपार्जन यों तो एक निजी सम्पदा है, क्योंकि कोई अत्यन्त उदारवेत्ता ही अपनी कमाई का कुछ अंश किसी दूसरे को हस्तान्तरित करता है। विवेकानन्द, दयानन्द आदि के निज की साधना उतनी नहीं थी, उन्हें गुरु पक्ष से जो अमूल्य अनुदान मिले, उनके कारण ही वे इतना कुछ कर सके, जितना एकाकी स्वयं के पुरुषार्थ से कदाचित न कर पाते।

यह सच है, कि शक्तिपात के आधार पर उच्च स्तरीय सफलताएं अर्जित की जा सकती हैं, पर न्यास और नीति का तकाजा यह है, कि मुफ्त में किसी से कुछ न लिया जाए। शक्ति लेने के बदले में प्रतिदान देना ही चाहिए. . . 'प्रतिदान' शिष्य के ऊपर जो गुरु-ऋण होता है, उससे आंशिक मुक्ति का ही एक प्रकार मात्र है।

जनमानस में, यहां तक कि प्रबुद्ध कहे जाने वाले लोगों तक में भी यह भ्रान्ति है— कितने ही व्यक्ति सोचते हैं, कि हम अमुक समय में एक व्यक्ति को गुरु बना चुके, अब हमें दूसरे गुरु से शिष्यत्व प्राप्ति का अधिकार नहीं रहा। उनका यह सोचना वैसा ही है, जैसे कोई विद्यार्थी यह कहे, कि अक्षर आरम्भ करते समय जिस अध्यापक को मैंने अध्यापक माना था, अब जीवन भर उसके अतिरिक्त किसी अन्य से शिक्षा ग्रहण नहीं करूंगा, और न ही किसी और को अध्यापक बनाऊंगा।

एक ही अध्यापक से संसार के सभी विषयों को जान लेने की आशा नहीं की जा सकती, फिर वह अध्यापक मर जाए, रोगी हो जाए, कहीं चला जाए, तो भी उसी से शिक्षा लेने का आग्रह करना किस प्रकार से उचित कहा जा सकता है? फिर ऐसा भी हो सकता है, कि कोई शिष्य प्राथमिक गुरु की अपेक्षा कहीं अधिक जानकार हो, और उसका जिज्ञासा क्षेत्र बहुत विस्तृत हो, ऐसी दशा में शिष्य की जिज्ञासाओं का समाधान वह प्राथमिक शिक्षक से ही करने का आग्रह करे, तो यह कितना उचित है?

प्राचीन काल के इतिहास पर दृष्टिपात करने से उलझन का समाधान हो

जाता है।

— महर्षि दत्तात्रेय के चौबीस गुरु थे।

— श्री राम और लक्ष्मण के वशिष्ठ जैसा कुलगुरु होते हुए भी, उन्होंने विश्वामित्र को गुरु वरण किया और उनसे बहुत कुछ सीखा।

— श्री कृष्ण ने सांदीपन ऋषि से भी विद्या ग्रहण की थी और महर्षि दुर्वासा भी उनके गुरु थे।

— अर्जुन के गुरु द्रोणाचार्य भी थे और कृष्ण भी।

— इन्द्र के गुरु बृहस्पति भी थे और नारद भी।

— इस प्रकार अनेकों उदाहरण ऐसे मिलते हैं, जिनसे प्रकट होता है, कि आवश्यकतानुसार एक गुरु अनेक शिष्यों को शिक्षा दे सकता है, और एक शिष्य अनेक गुरुओं से ज्ञान प्राप्त कर सकता है, ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है, जिसके कारण एक के उपरान्त किसी दूसरे से ज्ञान प्राप्त करने तथा अनुदान प्राप्त करने में प्रतिबन्ध हो। गुरु शिष्य को मंत्र देता है और उसके पथ-प्रदर्शन का भार अपने ऊपर ले लेता है।

गुरु की शक्ति के द्वारा ही व्यक्ति उस चैतन्यता, दिव्यता, अद्वितीयता को प्राप्त कर लेता है, जिसे सही अर्थों में जीवन कहते हैं। केवल मात्र जिन्दा रहने को ही जीवन नहीं कहते, जिसमें प्रफुल्लता हो, आनन्द हो, मस्ती हो, रस हो, वह जीवन है। इसी वास्तविक जीवन की पूर्णता व आत्म-साक्षात्कार का दर्शन सद्गुरु करवाते हैं, जिससे शिष्य इस नष्ट-भ्रष्ट होते समाज को सत्य का साक्षात्कार करवा सके।

"महात्मा बुद्ध" ने अपने अंतिम क्षणों में इतने विशाल जन समुदाय को देखकर बड़े शांत चित्त से कहा था— "अब मुझे विश्वास होने लगा है. . . क्योंकि एक-एक शिष्य सौ-सौ शिष्यों को जन्म दे देता है, पैदा कर देता है, तैयार कर देता है. . . और इतने विशाल जन समुदाय को देखकर मुझे यह विश्वास होने लगा है, कि समस्त संसार को बुद्धत्व प्राप्त होगा ही, यह पूरे संसार में फैलेगा ही, मेरे शिष्य, ये भिक्षुक इस अन्धकार को दूर करेंगे ही।"

— और वास्तव में ऐसा ही हुआ, बुद्ध ने जिन भिक्षुकों को ज्ञान दिया, वही भिक्षुक हिमालय को पार कर चीन तक पहुंचे, जापान तक पहुंचे, दूर विदेशों की यात्राएं कीं— और बौद्ध धर्म स्थापित किया, उन्होंने बुद्ध के संदेश को पूरे विश्व में फैलाया।

इसी प्रकार वर्तमान युग में **"पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी"** भी अपने जीवन का प्रत्येक क्षण जन-सामान्य के हितार्थ ही व्यतीत कर रहे हैं। पूज्य गुरुदेव अपना समस्त ज्ञान, अपना समस्त चिन्तन अपने शिष्यों के भीतर उड़ेल देने के लिए बेचैन हैं। **हर क्षण उनका यही प्रयास है, कि वे ऐसे शिष्य तैयार कर सकें, जो समाज में उस ज्ञान को फैला सकें, जो मनुष्य मात्र को जीवन प्रदान करता है। मेरे शिष्यों में इतना सामर्थ्य आ सके, कि वे समाज को एक नया चिन्तन, एक नई शैली, एक नई विचारधारा प्रदान कर सकें।**

पूज्य गुरुदेव का अधिकांश समय. . . और अधिकांश समय ही नहीं, उनका सम्पूर्ण जीवन ही समाज कल्याण में व्यतीत हो रहा है, उनके जीवन का प्रत्येक पल, प्रत्येक क्षण लुप्त हो गए ज्ञान का पुनर्स्थापन करना है। **पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** का जन्म इस धरा पर युग-पुरुष के रूप में अवतरण ही तो है, जो अस्त-व्यस्त होते सामाजिक परिवेश को एक नई दिशा देने का सतत् प्रयास कर रहे हैं।

और जिस युग में भी ऐसी दिव्यात्मा का अवतरण हुआ है, उस समय उनके साथ अन्य देवी-देवता व उनके शिष्य भी जन्म लेते ही हैं, जिन्हें पहिचान कर वे अपने निकट बुला लेते हैं, जिससे उस लक्ष्य को, जिस हेतु वे पृथ्वी पर कुछ समय के लिए अवतरित हुए हैं, पूर्ण करते हुए एक नए समाज का निर्माण कर सकें।

पूज्य गुरुदेव भी ठीक इसी प्रकार अध्यात्म विमुख हो रहे समाज को सही मार्गदर्शन देने के लिए ही हमारे बीच उपस्थित हुए हैं। वे अपने ज्ञान और अपनी तपस्या को दीक्षा और शक्तिपात द्वारा शिष्य के अन्दर समाहित कर ऐसा ही महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं, जिससे कि उनके ज्ञान का दीपक इस धरा पर प्रज्वलित हो सके, जिससे कि उनका प्रत्येक शिष्य अपने-आप में एक सूर्य के समान इस समाज को अज्ञानता के अंधकार से हटाकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जा सके।

पूज्य गुरुदेव मनुष्य के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों को समान रूप से लेकर चलते हुए उसे पूर्णता की ओर अग्रसर कर रहे हैं। उनका कहना है— यदि जीवन का एक भी पक्ष अधूरा है, तो मनुष्य को पूर्णता नहीं मिल सकती। वे नित्य अपने शिष्यों की भौतिक समस्याओं को सुलझाते हुए उन्हें अध्यात्म की ओर प्रेरित करते हैं, जिससे कि मानव भौतिक पक्ष में पूर्णता प्राप्त करते हुए उस आध्यात्मिक चिन्तन को भी ग्रहण कर सके, जो उसके जीवन का हेतु है।

ऐसा ही सामर्थ्य पूज्य गुरुदेव अपने शिष्यों को प्रदान कर रहे हैं, जिससे कि वे पूरे समाज को, पूरे विश्व को उस दिव्य प्रकाश से, उस दिव्य आभा से आपूरित कर सकें।

— वे हर क्षण, प्रतिपल इसी कार्य में संलग्न हैं।

गुरु ही समस्त ब्रह्माण्ड का आदिमूल तत्व है, और उस 'तत्व' को, उस 'गुरुत्व' को प्राप्त करना ही जीवन का सौभाग्य है, जीवन की श्रेष्ठता है।

जो शिष्य पूर्ण श्रद्धा और समर्पण युक्त होकर गुरु के द्वारा बताए गए मार्ग पर अग्रसर होते हैं, जो उस "आत्म-तत्व" अर्थात् "गुरुत्व" को प्राप्त कर लेते हैं, वही अपने जीवन के अभीष्ट उद्देश्य को प्राप्त करने में सक्षम हो पाते हैं। ❋

संसार की विलक्षण और सिद्धिदायक साधना
ऋद्धि-सिद्धि अनुष्ठान प्रयोग

卐

सर्वमंगलमय गणपति तो स्वयं विघ्नों को दूर करने वाले और पूर्णता देने वाले देवता हैं, और उनकी दोनों पत्नियां ''ऋद्धि'' और ''सिद्धि'' हैं, जो सम्पूर्ण वैभव, यश, प्रतिष्ठा प्रदान करने वाली हैं। जिस घर में इन दोनों महादेवियों की स्थापना होती है, वहां स्वयं गणपति साक्षात् स्वरूप में उपस्थित रहते हैं ।

पर दुर्भाग्यवश 'ऋद्धि-सिद्धि साधना' सर्वथा लोप ही हो गई है। योगीराज चेतनानन्द जी ने गणेश उपनिषद् के श्लोकों का पूर्ण अन्वय कर इस दुर्लभ साधना को प्रकट किया है, जो कि वास्तव में ही सिद्धिप्रद, महत्वपूर्ण और दुर्लभ साधना है।

इस गोपनीय साधना को पूर्ण प्रमाणिकता के साथ पत्रिका के माध्यम से स्पष्ट किया जा रहा है, जबकि इस बार २१/१२/९४ बुधवार (इसी साधना को २०/०१/९५ को भी सम्पन्न कर सकते हैं) को ऋद्धि-सिद्धि साधना दिवस है, इस दिन इस साधना को सम्पन्न कर हम जीवन की पूर्णता, सफलता, ऐश्वर्य एवं श्रेष्ठता प्राप्त कर सकते हैं।

गणपति स्वयं ज्ञान और निर्वाण को देने वाले हैं। ''ब्रह्मवैवर्त पुराण'' में कहा गया है, कि गणपति ही एकमात्र ऐसे देवता हैं, जो सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करने वाले हैं, ''लिंग पुराण'' में भी सभी देवताओं पर विचार करने के बाद यही निर्णय सर्वमान्य बताया है, कि जीवन में पूर्ण सफलता गणपति और ऋद्धि-सिद्धि के माध्यम से ही सम्भव है।

मैं यहां गणपति के बारे में ज्यादा विवेचन न कर इस साधना का मूल तथ्य स्पष्ट कर-रहा हूं ।

ऋद्धि-सिद्धि

गणपति स्वयं बुद्धि के सागर और उच्चकोटि के ज्ञानी थे, जब गणपति वयस्क हुए, तो विश्वकर्मा विश्वरूप की दो लड़कियों से गणपति का विवाह होना निश्चित हुआ, इन दोनों कन्याओं में से एक का नाम "ऋद्धि" और दूसरी का नाम "सिद्धि" था। इन दोनों ही कन्याओं से विवाह होने के उपरान्त, जहां पर भी ये दोनों कन्याएं होती हैं, वहीं गणपति का वास होता है। विश्वकर्मा तो स्वयं समस्त भोगों को प्रदान करने वाले और जीवन में पूर्णता देने वाले देव हैं, इसलिए इन दोनों की साधना से सुख प्राप्त होता है।

कहते हैं, कि **ऋद्धि-सिद्धि साधना करने से भूमि-लाभ, शीघ्र भवन निर्माण तथा परिवार में पूर्ण सुख-शान्ति प्राप्त होने की क्रिया उसी दिन से शुरू हो जाती है।**

कुछ समय बाद इन दोनों पत्नियों से एक-एक पुत्र उत्पन्न हुआ,ऋद्धि से जो पुत्र उत्पन्न हुआ, उसका नाम रखा गया "शुभ" और सिद्धि से जो पुत्र पैदा हुआ, उसका नाम "लाभ" रखा गया, इस प्रकार शुभ-लाभ, ऋद्धि-सिद्धि और स्वयं गणपति से मिलकर यह परिवार अपने-आप में पूर्णता और सफलता देने वाला बन गया।

पौष कृष्ण पक्ष सप्तमी को यह विवाह सम्पन्न हुआ, इसी कारणवश इस साधना के लिए इस दिवस का प्रयोग सैकड़ों वर्षों से चला आ रहा है।

शास्त्रों में कहा गया है, कि जो गृहस्थ हैं, और अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता और सफलता चाहते हैं, उनको अवश्य ही यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

यह साधना सर्वथा गोपनीय रही है। स्वामी जी ने प्राचीन ग्रन्थों को टटोल कर, गणेश उपनिषद के श्लोक की सूक्ष्म मीमांसा कर, इस साधना को सम्पन्न कर स्पष्ट रूप से कहा है— **"ऋद्धि-सिद्धि साधना ही जीवन की पूर्णता है।"**

साधना विवरण

यह साधना अत्यन्त ही सरल है, और कोई भी पुरुष या स्त्री, विवाहिता अथवा अविवाहिता इस साधना को सम्पन्न कर सकती है। कुंआरी कन्याओं द्वारा इस प्रयोग को करने से शीघ्र सुन्दर मनोवांछित वर की प्राप्ति होती है। विवाहिता स्त्रियां इस प्रकार की साधना सम्पन्न कर पूर्ण पारिवारिक और गृहस्थ- सुख प्राप्त करती हैं। पुरुष इस साधना को सम्पन्न कर व्यापार में वृद्धि और पूर्ण आर्थिक उन्नति प्राप्त करने में सक्षम हो पाते हैं। विद्यार्थी इस साधना को सिद्ध करें तो उन्हें परीक्षा में सफलता और श्रेष्ठ बुद्धि प्राप्त होती है। इस साधना को सिद्ध करने से घर में भगवान गणपति और ऋद्धि-सिद्धि का स्थाई निवास हो जाता है। साधुओं ने इस साधना को सिद्ध कर जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त की है। अखण्ड सौभाग्य के लिए या उत्तमकोटि के पुत्र-प्राप्ति के लिए भी इस साधना को सम्पन्न किया जाता है, जिनके सन्तान नहीं हो रही हो या जिन्हें पुत्र-प्राप्ति की इच्छा हो, उसे अवश्य ही इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि यह प्रयोग अत्यन्त ही महत्वपूर्ण, त्वरित सफलतादायक, विघ्नों, बाधाओं और कठिनाइयों को दूर करने में सक्षम और जीवन में समस्त प्रकार की भौतिक सुविधाओं को प्रदान करने में समर्थ एवम् सर्वश्रेष्ठ है।

साधना प्रयोग

यह एक दिन की साधना है। स्त्रियां यदि साधना करती हों, तो सुबह स्नान कर अपने बालों को धो लें और उसके बाद ही साधना में भाग लें, यदि सम्भव हो तो पति-पत्नी दोनों ही इस साधना में भाग ले सकते हैं। कुंआरी कन्याएं अपने सिर के बालों को धोकर योग्य वर

ॐ जय मंगल दाता, स्वामी जय मंगलदाता।
विघ्न हरण शुभ गुण प्रद लाभंकर भाता।।
ॐ जय. . .
ऋद्धि सिद्धि के दाता विमल बुद्धि कर्ता। स्वामी०
लम्बोदर चतुरानन पापपुञ्ज हर्ता।।
ॐ जय. . .
गणनायक सुखदायक सबविधि शुचि भर्ता। स्वामी०
पूर्णकाम करि भक्तन त्रिभुवन जन पविता।।
ॐ जय. . .
जो गणपति जी की आरति निशदिन नर गावै। स्वामी०
पुत्र-पौत्र जन सेवित सुख सम्पत्ति राजै।।
ॐ जय. . .

की प्राप्ति के लिए इस साधना को सम्पन्न कर सकती हैं।

सर्वथा शुद्ध और पवित्र हो कर, पीले वस्त्र धारण कर, उत्तर दिशा की ओर मुंह कर पीले आसन पर बैठ जाएं, सामने यदि सम्भव हो, तो **''गणेश जी का चित्र''** स्थापित कर दें, फिर लकड़ी का बाजोट अपने सामने बिछावें और उस पर पीला कपड़ा बिछा दें, बाजोट पर एक थाली रखें (यह थाली स्टील की या लोहे की नहीं होनी चाहिए) इसके बाद थाली के मध्य में एक स्वस्तिक बनावें, और उसके चारों तरफ एक-एक स्वस्तिक केसर से अंकित करें।

इसके बाद ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार मंत्र-सिद्ध **''गणपति पंचानन''** की स्थापना करें, (इसमें गणपति विग्रह, २. ऋद्धि यंत्र, ३. सिद्धि यंत्र, ४. शुभ यंत्र और ५. लाभ यंत्र होते हैं) आप इस प्रकार के गणपति पंचानन को कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं, पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि ये सभी शास्त्रमतानुसार मंत्र-सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त होने चाहिए।

इसके बाद मध्य के स्वस्तिक पर चावलों की ढेरी बनाकर गणपति को स्थापित करें, गणपति के बाईं ओर 'ऋद्धि' और दाहिनी ओर 'सिद्धि' को स्थापित करें, गणपति के ऊपर बने हुए स्वस्तिक पर 'लाभ' और नीचे की ओर बने हुए स्वस्तिक पर 'शुभ' की स्थापना करें, चावलों की ढेरी बनाकर उसके ऊपर इन यंत्रों को बताये हुए क्रम से स्थापित कर दें।

इसके बाद सामने पांच घी के दीपक और पांच अगरबत्तियां जलावें, और फिर पहले से ही १०५ पुष्प मंगवाकर रख लेने चाहिए, पूरे परिवार के लिए १०५ पुष्प पर्याप्त हैं, पर एक बार पुष्प चढ़ाने के बाद उसी पुष्प को दोबारा नहीं चढ़ाया जा सकता।

इसके बाद निम्न मंत्रों से प्रत्येक विग्रह पर २१-२१ पुष्प चढ़ावें-

१. **गणपति– ॐ गं गणपतये नमः–** इस मंत्र से भगवान गणेश पर २१ पुष्प चढ़ायें।
२. **ऋद्धि– ॐ हेम वर्णायै ऋद्धयै नमः–** इस मंत्र से ऋद्धि पर २१ पुष्प चढ़ायें।
३. **सिद्धि– ॐ सर्वज्ञान भूषितायै सिद्धयै नमः–** इस मंत्र से सिद्धि पर २१ पुष्प चढ़ायें।
४. **लाभ– ॐ सौभाग्यप्रदायक धन-धान्य युक्तायै लाभायै नमः–** इस मंत्र से २१ पुष्प लाभ पर चढ़ायें।
५. **शुभ– ॐ पूर्णायै पूर्णमदायै शुभायै नमः–** इस मंत्र से शुभ पर २१ पुष्प चढ़ायें।

इस प्रकार पांचों पर पुष्प चढ़ा कर, फिर जल को छिड़ककर स्नान करायें और सभी का केसर से तिलक करें, इसके बाद सभी को एक साथ लड्डू का भोग लगायें और निम्न स्तोत्र का १०५ बार पाठ करें।

**कामेश्वरीं महालक्ष्मीं ब्रह्माण्ड - वश - कारिणीम्।
सिद्धेश्वरीं सिद्धिदात्रीं शत्रूणां भय दायिनीम्।।
ऋद्धि देवीं पीत-वस्त्रां उद्यत-भानु सम-प्रभाम्।
कुल देवीं नमामि त्वां सर्व-काम-प्रदां शिवाम्।।
सिद्धि-रूपेण देवी त्वां विष्णु प्राण-वल्लभाम्।
काली-रूप-धृतां उग्रां रक्त-बीज-निपातिनीम्।।
विद्या-रूप-धरां पुण्यां शुभ लाभ प्रद स्थिताम्।
दुर्गा-रूप-धरां देवीं दैत्य-दर्प-विनाशिनीम्।।
मूषक वाहना रूढां सिंह-वाहन-संयुताम्।
ऋद्धि सिद्धि, महादेवि पूर्ण सौभाग्यं देहि मे।।**

इस स्तोत्र के १०५ पाठ करने आवश्यक हैं, यदि एक ही बार में यह सम्भव न हो सके, तो साधक २१ पाठ के बाद पांच-सात मिनट का विश्राम कर सकता है।

जब पाठ समाप्त हो जाए, तो घर में गुड़ से बनी हुई मिठाई, जैसे– हलवा वगैरह बनायें, दूध की खीर बनायें, और विविध प्रकार के व्यंजन बनाकर गणेश पंचानन को भोग लगायें, फिर पूरे परिवार के साथ बैठ कर भोजन करें, इस अवसर पर अपने इष्ट-मित्रों को भी भोजन के लिए बुलाया जा सकता है।

विविध व्यंजनों का भोग लगा कर भगवान गणपति की आरती करें और यथोचित घर की बेटियों और बहुओं को भेंट आदि दें।

❋

लक्ष्मी कहां रहती है?

हर स्थान पर लक्ष्मी नहीं रहती, उसे प्राप्त करने के लिए उसके अनुकूल बनना पड़ता है। इस अनुकूलता का अर्थ है धर्म-परायणता, मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था और जीवन-निर्माण के प्रति सतत जागरुकता। जो व्यक्ति इन बातों की उपेक्षा करते हैं वे लक्ष्मी की कृपा प्राप्त नहीं कर सकते। लक्ष्मी का भक्त बनने के लिए मात्र सांसारिक हो कर उसकी पूजा करना पर्याप्त नहीं है। नैतिक एवं आध्यात्मिक भावभूमियों पर खड़े रहकर सांसारिक जीवन का निर्वाह करने की क्षमता हम में आ सके, तो हम धरती पर कुबेर का खजाना ला सकते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं।

इस दृष्टि से इस लेख में उन सभी बातों पर प्रकाश डाला गया है, जिनसे लक्ष्मी के अनुकूल अथवा प्रतिकूल बनने की परिस्थितियां स्पष्ट हो जाती हैं। दीपावली के अवसर पर एक विशेष लेख. . .।

प्रत्येक व्यक्ति जीवन में लक्ष्मीपति बनना चाहता है, परन्तु यह बहुत ही कम लोगों को ज्ञात है कि उसके लिए क्या आधार होना चाहिए, हम अपने-आप को किस प्रकार तैयार करें, जिससे कि हमारे जीवन में सुख, सौभाग्य और स्थिर लक्ष्मी आ सके।

शास्त्रों में बताया गया है कि लक्ष्मी निम्न प्रकार से निवास करती है—

१. जो मनुष्य मधुर बोलने वाला, अपने कार्य में तत्पर, क्रोधहीन, ईश्वर-भक्त, एहसान मानने वाला, इन्द्रियों को नियंत्रण में रखने वाला तथा उदार हो, उसके यहां लक्ष्मी निवास करती है।

२. सदाचारी, धर्मज्ञ, अपने माता-पिता की भक्ति-भावना से सेवा करने वाले, नित्य पुण्य प्राप्त करने वाले, क्षमा रखने वाले, बुद्धिमान, दयावान तथा गुरु की सेवा करने वाले व्यक्तियों के घर में अवश्य ही लक्ष्मी निवास करती है।

३. जिसके घर में पशु-पक्षी निवास करते हों, जिसकी पत्नी सुन्दर हो, जिसके घर में कलह नहीं होता, उसके घर में निश्चय ही लक्ष्मी रहती है।

४. जो अनाज का सम्मान करते हैं और घर में आए हुए अतिथि का घरवालों के समान ही स्वागत-सत्कार करते हैं, उनके घर में लक्ष्मी निश्चित रूप में रहती है।

५. जो व्यक्ति असत्य भाषण नहीं करता, अपने विचारों में डूबा नहीं रहता, जिसके जीवन में घमण्ड नहीं है, जो दूसरों के प्रति प्रेम प्रदर्शित करता हैं, जो दूसरों के दुख में दुखी होकर उसकी सहायता करता है और जो दूसरों के कष्ट को दूर करने में आनन्द का अनुभव करता है, उसके घर में अवश्य ही लक्ष्मी निवास करती है।

६. जो नित्य स्नान करता है, सुरुचि पूर्ण स्वच्छ वस्त्र धारण करता है, शीघ्र भोजन करता है, बिना सूंघे पुष्प देवताओं पर चढ़ाता है, जो दूसरी स्त्रियों पर कुदृष्टि नहीं रखता, उसके घर में लक्ष्मी रहती है।

७. जो यथासम्भव दान देता है, शुद्ध और पवित्र बना रहता है, गरीबों की सहायता करता है, उसके घर में अवश्य ही लक्ष्मी निवास करती है।

८. आंवले के वृक्ष के फल में, गाय के गोबर में, शंख में, कमल में और श्वेत वस्त्र में लक्ष्मी हमेशा रहती है।

९. जो अपने गुरु को ईश्वर के समान समझकर पूजा करता है, उसके घर में निश्चय ही लक्ष्मी निवास करती है।

१०. जो स्त्री, पति का सम्मान करती है, उसकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करती, घर में सबको भोजन कराकर फिर भोजन करती है, उस स्त्री के घर में निश्चय ही लक्ष्मी का वास रहता है।

११. प्रसन्नचित्त, मधुर बोलने वाली, सौभाग्यशालिनी, रूपवती, सुन्दर और सुरुचि पूर्ण वस्त्र धारण किए रहने वाली, प्रियदर्शना और पतिव्रता स्त्री के घर में लक्ष्मी का वास होता है।

१२. जो स्त्री सुन्दर, हरिणी के समान नेत्र वाली, पतली कमर वाली, सुन्दर केश विन्यास करने वाली, धीरे चलने वाली और सुशील हो, उसके शरीर में लक्ष्मी निश्चय ही वास करती है।

१३. जिस पुरुष के दोनों पैर धोये हुए शुद्ध व चिकने होते हैं, जिसकी स्त्री सुन्दर व रूपवती होती है, जो स्वल्प भोजन करता है, जो पलंग पर उल्टा होकर नहीं लेटता और पवित्र दिनों में मैथुन का परित्याग करता है, उसके घर में निश्चय ही लक्ष्मी बनी रहती है।

१४. जो मनुष्य अपवित्र नहीं रहता, मलीन वस्त्र धारण नहीं करता, शरीर को दुर्गन्ध युक्त नहीं बनाता, चित्त में चिन्ता या दुख नहीं रखता, उसके घर में निश्चय ही लक्ष्मी बनी रहती है।

१५. जो अन्न का अनादर नहीं करता, नित्य शरीर पर इत्र या सुगन्धित पदार्थ लगाता है, जो ताम्बूल का आग्रह होने पर मना नहीं करता, उसको लक्ष्मी वरदान स्वरूप प्राप्त हो जाती है।

१६. जो मनुष्य सूर्योदय से पहले उठकर स्नान कर लेता है, जो सूर्यास्त से पहले स्नान कर पवित्र होता है, वह लक्ष्मी युक्त बना रहता है।

१७. जो संयमी, स्थिरचित्त और मौन होकर भोजन करता है, उसके घर में अवश्य ही लक्ष्मी बनी रहती है।

१८. जो व्यक्ति गयाधाम में, कुरुक्षेत्र में, काशी में अथवा सागर-संगम में स्नान करता है, वह निश्चय ही लक्ष्मी युक्त होता है।

१९. जो व्यक्ति एकादशी तिथि को भगवान विष्णु को आंवला फल भेंट करता है, जल में आंवला डालकर स्नान करता है, वह लक्ष्मी युक्त रहता है।

२०. जो विरुद्ध आचरण नहीं करता, पराई स्त्री से संगम नहीं करता, पर-द्रव्य में चित्त नहीं लगाता, किसी का अनिष्ट चिन्तन नहीं करता, वह अवश्य ही लक्ष्मी का प्रिय पात्र बना रहता है।

२१. जो ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान आदि कर सन्ध्या करता है, दिन में उत्तर की ओर तथा रात्रि में दक्षिण की ओर मुंह करके मल-मूत्र का त्याग करता है, वह लक्ष्मीवान होता है।

२२. जो कुटिल आचरण नहीं करता, पुनः अकारण बार-बार स्नान नहीं करता, सत्य और मधुर वाक्य बोलता है, उसके घर में लक्ष्मी रहती है।

२३. जिन व्यक्तियों की देवता, साधु और ब्राह्मणों में आस्था रहती है, लक्ष्मी उनके घर में सर्वदा निवास करती है।

२४. जिसके घर में **कमलगट्टे की माला, एकाक्षी नारियल, श्वेत गुंजा, पारद शिवलिंग तथा श्वेतार्क गणपति** होते हैं, उनके घर से लक्ष्मी जा ही नहीं सकती।

२५. जिसके घर में यज्ञ होता रहता है, जिसके घर में देवताओं की पूजा होती है, जिसके घर में प्रातः व सायं गा कर आरती पढ़ी जाती है, जो देवता, गौ आदि की पूजा करते हैं, उनके घर से लक्ष्मी कभी भी नहीं जाती।

२६. जिसके घर में मंत्र-सिद्ध **श्री यंत्र, कनकधारा यंत्र** या **कुबेर यंत्र** स्थापित होता है, उसके घर में पीढ़ियों तक लक्ष्मी बनी रहती है।

२७. जिसके घर में भगवान नारायण का विग्रह रहता है, उसके घर में लक्ष्मी बनी रहती है।

२८. जो धर्म और नीति पर चलने वाले होते हैं, जो अपने माता-पिता का सम्मान करते हैं, जिनके घर में पुत्र किलकारियां भरते हैं, जो कन्याओं का सम्मान करते हैं, उनके घर में लक्ष्मी बनी रहती है।

२९. जो लक्ष्मी से सम्बन्धित पूजा या आराधना करते हैं, जो लक्ष्मी से सम्बन्धित अनुष्ठान सम्पन्न करते हैं, उनके घर में लक्ष्मी बनी रहती है।

३० जो गुरु के बताए हुए रास्ते से रसायन क्रिया द्वारा स्वर्ण की लक्ष्मी-मूर्ति बनाने में सफल होते हैं, उनके घर में लक्ष्मी बनी रहती है और उसके सुयश की सर्वदा वृद्धि होती रहती है।

जीवन में मिटाना है कष्ट-रोग-पीड़ा-शत्रु तो कीजिए

भैरव पूजा साधना आराधना

किसी भी प्रकार के यज्ञ में, साधना में, गृह प्रवेश में, भूमि पूजन में भैरव की पूजा अवश्य ही की जाती है। जब तक **'भैरव पूजन'** नहीं हो जाता, तब तक मूल यज्ञ भी प्रारम्भ नहीं होता, क्योंकि भैरव रक्षा कारक देव हैं, और विश्व के संहारकर्त्ता शिव के स्वरूप तथा महाशक्ति काली के सेवक हैं, इसीलिए इन्हें 'काल भैरव' का नाम दिया गया है।

किसी भी गांव में चले जाइये, वहां कोई मन्दिर अथवा पूजा स्थान हो या नहीं, लेकिन भैरव का मन्दिर अवश्य ही होगा। जन-जन के देवता के रूप में भैरव की ख्याति है, उनसे करोड़ों-करोड़ों लोगों की आस्था जुड़ी है, और यह आस्था तभी बन सकती है, जब प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त होते रहे हों, और लोगों के कार्य सिद्ध होते रहे हों।

''काल भैरवाष्टमी दिवस'' अपने-आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि प्रत्येक तांत्रिक ग्रन्थों में भैरव को जीवन की पूर्णता का पर्याय माना गया है।

उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रन्थों में बताया गया है, कि चाहे किसी भी देवी या देवता की साधना की जाए, उसके लिए सर्वप्रथम 'गणपति' और 'भैरव' की पूजा आवश्यक है, जिस प्रकार से गणपति समस्त विघ्नों का नाश करने वाले हैं, ठीक उसी प्रकार से भैरव समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने में पूर्णरूप से सहायक हैं।

> **श्री भैरव देव, भगवान शिव के अंश से उद्भूत होने के कारण उन्हीं के समान सरल व सौम्य हैं और शीघ्र ही प्रसन्न होकर रक्षा करते हैं। ''भैरव की साधना'' जीवन में जहां एक ओर दरिद्रता का नाश, अभावों की पूर्ति करती है, वहीं जीवन की व्याधियां कष्ट, पीड़ा और शत्रुओं से हमारी रक्षा भी करती है. . .**

कलियुग में बगलामुखी, छिन्नमस्ता या अन्य महादेवियों की साधनाएं तो कठिन प्रतीत होने लगी हैं, यद्यपि ये साधनाएं शत्रु संहार के लिए पूर्णरूप से समर्थ और बलशाली हैं, परन्तु **''भैरव साधना''** कलियुग में तुरन्त फलदायक और शीघ्र सफलता देने में सहायक है।

अन्य साधनाओं में तो साधक को फल जल्दी या विलम्ब से प्राप्त हो सकता है, परन्तु इस साधना का फल तो हाथों-हाथ मिलता है, इसलिए कलियुग में गणपति, चण्डी और भैरव की साधना पूर्ण रूप से महत्वपूर्ण मानी गयी है।

प्राचीन समय से शास्त्रों में यह प्रमाण बना रहा है, कि किसी भी प्रकार का यज्ञ कार्य हो, तो यज्ञ की रक्षा के लिए भैरव की स्थापना और पूजा सर्वप्रथम आवश्यक है, चाहे किसी भी प्रकार की पूजा हो, उसमें सबसे पहले गणपति की स्थापना की जाती है, साथ ही साथ उसमें भैरव की उपस्थिति और भैरव की साधना भी जरूरी मानी गई है, क्योंकि ऐसा करने से दसों दिशाओं का आबद्धीकरण हो जाता है, और उस साधना में साधक को किसी भी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता, और न किसी प्रकार का उपद्रव या बाधाएं ही आती हैं, ऐसा करने पर साधक को निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

इसके अलावा भैरव की स्वयं की साधना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवश्यक मानी गई है। आज का जीवन जरूरत से ज्यादा जटिल और दुर्बोध बन गया है,

पग-पग पर कठिनाइयां और बाधाएं आने लगी हैं, अकारण ही शत्रु पैदा होने लगे हैं, और उनका प्रयत्न यही रहता है, कि येन-केन-प्रकारेण लोगों को तकलीफ दी जाए या उन्हें परेशान किया जाए, इससे जीवन में जरूरत से ज्यादा तनाव बना रहता है।

इसलिए आज के युग में अन्य साधनाओं की अपेक्षा "भैरव की साधना" को ज्यादा महत्व दिया जाने लगा है।

'देव्योपनिषद्' में भैरव साधना क्यों की जानी चाहिए, इसके बारे में विस्तार से विवरण है, उसका मूल तथ्य निम्न प्रकार से है—

१. जीवन के समस्त प्रकार के उपद्रवों को समाप्त करने के लिए।
२. जीवन की बाधाओं और परेशानियों को दूर करने के लिए।
३. जीवन के नित्य कष्टों और मानसिक तनावों को समाप्त करने के लिए।
४. शरीर स्थित रोगों को निश्चित रूप से दूर करने के लिए।
५. आने वाली बाधाओं और विपत्तियों को पहले से ही हटाने के लिए।
६. जीवन के और समाज के शत्रुओं को समाप्त करने और उनसे बचाव के लिए।
७. शत्रुओं की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए और शत्रुओं को परेशानी में डालने के लिए।
८. जीवन में समस्त प्रकार के ऋण और कर्जों की समाप्ति के लिए।
९. राज्य से आने वाली बाधाओं के अकारण भय से मुक्ति के लिए।
१०. जेल से छूटने के लिए और मुकदमों में शत्रुओं को पूर्ण रूप से परास्त करने के लिए।
११. चोर-भय, दुष्ट-भय और वृद्धावस्था से बचने के लिए।

इसके अलावा हमारी अकाल-मृत्यु न हो या किसी प्रकार का कोई ऐक्सिडेन्ट न हो अथवा हमारे बालकों की अल्पायु में ही मृत्यु न हो आदि के लिए भी काल भैरव साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है।

इसलिए शास्त्रों में कहा गया है, कि जो चतुर और बुद्धिमान व्यक्ति होते हैं, वे अपने जीवन में 'काल भैरव साधना' अवश्य ही करते हैं। जो वास्तव में जीवन में बिना बाधाओं के निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना चाहते हैं, वे 'काल भैरव साधना' अवश्य करते हैं। **जो अपने जीवन में चाहते हैं, कि किसी भी प्रकार से राज्य की कोई बाधा या परेशानी न आये, वे निश्चय ही 'काल भैरव साधना' सम्पन्न करते हैं। जिन्हें अपने बच्चे प्रिय हैं, जो अपने जीवन में रोग नहीं चाहते, जो अपने पास बुढ़ापा फटकने नहीं देना चाहते, वे अवश्य ही काल भैरव साधना सम्पन्न करते हैं।**
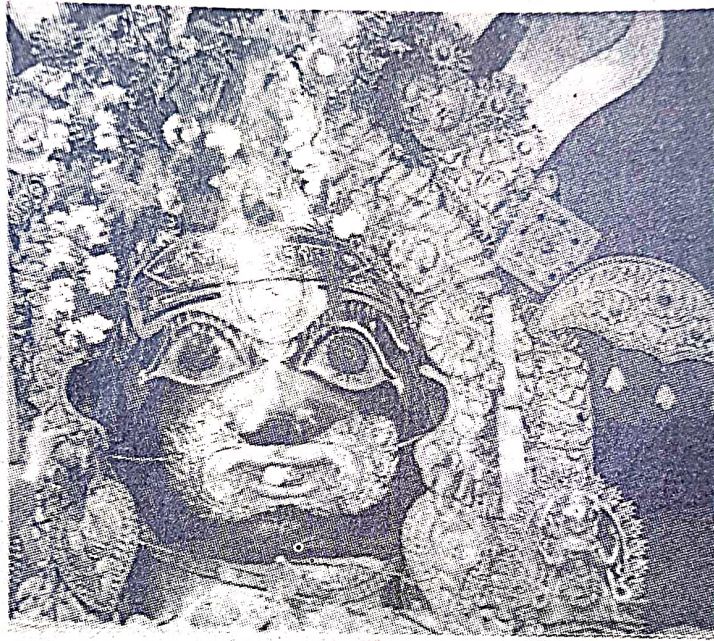
उच्चकोटि के योगी, संन्यासी काल भैरव साधना तो करते ही हैं, साथ ही जो श्रेष्ठ व्यापारी हैं, वे भी अपने पण्डितों से 'काल भैरव साधना' सम्पन्न करवाते हैं। जो राजनीति में रुचि रखते हैं और अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं, वे भी अपने विश्वस्त तांत्रिकों से काल भैरव साधना सम्पन्न करवाते हैं।

मेरा यह अनुभव रहा है, कि जीवन में सफलता और पूर्णता पाने के लिए काल भैरव साधना अत्यन्त ही आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

दिनांक २५/१२/९४ रविवार पौष कृष्ण पक्ष को तथा २४/०१/९५ मंगलवार माघ कृष्ण पक्ष को कालाष्टमी, महाकाल भैरवाष्टमी तथा महाकाल जयन्ती है, और भैरव साधना हेतु इस दिन का सबसे अधिक महत्व है।

भैरव के अलग-अलग स्वरूपों की साधना अलग-अलग कार्यों हेतु की जाती है, वास्तव में भैरव की तांत्रोक्त साधना प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक है।

आगे तीन प्रयोग विशेष रूप से दिये जा रहे हैं, जिन्हें साधक अपनी बाधा के अनुसार अवश्य सम्पन्न करें। भैरवाष्टमी को यह प्रयोग प्रारम्भ कर आगे प्रति रविवार को भी 'भैरव मंत्र' का एक माला मंत्र-जप अवश्य करना चाहिए, तभी सर्वोच्च सिद्धि प्राप्त होती है—

१. शत्रु बाधा निवारण प्रयोग

भैरवाष्टमी के दिन प्रातः साधक स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें, सिन्दूर का तिलक लगाएं, अपने सामने एक मिट्टी की ढेरी बनाकर उस पर पानी छिड़कें, फिर सिन्दूर छिड़कें और उस पर **''काल भैरव गुटिका''** स्थापित करें, ढेरी के चारों ओर तिल की ढेरियां बना कर उन पर **''पांच आक्रान्त चक्र''** रखें, प्रत्येक चक्र पर सिन्दूर छिड़कें, अब अपने पूजा स्थान में दीप और गुग्गल का धूप तथा अगरबत्ती जला दें, अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अपनी अमुक शत्रु बाधा के निवारण हेतु 'काल भैरव प्रयोग' सम्पन्न कर रहा हूं।

अब एक पात्र में सरसों, काले तिल मिलाएं, उसमें थोड़ा तेल डालें, थोड़ा सिन्दूर डाल कर उसे मिला दें, इस मिश्रण को निम्न भैरव मंत्र का जप करते हुए काल भैरव गुटिका के समक्ष अर्पित करते रहें—

मंत्र

विभूमि-भूमि-नाशाय, दुष्ट-क्षय-कारकं, महा-भैरवाय नमः। सर्व-दुष्ट-विनाशनं सेवकं सर्व-सिद्धिं कुरु। ॐ काल-भैरव, बटुक-भैरव, भूत-भैरव महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता सर्व सिद्धिर्भवेत्।

साबर मंत्र :

ॐ काल भैरव, श्मशान भैरव, काल रूप-काल भैरव! मेरो बैरी तेरो आहार रे। काढ़ि करेजा चखन करो कट कट। ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव! महा-भैरव महा-भय -विनाशनं देवता, सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

इस प्रकार ५१ बार इस मंत्र का जप कर, धूप-दीप से भैरव की आरती सम्पन्न करें, अब काल भैरव गुटिका को छोड़ कर, बाकी सामग्री काले कपड़े में बांध कर जमीन में गाड़ दें और उस पर एक भारी पत्थर रख दें।

आगे दो रविवार तक काल भैरव गुटिका के समक्ष इस मंत्र का जप करते रहें। यह प्रयोग इतना प्रबल है, कि प्रबल से प्रबल शत्रु भी तीस दिन के भीतर-भीतर शान्त हो जाता है, उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

२. काल भैरव रोग -नाशक प्रयोग

यह प्रयोग भी प्रातः ही सम्पन्न किया जाता है, इसे यदि स्वयं की बीमारी के नाश हेतु करना है, तो अपने नाम का संकल्प लें, और यदि दूसरे के लिए प्रयोग करना है, तो उसके नाम से संकल्प लें।

संकल्प

ॐ अस्य श्री बटुक भैरव स्तोत्रस्य सप्त ऋषिः, मातृका छन्दः, श्री बटुक भैरवो देवता, ममेप्सितसिद्धयर्थ जपे विनियोगः।

अपने सामने एक पात्र में **''काल भैरव महायंत्र''** स्थापित कर उस पर सिन्दूर चढ़ाएं तथा एक दीपक जलाएं, जिसमें चार बत्तियां हों तथा दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठें, काल भैरव महायंत्र के सामने पुष्प, लड्डू, सिन्दूर, लौंग, पुष्पमाला और काला डोरा रखें तथा मंत्र-जप के पहले जल से भरे हुए पात्र का मुंह लाल कपड़े से बांध दें।

अब एक पात्र में तिल लें, उसमें सात सुपारी रखें तथा निम्न मंत्र का जप करते हुए यह तिल दक्षिण दिशा की ओर फेंकते रहें--

मंत्र

ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव महा-भय विनाशनं देवता-सर्वसिद्धिर्भवेत्। शोकदुःख-क्षयकरं निरंजनं, निराकारं नारायणं, भक्ति-पूर्णत्वं महेशं सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत् काल भैरव, भूषण वाहनं काल हन्ता रूपं च, भैरव गुनी महात्मन् योगिनां महा-देव-स्वरूपं, सर्वसिद्धयेत्। ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव, महा-भैरव महा-भय-विनाशन देवता सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

इस प्रकार २१ बार मंत्र-जप के पश्चात् सातों सुपारी सभी दिशाओं में फेंक दें, काल भैरव यंत्र को पूजा में प्रयोग लाये काले डोरे से रोगी की भुजा में बांध दें अथवा गले में पहिना दें तथा पूजा का पवित्र जल भी उसे पिलाएं, पुराने से पुराने रोग इस प्रयोग से दूर होते देखे गये हैं।

३. मुकदमा, वाद-विवाद में विजय का प्रयोग

इस प्रयोग हेतु साधक सायंकाल इस विशेष दिन को प्रयोग सम्पन्न करें, पूजा स्थान में पूर्णरूप से शान्ति होनी चाहिए तथा जिस विशेष कार्य के सम्बन्ध में प्रयोग करना है, वह कार्य एक कागज पर सिन्दूर से लिख लें।

अब अपने सामने **''काल भैरव महाशंख''** स्थापित करें, शंख के चारों ओर सिन्दूर से एक घेरा बना दें, सामने एक **''नाग चक्र''** स्थापित करें, भैरव शंख के दोनों ओर तीन-तीन तेल के दीपक जला दें।

इसके पहले वाले प्रयोग के अनुसार संकल्प कर जल छोड़ें तथा वह कागज, जिस पर कार्य लिखा है, भैरव शंख के नीचे रख दें, वीर मुद्रा में बैठ कर, मुट्ठी ऊपर कर मंत्र-जप प्रारम्भ करें।

मंत्र

ॐ आं ह्रीं ह्रीं क्रीं ''अमुकं'' उच्चाटय उच्चाटय, मोहय मोहय, वशं करु कुरु। सर्वार्थकस्य सिद्धि रूपं त्वं महाकाल! काल भक्षण महादेव-स्वरूप त्वं। सर्व सिद्धयेत् ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव, महा भैरव महा-भय-विनाशनं देवता, सर्व सिद्धिर्भवेत्।

५१ बार मंत्र-जप करने के पश्चात् इस काल भैरव महाशंख को काले कपड़े में बांध कर अपने बैग या ब्रीफकेस में रख दें, और किसी भी मुकदमे के लिए जाते समय बैग अपने पास ही रखें, ऐसा करने से प्रबल से प्रबल विरोधी भी वशीभूत होकर सन्धि करने को उत्सुक हो जाता है तथा मुकदमे में विजय प्राप्त होती है, मंत्र-जप नियमित रूप से अवश्य सम्पन्न करना है।

भैरव से सम्बन्धित उपरोक्त तीनों प्रयोगों की प्रमाणिकता साधक स्वयं प्रयोग सम्पन्न कर ही जान सकता है, कि इन प्रयोगों में कितना अधिक प्रभाव है।

काल भैरव प्रसन्न होने पर साधक को हर प्रकार का वरदान प्रदान कर देते हैं, उसकी रक्षा करते हैं और अपनी शरण में पूर्ण अभय प्रदान करते हैं, और तब साधक की शक्ति में वृद्धि होकर वह स्वयं भैरव के समान श्रेष्ठ हो जाता है।

भैरवाष्टमी को यह प्रयोग सम्पन्न कर जब तक पूर्ण सफलता न मिले, तब तक आगे के सात रविवार तक मंत्र-अनुष्ठान अवश्य ही सम्पन्न करते रहना चाहिए। ❋

पूज्य गुरुदेव डॉ० श्रीमाली जी ''वर्ल्ड पीस कान्फ्रेस'' में आमंत्रित

स्वागत

''पीस कमीशन (अमेरिका) वर्ल्ड पीस आर्गेनाइजेसन (जापान)'' के सहयोग से १५ दिसम्बर ९४ से २१ दिसम्बर ९४ के बीच विश्व प्रसिद्ध **''फिलिपीन्स वर्ल्ड कांग्रेस''** ने हमारे **पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** को आमंत्रित किया है, जिसमें सम्पूर्ण विश्व से मात्र ३० लोगों का ही चयन किया गया है, कई नोबल प्राइज व्यक्तित्व के साथ-साथ रॉबर्ट मूलर तथा दलाई लामा जैसे विश्व प्रसिद्ध व्यक्तित्व इसमें भाग ले रहे हैं।

पूज्य गुरुदेव **''कुण्डलिनी जागरण''** तथा **''विश्व शांति में ध्यान का योगदान''** जैसे दुरूह एवं गम्भीर विषयों पर दो सत्रों में दो भाषण देंगे।

इस संस्था के द्वारा पूरे भारत-वर्ष से मात्र पूज्य गुरुदेव का चयन हमारे लिए उपलब्धि एवं भारत के लिए गौरव की बात है।

● डॉ० रामदास शर्मा,
रायपुर (म० प्र०)

जब विवेकानन्द ने काली साधना की

. . . "एक बार बस और नाच तू श्यामा" . . . यह स्वामी विवेकानन्द के बहुचर्चित गीतों में से एक है, जिसमें शक्ति की साधना को, उसकी प्रखर अनुभूतियों को अभिव्यक्ति दी गई है। संसार के महान शाक्त-साधकों में से एक हैं– "स्वामी विवेकानन्द।"

जब कभी भी उन्होंने पराशक्ति को आवाज दी, तब-तब उन्हें समुचित मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। प्राप्त उल्लेखों के अनुसार संन्यासी होने के बाद वे पूरे देश का भ्रमण करते हुए कश्मीर पहुंचे। मुसलमान आक्रमणकारियों द्वारा क्षीर भवानी के नष्ट-भ्रष्ट मंदिर को देखकर स्वामी जी का मन कराह उठा। राष्ट्र-प्रेम के आवेश में व्यथित हृदय से उन्होंने सोचा– "उस समय के लोग कैसे थे, कि बिना प्रतिकार के यह सब अत्याचार होने दिया? मैं यदि उस समय यहां होता, तो कभी भी यह नहीं होने देता, प्राणों की बाजी लगाकर इस अत्याचार का विरोध करता।"

उसी समय स्वामी जी ने माता क्षीर भवानी की मूर्ति को बोलते हुए सुना– "यदि अविश्वासी लोग मेरे मंदिर में प्रवेश कर मेरी प्रतिमा खंडित कर देते हैं, तो उससे तुझे क्या? तेरी रक्षा मैं करती हूं या तू मेरी रक्षा करता है?"

इस उदाहरण को प्रस्तुत करते हुए परवर्ती काल में स्वामी जी ने कहा था– "राष्ट्र-प्रेम का मेरा भ्रम दूर हो गया। मेरे सभी संकल्प समाप्त हो गए। अब, बस 'मां' है, केवल मां!. . . और मैं उनका शिशु मात्र हूं।"

आशय यह है, कि स्वामी जी को गुरु-कृपा द्वारा पराशक्ति का आशीर्वाद बहुत पहले से ही इस रूप में प्राप्त हो चुका था, वे जब भी सच्चे मन से मां का स्मरण करते थे, तो बोलकर या प्रत्यक्ष प्रकट होकर पराशक्ति स्वयं स्वामी जी की जिज्ञासा को शांत करती थीं।

बहुत कम लोग जानते हैं, कि स्वामी विवेकानन्द विज्ञान के स्नातक थे और उनका पूर्व नाम "नरेन्द्रनाथ दत्त" था। सोमवार १४ जनवरी १८६३ को स्वामी जी का जन्म कलकत्ता में हुआ था। उनके पिता का नाम "श्री विश्वनाथ दत्त" तथा माता का नाम "सौ० भुवनेश्वरी देवी" था। परिवार के संस्कार ऐसे थे, कि दानशीलता, परदुःख कातरता जैसे उदात्त गुण स्वामी जी के रोम-रोम में कूट-कूट कर भरे हुए थे।

वे बचपन से ही चंचल प्रकृति के थे, फिर भी वे राम, सीता, शिव आदि देव-विग्रहों का ध्यान किया करते थे। उनकी काया बलिष्ठ, कंठ स्वर में गुंजन और मेधा अत्यन्त ही प्रखर थी, धार्मिक विश्वासों और आध्यात्मिकता के प्रति उनकी गहरी रुचि थी। उन दिनों सम्पूर्ण भारत में ब्रह्म समाज के आंदोलनों की वजह से नास्तिकता के विचार भी प्रसारित हो रहे थे। युवक नरेन्द्रनाथ के मन में ईश्वर के सम्बन्ध में संदेह का ज्वार उफनता रहता था, और तर्कों के अस्त्र-शस्त्र लेकर जब वे मैदान में उतरते थे, तो बड़े-बड़े ज्ञानी, संत, महात्मा पलायन कर जाते थे।

वे सीधे प्रश्न करते थे– "क्या आपने ईश्वर को देखा है?"

यह एक ऐसा प्रश्न था, जिसका समुचित उत्तर कोई दे ही नहीं सकता था।

कलकत्ता में "हुगली" के तट पर दक्षिणेश्वर का एक विशाल मंदिर है, नदी के किनारे द्वादश शिवलिंग हैं और इसके बीच में काली का मंदिर है। उन दिनों रामकृष्ण परमहंस की साधना का केन्द्र यही मंदिर था।

सन् १८८१ की घटना है। परमहंस जी की ख्याति सुनकर नरेन्द्रनाथ उनके दर्शन के लिए पहुंचे और मिलते ही उन्होंने पहला प्रश्न यह किया कि– "क्या आपने ईश्वर को देखा है?"

परमहंस जी का स्पष्ट उत्तर था– "हां! देखा है। जिस प्रकार तुम्हें देख रहा हूं, ठीक उसी प्रकार, बल्कि कहीं उससे अधिक स्पष्ट।"

युवक नरेन्द्रनाथ को लगा, कि संसार में कोई एक व्यक्ति तो ऐसा है, जो स्वयं की अनुभूतियों से ईश्वर के अस्तित्व का विश्वास दिला सकता है, उनका संशय दूर हो गया . . . और यहीं से शिष्य का प्रशिक्षण प्रारम्भ हुआ।

नरेन्द्रनाथ ने पूछा– "क्या आप मुझे ईश्वर का साक्षात्कार करा सकते हैं?"

परमहंस जी ने कहा– "अवश्य, इसी समय, लो देखो।"

उन्होंने नरेन्द्रनाथ के मस्तक पर अपना वरदहस्त रख दिया, जैसे घटाटोप अंधकार के बीच बिजली-सी कौंध उठी हो और नरेन्द्रनाथ को बोध हो गया उस जगतनियन्ता का, उस सत्ता का, जो सर्वव्यापी है, फिर भी विलुप्त है। नरेन्द्रनाथ गुरु-चरणों की ओर झुके, किन्तु परमहंस जी छिटक कर दूर जा कर खड़े हो गए और बोले–

"नरेन्द्र! तू मुझे प्रणाम कभी मत करना, तू साक्षात् रुद्र है रे।"

ऐसे गुरु थे रामकृष्ण परमहंस, और ऐसे थे उनके शिष्य स्वामी विवेकानन्द।

भारतीय धर्म-साधनाओं का यह एक वैज्ञानिक सत्य है, कि गुरु की शक्ति शिष्य में संक्रमित होती है। दीक्षा के द्वारा शिष्य के अन्तःकरण का दर्पण साफ होता है, और शिष्य परम सत्य का साक्षात्कार करने में समर्थ होता है। पराशक्ति की कृपा रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द दोनों को ही प्राप्त थी। रामकृष्ण परमहंस तो जन्मजात सिद्ध थे और विवेकानन्द के संस्कारों का परिमार्जन उन्हीं रामकृष्ण परमहंस के सान्निध्य में हुआ।

पराशक्ति की कृपा प्राप्त करने के बाद सन् १८६४ में स्वामी विवेकानन्द ने अपने एक पत्र में लिखा था– "मेरे लिए मां की कृपा, पिता की कृपा से शत-सहस्र गुणा-अधिक मूल्यवान है। मेरे लिए मां का आशीर्वाद ही सर्वोपरि है। मां की आज्ञा हो, तो उसके पुत्र सभी कुछ कर सकते हैं।"

साधनाओं के क्षेत्र में हमारा विश्वास है, कि यदि किसी साधक ने, तांत्रिक ने काली की साधना नहीं की, तो उसका जीवन निरर्थक है। रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द दोनों ने ही अपने जीवन-काल में सघन काली की साधना की थी। जीवंत अनुभूतियों से ओत-प्रोत एक साधना प्रसंग का उल्लेख स्वयं स्वामी विवेकानन्द ने अपने साहित्य में इतस्ततः किया है। कहा जाता है, कि– सन् १८६४ में पिता की मृत्यु के पश्चात् नरेन्द्रनाथ के परिवार को अत्यधिक अभावों तथा संकटों का सामना करना पड़ रहा था, यद्यपि स्वामी विवेकानन्द पराशक्ति से भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के उत्कर्ष हेतु प्रार्थना करने के इच्छुक थे, तथापि उस समय उन्हें धन की भी आवश्यकता थी, इस सम्बन्ध में उन्होंने गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस से दक्षिणेश्वर में काली साधना का निवेदन किया।

तब रामकृष्ण परमहंस ने स्वामी विवेकानन्द की भर्त्सना करते हुए कहा था– "मैं तो समझता था, कि तू संसार-ज्वाला से दग्ध सहस्रों लोगों को शीतल छाया प्रदान करने वाले विशाल वटवृक्ष के समान होगा, पर देखता हूं, कि तू केवल अपनी ही मुक्ति चाहता है।"

प्राप्त उल्लेखों के अनुसार महासमाधि के पूर्व ही रामकृष्ण परमहंस ने अपनी सभी शक्ति और सिद्धि नरेन्द्रनाथ के भीतर प्रविष्ट कर दी थी। अपनी प्रथम काली साधना के अनुभवों पर प्रकाश डालते हुए स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है– "मंदिर में पहुंचकर मां की मूर्ति पर दृष्टि डालते ही मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया, कि मां चिन्मयी हैं, प्राणवन्त हैं, दिव्य प्रेम और अलौकिक

सौंदर्य का शाश्वत स्रोत हैं। भक्ति और प्रेम की उत्ताल तरंगों से मैं अभिभूत हो गया। आनन्द से विह्वल हो मैं बार-बार उन्हें साष्टांग प्रणाम कर प्रार्थना करने लगा— **मां! मुझे विवेक दो, वैराग्य दो, ज्ञान दो, भक्ति दो, मैं नित्य निरन्तर तुम्हारे दर्शन पाता रहूं, ऐसा आशीर्वाद दो. . . मेरी आत्मा में विलक्षण शांति छा गई। संसार विस्मृत हो गया, बस केवल जगन्नमाता ही मेरे हृदय में प्रकाशित हो रही थीं।''**

साधना के उन क्षणों में धन-प्राप्ति की भौतिक लालसा

वह घाट की सीढ़ियां चढ़ रहा था, कि अंधेरे में न जाने किधर से एक सांवली सी, किन्तु अत्यन्त आकर्षक और सुगठित अंगों वाली षोडशी कन्या ने उसका रास्ता रोक लिया, युवा योगी उससे टकराते-टकराते बचा, उसके मुंह से निकला— मां! मां!!

स्वामी जी के अन्तर्मानस से जैसे विलुप्त हो गई। इस प्रसंग के कुछ उपरान्त की यह घटना है—

अर्धरात्रि का नीरव वातावरण, काली मंदिर में मंद-मंद प्रज्वलित दीप का प्रकाश, अगर-धूम के सुवास से प्रांगण गमक रहा था, वह युवा योगी आराधना में रत था। अभी कुछ देर पूर्व जब वह हुगली (गंगा) में स्नान कर रहा था, तभी गुरुदेव की अन्तर्चेतना ने निर्देश दिया था— ''जा-जा, मां तुझे पुकार रही है। देख, आज कुछ मांगना मत रे, केवल देखना काली की महामाया-लीला।''

वह घाट की सीढ़ियां चढ़ रहा था, कि अंधेरे में न जाने किधर से एक सांवली सी, किन्तु अत्यन्त आकर्षक और सुगठित अंगों वाली षोडशी कन्या ने उसका रास्ता रोक लिया, युवा योगी उससे टकराते-टकराते बचा, उसके मुंह से निकला— ''मां! मां!!. . . क्षमा करना।''

युवती ने अस्फुट स्वर में कहा— ''धत्! मां कहता है, देखता नहीं मुझे।''

उसका चित्त सहज ही उद्वेलित हो उठा, वह भागता हुआ मंदिर के भीतर प्रविष्ट हुआ और काली की प्रतिमा के सामने गिर कर रोने लगा था।

न जाने कितना समय व्यतीत हो गया था। आंखें खुलती थीं, बंद होती थीं, ''ध्यान'' लग नहीं रहा था, सामने रौद्रमुखी मां की प्रतिमा. . . ''हां! प्रतिमा ही तो है।'' योगी के मानस-सागर में लहरें उठ रही थीं, फिर क्या देखा— मां की प्रतिमा के पार्श्व में ही गुरुदेव खड़े हैं।

— कहां से आ गए?. . . यहां तो नहीं थे!. . . अरे! यह देवी की प्रतिमा कहां गई?. . . नहीं! नहीं!!. . . यह भ्रम है. . . माया है।

तभी गुरुदेव की आवाज गूंजी— ''अरे नरेन्द्र उठ, देख तो, मां! तुझे पुकार रही है। देख, आज जो मांगना है, मांग ले।''

युवा संन्यासी के सामने जैसे अनेक छाया-चित्र डोल रहे थे. . . ''हां! मां की प्रतिमा तो नहीं है सामने!. . . यह कौन है?. . . यह तो वही षोडशी है, जो घाट पर दिखी थी।''

वह हड़बड़ा कर आसन से उठ खड़ा हुआ, उसने क्रोधित होकर शायद चीखना चाहा— ''अरे! तू यहां भी आ गई।''

किन्तु शब्द कंठ से नहीं फूटे, जैसे स्तंभन हो गया हो, और वह नृत्य की मुद्रा में थी। बड़ी मोहक मुद्रा, जैसे अचानक ही नीलकमल की पंखुड़ी पर शुभ्र कौमुदी की किरण अवतरित हो गई हो, न जाने किधर से मधुर संगीत की लहरियां उत्पन्न हो रही थीं, फिर छाया-चित्रों में जैसे एक परिवर्तन सा हुआ, षोडशी की मुखाकृति बदलने लगी। शुभ्र कौमुदी जैसे अमावस्या के अंक में समाहित होती जा रही हो, फिर पूर्ण अंधकार, और अब वही भीषण काली बनकर रौद्र नृत्य कर रही थी। बार-बार खप्पर आगे बढ़ाती थी, जैसे खून मांग रही हो, उसके हाथ का खड्ग ऐसे चमक उठता था, जैसे विद्युत की ज्वाला हो, तभी कहीं से कोई स्तोत्र का पाठ कर उठा—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणतास्म ताम्।।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्ये धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सखायै सततं नमः।।

— फिर देखा वह रौद्ररूपा जिस पर नृत्यरत है, वह शव है। युवा योगी ने सिर झुका कर उस शव को पहिचानने की कोशिश की— उफ्! न ऽ ऽ हीं!!

वह फिर चीख पड़ा- ''यह तो मैं हूं! मैं हूं वह, जिस पर काली नृत्य कर रही है!!''

नदी के उस पार से हवा का एक तीव्र झोंका आया। मंदिर में जलता हुआ दीपक बुझने को हुआ, फिर तीव्र गति से उसकी लौ धधक उठी, समस्त छाया-चित्र जैसे मिट गए। स्वामी विवेकानन्द अपने आसन पर बैठे थे, सामने केवल काली की प्रतिमा! न वहां कोई षोडशी थी और न ही गुरुदेव की आकृति। स्वामी जी ने आंखें बन्द कीं और ध्यान में खोने लगे, उनके होंठ अस्फुट स्वर में बुदबुदा रहे थे— **''एक बार बस और नाच तू श्यामा।''**

❄

गुरु कृपा ही केवलम्

परम पूज्य गुरुदेव, १५ मई १६६१ को आपने मुझे 'गुरु मंत्र' प्रेषित किया था **'ॐ नारायणाय गुरुभ्यो नमः'** आप अन्तर्यामी हैं, मैंने लगभग एक वर्ष तक 'नहीं से थोड़ा ऊपर' ही जप किया था, लेकिन फिर भी आपने मेरी हर क्षण देखभाल की और कर रहे हैं।

हे प्रभु! आप स्वयं कहते हैं, कि मुझे पाने का मतलब है– ''आफताब को अपने हलक में उतारना।'' मुझे पाने का मतलब है– ''सम्पूर्ण चांद की चांदनी को एक छोटी सी डिबिया में बन्द कर लेना।''

गुरुदेव! यह कथन हमारे लिए उतना ही अप्रमाणिक है, जैसे सूरज रात को उदय होता है, दिन को अस्त होता है, क्योंकि हमारे लिए तीन लाख पुत्र नहीं हैं, पुत्रियां नहीं हैं, बच्चे नहीं हैं, समस्त ब्रह्माण्ड हमारे लिए एक परिवार नहीं है। हे प्रभु! हमारे एक या दो सन्तानें हों, तो भी हम रोते हैं– ''गुरुदेव! धन नहीं है, पत्नी बीमार है, झगड़ालू है, बच्चे कहना नहीं मानते. . .।''

और हम अपने उन स्वजनों के दुःखों में भागीदार भी तभी होते हैं, यदि वह दुःख प्रत्यक्ष रूप से हमें दिखाई पड़े, और आप हैं कि एक-एक क्षण अपने एक-एक शिष्य की बुद्धि की, मन की, हृदय की, तन यानि देह की व प्राणों की सारी खबर रखते हैं, फिर भी मुस्कराते हैं, हर किसी को अपना सीना फाड़ के नहीं दिखाते।

'तांत्रिक सिद्धियां' पुस्तक से पता लगा था, कि एक बार आपने-अपने एक संन्यासी शिष्य 'शिवानन्द ब्रह्मचारी को बीस वर्षों का कड़ा दण्ड दिया था। उन बीस वर्षों में वह शिष्य न जाने कितना रोया होगा, तड़फा होगा, तिल-तिल कर जला होगा, एक क्षण भी चैन से न रहा होगा, तो क्या आप चैन से बैठे होंगे?

यह बात अलग है, कि उन बीस वर्षों में भी आपने हास्य रस से भरपूर 'चुटकुले' सुनाये होंगे, शिष्यों में 'आनन्द का अमृत' बांटा होगा, कारों में व हवाई जहाजों में देश-विदेश की यात्राएं भी की होंगी।

समाज की दृष्टि में तो आपकी ये कारें, आपकी कोठी, आपकी यह प्रसिद्धि, आपका यह ज्योतिष ही घूमता है, लेकिन मेरे सहित कितने व्यक्ति ऐसे हैं, जो आपके मानस में दृष्टि डालने का प्रयत्न करते हैं या फिर आपकी उच्चता के एक अंश को भी अपने मानस में थोड़े समय तक ही बरकरार रख पाते हैं।

यह तो एक शिष्य की गतिविधि थी, जिसके कारण हमें आपके मानस का हल्का सा साक्षात्कार मिला। आपके तो शिष्य तीन लाख से भी अधिक हैं, क्या वे प्रति क्षण सुखी ही रहते हैं?

इतना विष तो साक्षात् शिव ही धारण कर सकते हैं अपने कंठ में। अब बताइये, कि आपके हलक में 'आफताब' है कि नहीं। हमारा व्यक्तित्व तो बहुत बौना है आपके सामने, आपकी रज-कण भी नहीं हैं हम।

जिन दिनों आपने मुझे शिष्य बनाया था, उन दिनों मेरे घर में लड़ाई-झगड़े के सिवाय क्या था। एक दिन तंग आ गया, तो कदम बाहर की ओर डगमगा गए, जो अन्तिम लड़ाई हुई थी, वह इस बात पर, कि मुझे पहिनने को 'नई टी शर्ट' नहीं दी गई थी, चूंकि आप मुझसे जुड़े हुए थे, इसलिए इल्जाम आपके ऊपर आ गया। लेकिन फिर भी हर क्षण आपने मेरा ख्याल रखा। इस लड़खड़ाये हुए शिष्य को कदम-कदम पर व्यभिचारी मिले, लेकिन हर पल बच निकला . . . क्या यह संयोग था? आपने मुझे जीवन की वास्तविकताओं से परिचित करवाया, घर की कीमत बताई, माता-पिता का महत्व बताया, फिर १७ दिन बाद मेरा मन घर जाने को करने लगा, तो एक भले व्यक्ति ने मुझ पर विश्वास कर घर जाने का किराया दे दिया, एक और भला व्यक्ति मेरे सारे रास्ते का, खाने-पीने का खर्चा उठाने को तैयार हो गया. . . क्या यह भी कोई संयोग था?

यही नहीं, आपने मेरा नैतिक उद्धार भी किया। कहां 'सेक्स' के क्षेत्र में मैं इतनी बुरी तरह जकड़ा जा रहा था, कि ५० वर्ष की स्त्री से भी परहेज नहीं रखना चाहता था, और आज 'पवित्रता की पूर्णता' को पाने के लिए यंत्र मंगवा रहा हूं। 'सादगी' मेरा आदर्श बन चुकी है। **आप मेरे जैसे न जाने कितने शिष्यों का आज उद्धार कर रहे हैं, यह गुरुत्व पैसों में नहीं तोला जा सकता, पर क्या करें प्रभु! हमारी आंखों पर ही काम, मोह, लोभ के ऐसे पर्दे पड़े हैं, कि हमें आपकी दिव्यता, आपकी उच्चता नजर ही नहीं आती।** हमें तो बस एक ही चीज नजर आती है– ''फलानी दीक्षा के २१०० रु०! ५००० रु०!! हाय! कितना कमा रहे हैं!'' जो व्यक्तित्व हमसे २१०० रु० की गुहार कर रहा है, वह क्या हमें महालक्ष्मी की पूर्णता दे सकता है? जो व्यक्तित्व हमसे ५१०० रु० की मांग करता है, वह क्या हमारी आत्म-शक्ति को मूलाधार से सहस्रार तक पहुंचा सकता है? पूछना है, तो उन शिष्यों से पूछिए, जो अपना भौतिक जीवन भी संवार चुके हैं व आध्यात्मिक पूर्णता भी प्राप्त कर चुके हैं।

कभी मैंने अपने 'गुरुदेव' को पोथी खोलते हुए नहीं देखा। मंत्र-तंत्र-यंत्र, ज्योतिष, आयुर्वेद, हिप्नोटिज्म, हस्तरेखा शास्त्र, अंक शास्त्र में आप निपुण हैं, कर्मकाण्ड में सिद्धहस्त हैं, यहां तक कि शास्त्रीय संगीत, शास्त्रीय नृत्य, हास्य आदि में भी आप पारंगत हैं, आखिर वह जीवन का कौन- सा पक्ष है, जो आप में नहीं है या अपूर्ण है।

'गुरुधाम' दिल्ली में आपके जो चित्र लगे हैं, उनमें से एक भी चित्र किसी दूसरे चित्र से मेल नहीं खाता। किसी में आप शुक्र प्रधान भव्य व्यक्तित्व के जिन्दादिल इन्सान दिखाई पड़ते हैं, तो किसी में नगण्य से पंडित। किसी में कवि दिखाई पड़ते हैं, तो किसी में एक गांव का चाकर। किसी में कृष्ण दिखते हैं, तो किसी

में एक ऐसा वृद्ध जो ७०-७२ वर्ष अपने जीवन के काट चुका हो। जो व्यक्ति घर से जैसी कल्पना अपने मस्तिष्क में संजोकर निकलता है, ठीक उसे वही छवि आप में देखने को मिलती है।

मतलब यह, कि वह स्वयं "आपको" नहीं खींचता, अपितु "आप स्वयं" उस व्यक्ति विशेष को अपनी तरफ खींचते हैं, उसके मनोविज्ञान को समझते हैं और न जाने क्या-क्या प्रपंच रहते हैं आपके मन में अपने शिष्यों के लिए। आपने स्वयं कहा है— "मैं भगवान शिव का अवतार हूं। इस ब्रह्माण्ड में कोई भी व्यक्तित्व मुझसे किसी भी विषय पर, किसी भी स्थान पर, कभी भी शास्त्रार्थ करना चाहे, मैं तैयार हूं। इस कथन के पीछे मेरा अहंकार नहीं है, लेकिन मुझमें यह सामर्थ्य है, कि मैं तुम्हें पूर्णता दे सकता हूं।" हे प्रभु! यह समाज न जाने आपको कब समझेगा?

आपके आशीर्वाद की इच्छा लिए—

मुनीश चोपड़ा
गुरुद्वारा, टोहना,
हरियाणा

मेरा पूरा परिवार जब मृत्यु से बचा

गत् २२ जुलाई १९९४ को मैं अपनी माताजी को लेकर अस्पताल जा रहा था। मैं अपने पिताश्री की एम्बेसडर गाड़ी चला रहा था। उस गाड़ी के स्पीडोमीटर में खराबी होने के कारण वह सही स्पीड, जो कि ७०-८० कि०मी०/प्रति घंटा थी, उसे ३०-४० कि० मी०/प्रति घंटा दिखा रही थी।

अचानक मेरे सामने से जो ट्रक जा रहा था, उसके चालक ने एकदम से ब्रेक दबा दी, मैंने भी उसी अनुसार कार्यवाही की, लेकिन यह क्या? मैंने ब्रेक पैडल जैसे ही दबाया, मैंने पाया कि मेरी गाड़ी का ब्रेक फेल हो गया है। हमारे सामने साक्षात् मौत खड़ी हुई थी। अगर गाड़ी के साथ ट्रक की टक्कर हो जाए, तो चोट तो अवश्य ही आएगी तथा गाड़ी में आग भी लग जाएगी। मैंने तुरन्त ब्रेक पुनः दबाई और जोर से "जय गुरुदेव" की आवाज मेरे मुख से निकली, गुरुदेव का नाम निकला ही था, गाड़ी, जिसकी स्पीड लगभग ७० कि० मी०/प्रति घंटा थी, ज्यों की त्यों रुक गई मानो गुरुदेव ने चलती गाड़ी को एकदम पीछे से पकड़ लिया हो।

बाद में पता चला कि ब्रेक के मास्टर सिलेण्डर में ब्रेक फ्लूयड बिलकुल ही नहीं था, और किसी दिव्य शक्ति के बिना मेरा बचना मुश्किल ही था।

यह तो पूज्य गुरुदेव की असीम अनुकम्पा ही है, कि वह हमेशा पूज्यनीया माता जी के साथ सूक्ष्म रूप में मेरे साथ साये की तरह रहते हैं। मैं पूज्य गुरुदेव का आभारी हूं, कि उन्होंने मुझे इलाहाबाद शिविर में **सिद्धाश्रम दीक्षा** के बाद **गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा** लेने की आज्ञा दी। बाद में ५ अगस्त (मेरा २५ वां जन्मदिन) के दिन मैं उनके पास आया और उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की, तो उन्होंने हंसकर मुझे आशीर्वाद दिया, और कहा, कि "मैं तुम्हारे साथ हमेशा हूं।" आखिर में मैं यही चाहूंगा कि वे और माताजी मुझे और मेरे बाकी गुरु भाई और गुरु बहिनों पर अभय, प्यार बरसाते रहें, और हमारे मन, शरीर के कण-कण में समाए रहें, बसे रहें।

सुरंजन रॉय,
नीलगिरि, नई दिल्ली

गुरुदेव जी की कृपा से प्रमोसन

मेरे हृदयेश्वर गुरुदेव महाराज,

मैं सन् १९८९ से जोधपुर में आपसे मिला, तभी से सदस्य हूं, मेरा ४३६६ न० था और अभी भी है, मुझे जैसे आम लोग कहते हैं, कि गुरु जी पैसा खींचते हैं, मैं उसी असमंजस में पड़ा रहा, जिससे मैं बहुत लेट हो गया गुरुजी को समझने में। सन् १९९० में गुरु दीक्षा ली, शिविर में भाग लिया, लेकिन कुछ समय मैं नहीं आया, फिर मैंने गुरु जी को फोन किया, उन्होंने मुझे बुलाया और जब मैं दिल्ली गुरुधाम पहुंचा, तो वहां मुझे उनके व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष प्रमाण मिला, अगर मैंने पहले समझ लिया होता, तो आज जाने क्या से क्या होता **मैं पत्रिका पाठकों को प्रत्यक्ष प्रमाण दे रहा हूं, कि** गुरु जी का आशीर्वाद क्या है। गुरु जी उचित समझें, तो प्रकाशित करवा दें, जिससे लोगों की समझ में आ जाये, जो कि आलोचना करते हैं।

अभी-अभी की बात है, मैंने गुरुदेव जी से दिनांक ११/०७/९४ को महालक्ष्मी दीक्षा गुरुधाम में ११.०० बजे के करीब ली एवं मेरी आंखों में अश्रुधार थी, मैंने आंखों की ही भाषा में गुरुदेव से निवेदन किया, कि मैं मानसिक, शारीरिक और आर्थिक तीनों तरह से परेशान हूं, उन्होंने आशीर्वाद दिया कि सब ठीक हो जाएगा। इधर कहना था, कि ११/०७/९४ को ही अधिकारियों ने आपस में फोन किया और मैं सेक्सन इन्चार्ज बन गया, जबकि मैंने कोई कोशिश नहीं की। अब गुरुदेव से प्रार्थना है, कि वे मुझे पूर्ण दीक्षाएं प्राप्त करा दें एवं मुझे, मेरे बच्चों व पत्नी को पूर्णता की ओर ले जाएं, मेरी यही आखिरी कामना है। मुझे वे पूर्ण शिवरूप भोले भंडारी ही लगे।

आपका मूर्ख शिष्य
रतन लाल खरे, सब इन्जी०
टीकमगढ़, म० प्र०।

सबको वश में करने वाली अद्वितीय साधना पद्धति

सौन्दर्योपासना सिद्धि के बारे में प्राचीनतम ग्रंथों में तो उल्लेख मिलता ही है, साथ ही कई स्थानों पर यह स्पष्ट रूप से वर्णित हुआ है कि, यदि साधक किसी देवता की साधना करना चाहता है, या किसी भी देवता को अपने अनुकूल बनाना चाहता है, या उसे प्रसन्न करना चाहता है अथवा उसके प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता है, तो साधना प्रारम्भ करने से पूर्व यह 'सौन्दर्योपासना सिद्धि' सम्पन्न कर लेनी चाहिए।

जहां धार्मिक ग्रंथों में और उपासना ग्रंथों में इस पद्धति को उपयोगी और महत्वपूर्ण बताया है, वहीं तांत्रिक ग्रंथों में भी इस पद्धति को जीवन के लिए आवश्यक और अनुकूल स्पष्ट किया गया है, स्वयं गुरु गोरखनाथ ने इस सौन्दर्योपासना सिद्धि प्रयोग के बारे में समझाते हुए इसके मुख्यतः छः लाभ बताए हैं, जो कि उन्होंने अनुभव किए या जिसे प्रत्यक्ष कर उन्होंने स्वीकार किया, कि इस साधना पद्धति से इस प्रकार के लाभ तुरन्त प्राप्त होते हैं —

१. सौन्दर्योपासना सिद्धि से किसी भी देवी-देवता को पूर्णतः अपने अनुकूल बना सकते हैं, साथ ही उनके प्रत्यक्ष दर्शन और उनसे सम्बन्धित सिद्धि प्राप्त करने में यह साधना पद्धति अपने-आप में अचूक और महत्वपूर्ण है।
२. चाहे वह देवी या देवता क्रूर हो या शान्त हो, चाहे ग्रह हो या दस महाविद्या साधना हो, चाहे भैरव उपासना हो या लक्ष्मी सिद्धि हो, इन सभी में यह प्रयोग तुरन्त फलप्रद होता है।

भारत में तीन तरह की साधना पद्धतियां प्रचलित हैं— शैव साधना पद्धति, वैष्णव साधना पद्धति और शाक्त साधना पद्धति। इन साधना पद्धतियों में शाक्त साधना पद्धति तुरन्त प्रभाव प्रदान करने वाली और अचूक मानी जाती है। वर्ष का यह महत्वपूर्ण लेख और साधना पद्धति पाठकों और साधकों को देते हुए हमें यह प्रसन्नता हो रही है, कि इस साधना पद्धति से हम किसी भी देवता को अपने वश में कर सकते हैं या अपने अनुकूल बना सकते हैं, साथ ही साथ इस पद्धति से किसी भी पुरुष या स्त्री को पूर्णरूप से अपने वश में कर सकते हैं, यह अपने-आप में अचूक और तुरन्त प्रभावी उपाय है।

इसके साथ ही साथ यह "सौन्दर्योपासना सिद्धि प्रयोग" भी कहलाता है, जिसकी वजह से रोग मुक्ति और शरीर को अद्वितीय सौन्दर्य युक्त बनाने में यह साधना पद्धति अपने-आप में अचूक है।

३. इस साधना से संसार के किसी भी पुरुष या स्त्री को सम्मोहित किया जा सकता है, उसे अपने वश में किया जा सकता है, जिससे वह जीवन में हमारे अनुकूल कार्य करे या हम अपने जीवन में उसे जो भी आज्ञा दें, वह उसका पूरा-पूरा पालन करे।

यदि कोई रूठा हुआ हो या दूर रहता हो, अथवा मतभेद हो गए हों या हमारा अधिकारी हो, अथवा कोई ऐसा व्यक्ति हो, जो हमारा कार्य सम्पन्न नहीं कर रहा हो, तो उसे अपने अनुकूल बनाने के लिए यह प्रयोग अपने-आप में महत्वपूर्ण है।

४. दाम्पत्य जीवन में मधुरता लाने के लिए, पुत्र की उन्नति के लिए, सुन्दर पति या पत्नी की प्राप्ति के लिए अथवा इच्छानुसार व्यक्ति से विवाह करने के लिए यह प्रयोग अपने-आप में महत्वपूर्ण माना गया है।

५. यह प्रयोग रोग निवारण प्रयोग है, इससे किसी भी प्रकार का रोग दूर किया जा सकता है, और व्यक्ति पूर्णतः स्वस्थ, सुन्दर और आकर्षक बन सकता है, सही अर्थों में देखा जाए, तो भूत-प्रेत, पिशाच-बाधा अथवा ग्रह-बाधा जैसी समस्याओं का समाधान इस प्रयोग से तुरन्त सम्पन्न होता है और सफलता प्राप्त होती ही है।

६. मूलतः यह सौन्दर्योपासना पद्धति है, यदि शरीर अनाकर्षक, मोटा और भारी हो, अथवा शरीर में सौन्दर्य की कमी हो, और जो अपने शरीर को सुन्दर और आकर्षक बनाये रखना चाहते हों, उनके लिए तो यह प्रयोग रामबाण की तरह है, कोई भी पुरुष या स्त्री इस प्रयोग को सम्पन्न कर अपने जीवन में मनोवांछित सुन्दरता प्राप्त कर सकते हैं।

७. यह लक्ष्मी उपासना प्रयोग माना गया है, इसके माध्यम से लक्ष्मी को पूर्णतः प्रसन्न कर व्यापार में अनुकूलता लाई जा सकती है, प्रमोशन या आर्थिक उन्नति प्राप्त की जा सकती है, साथ ही साथ इस प्रयोग से शत्रुओं की समाप्ति और मुकदमे में विजय भी प्राप्त कर सकते हैं।

मेरी राय में आपको इस प्रकार का प्रयोग एक बार अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, क्योंकि इस प्रयोग का प्रभाव अपने-आप में अचूक और तुरन्त फल प्रदान करने वाला होता है।

यह प्रयोग मात्र तीन घंटे का है। किसी भी एकादशी की रात्रि में ७ से १० बजे के बीच या प्रातःकाल ५ से ८ बजे के बीच यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है। चाहे साधक किसी भी धर्म का उपासक हो, चाहे वह किसी भी मत को मानने वाला हो, यह प्रयोग सभी के लिए समान रूप से उपयोगी है।

इस प्रयोग के लिए **"सौन्दर्या पैकेट"** की आवश्यकता होती है जिसमें — **१. सौन्दर्योपासना दुर्लभ यंत्र, २. सौन्दर्य माला, ३. वैजयन्ती सिद्ध गुटिका** होती है तांत्रिक ग्रंथों में भी इसी प्रकार की सामग्री के प्रयोग की सलाह दी गई है।

इसके लिए शास्त्रों में बताया गया है, कि यह प्रयोग नूतन चन्द्र दर्शन को भी किया जा सकता है, यानि अमावस्या के बाद जब नया चांद उगे, उस दिन यह प्रयोग करना चाहिए, प्रत्येक अमावस्या के बाद द्वितीया को नया चांद उगता है, तदनुसार यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है। ये दिन इस साधना के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण व सिद्धिदायक माने गए हैं, और प्रत्येक साधक को इन दिनों का उपयोग करना ही चाहिए।

साधक सामान्य रूप से दीपक जलाकर इससे सम्बन्धित मंत्र-जप प्रारम्भ कर सकता है अथवा यदि किसी विशेष देवता की सिद्धि प्राप्त करना चाहे, तो उसका चित्र सामने रख कर यह प्रयोग सम्पन्न कर सकता है, उदाहरण के लिए यदि कोई साधक **'लक्ष्मी प्रत्यक्ष सिद्धि'** प्राप्त करना चाहे, तो अपने सामने लक्ष्मी चित्र रख कर यह प्रयोग सम्पन्न कर सकता है।

इसी प्रकार यदि कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका को या कोई प्रेमिका अपने प्रेमी को अपने वश में करना चाहे, तो उसका चित्र सामने रख कर मंत्र-जप कर सकती है।

इसके अलावा **रोग मुक्ति** आदि कार्यों में मात्र हाथ में जल लेकर साधक अपनी इच्छा बोले — "मैं अमुक कार्य की सिद्धि के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहता हूं," और फिर सामने तेल का दीपक लगा दे और मंत्र-जप प्रारम्भ कर दे, यह साधना दिन को या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है।

इस साधना में किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण किए जा सकते हैं, पर पुरुष धोती पहिने और स्त्री (साधिका) साड़ी धारण करे, सिले-सिलाये वस्त्र धारण नहीं किए जा सकते।

इसके बाद किसी थाली में कुंकुम से निम्न प्रकार का यंत्र बना लें, इसे सौन्दर्योपासना यंत्र कहते हैं—

सौन्दर्योपासना यंत्र

१	५
३	८

इस यंत्र पर पैकेट में से जो यंत्र प्राप्त हुआ है, वह रख दें, और साथ ही साथ वैजयन्ती सिद्ध गुटिका भी रख दें, फिर सौन्दर्य माला से मंत्र-जप प्रारम्भ करें, इसका ११ माला मंत्र-जप आवश्यक माना गया है।

सौन्दर्योपासना मंत्र

।।ॐ ऐं ऐं सौन्दर्य प्रत्यक्ष वशं सम्मोहयं फट्।।

उपरोक्त दिनों में कभी भी आप यह प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं, मंत्र-जप में यदि चित्र हो, तो सामने रख कर उसे देखते हुए मंत्र-जप सम्पन्न करें, साधना सम्पन्न होने पर इस सामग्री को लाल कपड़े में बांध कर किसी पवित्र नदी या सरोवर में विसर्जित कर दें। ❋
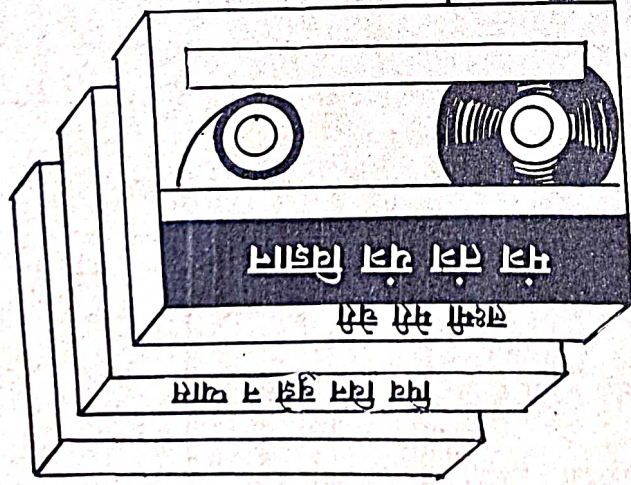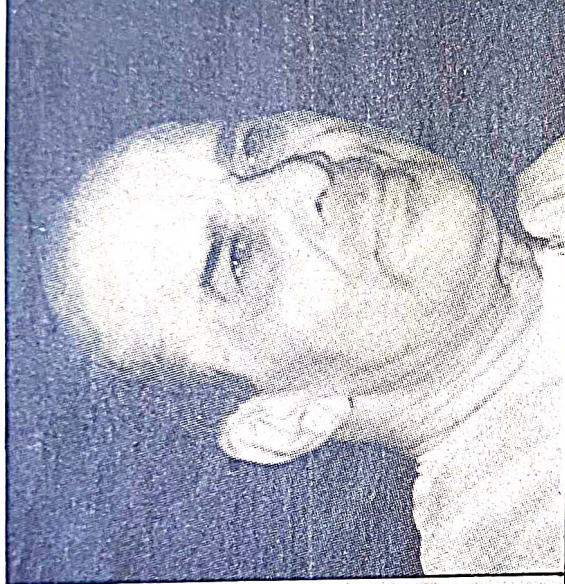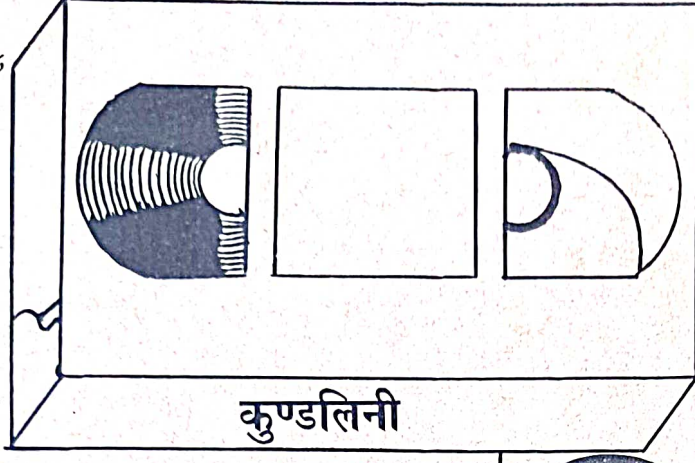
ध्यान, धारणा और समाधि

शास्त्रों में, वेदों में जिसे "ब्रह्मानन्द" कहा गया है, "पूर्णानन्द" कहा गया है, जिसको "आनन्द" की संज्ञा दी गई है, वह केवल ध्यान, धारणा और समाधि के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है। इसी चिन्तन को स्पष्ट करती हुई यह प्रस्तुति. . .

फिर दूर कहीं पायल खनकी

श्री कृष्ण के प्रेम, माधुर्य से दिव्यता के संस्पर्श से द्वापर युग में सभी के हृदय को जाग्रत करती जो आनन्द रूपी पायल खनक रही थी, वही पायल फिर खनक उठी है, इस कैसेट के माध्यम से . . .

महालक्ष्मी साधना

जो अपने-आप में ही धन, वैभव, ऐश्वर्य से युक्त है . . . मनुष्य के समस्त अभावों व उसके भौतिक जीवन को पुष्ट करती यह साधना, जो सभी के लिए आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य भी है।

षोडश अप्सरा

धन, यश, वैभव, ऐश्वर्य, ओज और सौन्दर्य सभी कुछ तो प्रदान कर देती है "अप्सरा". . . १०८ अप्सराओं में से अति विशिष्ट षोडश अप्सरा. . .

महालक्ष्मी स्वरूप साधना

आज के युग में दरिद्रता के अभिशाप से ग्रस्त बेबस और मृतवत् जीवन जीते मनुष्य को सम्पूर्ण वैभव, धन-धान्य व यश प्रदान करती, यह महालक्ष्मी स्वरूप साधना . . .

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११ - ७१८२२४८
मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : ०२९१ - ३२२०६

लक्ष्मी की पूजा नहीं . . .

उसे घर में स्थायित्व दीजिए।

किसी भी पर्व को देखने या ग्रहण करने की दो पद्धतियां होती हैं– उत्सव के रूप में एवं साधना के रूप में। दीपावली भी इसका अपवाद नहीं है, किन्तु साधनामयता की दृष्टि से क्या विशिष्टता है इस पर्व में?

यह सत्य है कि प्रत्येक पर्व अपने साथ उत्सव, उल्लास व उमंग की एक हिलोर लेकर आता है और यही सार्थकता भी है। साधना के पक्ष द्वारा भी इसी बात का समर्थन किया जाता है, किन्तु एक अलग ढंग से। साधना का पक्ष यह नहीं कहता कि किसी भी पर्व होली या दीपावली को केवल माला जप कर व्यतीत कर दो, किन्तु यह अवश्य कहता है कि इन दिवसों की जो अलग चैतन्यता है उसका भी सदुपयोग करके, पर्व के उल्लास व उमंग को अपने जीवन में स्थायी कर लो। साधना की दृष्टि व्यापक होती है और वह जीवन में भोग व मोक्ष दोनों पक्षों पर समान रूप से ध्यान रखे, ऐसा सन्तुलन बनाने का प्रयास करती है, जिससे फिर जीवन में सुख-सौभाग्य प्राप्त करने की बात किसी संयोग या घटना पर आधारित न होकर स्वयं साधक के ही हाथों में हो। साधना की इसी व्यापक दृष्टि का परिचय हमें वहां मिलता है, जहां किसी पर्व को केवल एक दिवस भी कुछ घंटों के मनोरंजन की वात न गानकर और भी अधिक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार दीपावली को भी साधनात्मक दृष्टि से पूरे २१ दिन की घटना कहा गया है, अर्थात् दीपावली से दस दिन पूर्व से लेकर दस दिन बाद तक, केवल यहीं तक नहीं शास्त्रकारों ने तो यह भी सिद्ध किया है कि कार्तिक का पूरा माह ही एक प्रकार से लक्ष्मी माह होता है, जिसको उन्होंने **''कार्तिक कल्प''** की संज्ञा से विभूषित किया है। योग्य साधक इस पूरे कल्प का ही प्रयोग प्रत्येक दिन एक नई साधना द्वारा करते हैं, जिससे फिर उन्हें पूरे वर्ष भर के लिए आर्थिक पक्ष से निश्िंचतता प्राप्त हो जाती है तथा वे जीवन के अन्य उदात्त पक्षों की ओर, अपनी आध्यात्मिक चेतना को विकसित करने की ओर सघनता से ध्यान दे पाने में समर्थ होते हैं। पूरे माह तक चलने वाली इन साधनाओं में केवल अर्थ-प्राप्ति की ही साधनाएं नहीं, वरन् ऐसी साधनाएं भी समाहित होती हैं, जिन्हें निवारक साधनाएं कहा जा सकता है। जीवन में जहां लक्ष्मी की प्राप्ति से सम्बन्धित साधनाएं सिर्फ महत्वपूर्ण ही नहीं, उससे पूर्व निवारक साधनाएं एवं बाद में सुरक्षात्मक साधनाएं या स्थायित्व प्रदान करने की साधनाएं भी आवश्यक हैं। इन तीनों प्रकार की साधनाओं के सही तालमेल से ही जीवन में लक्ष्मी सुख की प्राप्ति हो पाती है। **कार्तिक कल्प के अन्तर्गत कार्तिक मास के प्रथम पक्ष (कृष्ण पक्ष) में इसी प्रकार की निवारक साधनाएं, द्वितीय दीपावली की रात्रि में धनप्रदायक साधनाएं एवं तृतीय पक्ष अर्थात् शुक्ल पक्ष में स्थायित्व की साधनाएं वर्णित की गयी हैं।** यहां साधनाओं से तात्पर्य किसी जटिल विधि-विधान अथवा अनुष्ठान आदि से नहीं है वरन् उन लघु प्रयोगों

से है, जिन्हें सम्पन्न करने में एक या दो घंटे से अधिक समय नहीं लगता। आगे मैं इन तीनों चरणों की साधनाओं से सम्बन्धित एक-एक लघु प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूं जो अपने-आप में एक सम्पूर्ण क्रम है, और यदि साधक पूरे कार्तिक माह में इन तीन प्रयोगों को भी सम्पन्न कर लेता है तो सम्पूर्ण लक्ष्मी साधना का फल प्राप्त होता है। यों तो शास्त्रों में कार्तिक कल्प से सम्बन्धित अनगिनत साधनाएं मिलती हैं किन्तु पूज्य गुरुदेव से प्राप्त सूत्रों के अनुसार प्रस्तुत तीन साधनाएं ही पर्याप्त हैं।

अरिष्ट निवारक तांत्रोक्त लक्ष्मी गणपति साधना

कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष में की जाने वाली यह एक अत्यन्त प्रखर साधना है एवं इस वर्ष के पंचांग के अनुसार साधक इसे **२०.१०.६४ से २.११.६४** के मध्य कभी भी सम्पन्न कर सकता है। मूल रूप से यह भगवान श्री गणपति की ही साधना है। उनके साक्षात् ब्रह्म स्वरूप होने के कारण उनकी विविध रूपों से साधनाएं वर्णित की गई हैं, विभिन्न स्वरूप वर्णित किए गए हैं किन्तु लक्ष्मी-गणपति रूप में जहां एक ओर वे लक्ष्मी प्रदाता हैं, वहीं अपने मूल स्वरूप में विघ्नहर्ता होने के कारण निरन्तर धन एवं अन्यान्य सुखों की प्राप्ति में सहायक भी हैं। तांत्रोक्त साधना होने के कारण इस साधना का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। साधक को चाहिए कि वह उपरोक्त वर्णित दिवसों के मध्य किसी भी दिन (मंगलवार को छोड़) प्रातः छः से सात बजे के मध्य लाल वस्त्र पहिन लाल आसन पर पश्चिम मुख होकर बैठे। उसके पास **तांत्रोक्त लक्ष्मी गणपति विग्रह** हो जो अरिष्ट निवारक मंत्रों से सिद्ध किया गया हो। साधक इसे अपने सम्मुख स्थापित कर, इसका पूजन केवल रक्त चंदन एवं लाल रंग में रंगे अक्षतों से कर घी का दीपक जला ले तथा **तांत्रोक्त माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करे—

मंत्र

ॐ गं श्रीं सर्व सिद्धि प्रदाय श्रीं गं नमः

मंत्र जप के उपरांत सम्पूर्ण पूजन को ज्यों का त्यों रहने दे और ध्यान रखे कि जो दीपक लगाया है, वह अगले दिन प्रातः तक अखंड रूप से जलता रहे। अगले दिन सम्पूर्ण पूजन को समेट लें। दुर्लभ लक्ष्मी गणपति विग्रह को तो अपने पूजन स्थान, फैक्टरी अथवा दुकान में सम्मान सहित स्थापित कर दें, जबकि तांत्रोक्त माला को विसर्जित कर दें। अत्यन्त लघु से दिखने वाले इस प्रयोग में तीक्ष्ण प्रभाव व शक्ति छिपी हुई है तथा इस रूप में गृह अथवा व्यापार स्थल में गणपति का स्थापन करना एक दुर्लभ संयोग ही है।

महामाया महालक्ष्मी चैतन्य प्रयोग

उपरोक्त गणपति साधना का दूसरा चरण दीपावली की रात्रि में सम्पन्न होता है **''महामाया महालक्ष्मी चैतन्य प्रयोग''** द्वारा। यह प्रयोग भी उच्चकोटि का तांत्रिक प्रयोग है, जिसमें महालक्ष्मी का स्वरूप कमलधारिणी अथवा कमलवासिनी न मानकर पूर्ण रूप से शक्तिमय माना गया है, जो भगवती दुर्गा की ही भांति संहार करने को तत्पर हैं। भगवती महालक्ष्मी के इस स्वरूप की साधना का प्रचलन समाज में नहीं रहा है क्योंकि इतनी उच्चकोटि का प्रयोग केवल तंत्र के श्रेष्ठ ज्ञाता ही कर सकते हैं, ऐसा शास्त्रकारों का मत था। इस प्रयोग में भगवती महालक्ष्मी की उपासना या याचना न करके अधिकार भाव द्वारा अपने जीवन को ऊंचा उठाने का प्रयास किया जाता है। भले ही भाग्य में कोई सुख न लिखा हो किन्तु इस साधना के द्वारा व्यक्ति को वह भी प्राप्त होता ही है।

साधक को चाहिए कि वह दीपावली की रात्रि में ग्यारह बजे के पश्चात् साधना में अकेले ही प्रवृत्त हो। उसके पास मंत्र- सिद्ध व दीपावली हेतु चैतन्य किया गया **महामाया महालक्ष्मी यंत्र** अवश्य हो, जिसे वह लाल रंगे चावलों की ढेरी पर स्थापित कर अष्ट भुजा महामाया महालक्ष्मी के अष्ट आयुधों या अष्ट शक्तियों के रूप में **आठ तांत्रोक्त फल** भी चारों ओर स्थापित करे। इसके उपरान्त लाल रंग के धागे को लेकर उससे महामाया महालक्ष्मी यंत्र को बांध दे तथा संकल्प करे कि जिस प्रकार मैंने इस यंत्र को आबद्ध किया है, उसी प्रकार लक्ष्मी मेरी देह व गृह में सदा-सर्वदा के लिए आबद्ध होकर मनोवांछित द्रव्य, पदार्थ, सुख-भोग प्रदान करे। इसके बाद यंत्र एवं समस्त आठ तांत्रोक्त फलों का सामान्य पूजन केवल कुंकुम व अक्षत ले कर, तेल का एक बड़ा दीपक लगाकर **महामाया माला** द्वारा निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें, अन्य कोई माला सर्वदा वर्जित है। मंत्र जप के काल में महामाया महालक्ष्मी का अष्ट भुजा एवं तीव्र स्वरूप में ध्यान करते रहें।

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं

मंत्र जप के उपरान्त यदि सम्भव हो तो रात्रि शयन उसी स्थान पर करें और रात्रि में जब कोई अनुभूति हो तब न तो भयभीत हों न किसी से चर्चा करें, केवल संकेतों को समझने का प्रयास करें जिससे आगामी जीवन में पूर्णता आ सके। इस साधना के उपरान्त शेष रात्रि में साधक को कोई न कोई अनुभूति अवश्य ही होती है। दूसरे

दिन प्रातः समस्त सामग्री को लाल कपड़े में बांध किसी नदी में प्रवाहित कर दें अथवा भविष्य में अवसर मिलने पर प्रवाहित करें। जीवन में प्रयास पूर्वक जो कुछ भाग्य में न भी हो, उसे भी हठपूर्वक प्राप्त कर लेने का यह श्रेष्ठतम प्रयोग है, जिसका प्रभाव साधक को जीवन-पर्यन्त प्राप्त होता ही रहता है।

गौरा लक्ष्मी प्रयोग

कार्तिक कल्प के प्रयोगों के अन्तर्गत् यह शुक्ल पक्ष में किया जाने वाला महत्वपूर्ण प्रयोग है, जिसे इस वर्ष **४.११.६४** से **१८.११.६४** के मध्य कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है। यदि साधक इसे **कार्तिक शुक्ल पंचमी** (८.११.६४) को सम्पन्न कर सके, तो सर्वाधिक अनुकूल रहेगा। यह लक्ष्मी का विशेष चैतन्य स्वरूप है, जिसकी साधना एवं स्थापना से साधक को अपूर्व मानसिक शांति व बल प्राप्त होता ही है। धन का आगमन तो कई प्रकार से हो सकता है किन्तु धन के साथ ही साथ पूर्ण मानसिक सुख- शांति रहे, धन को लेकर खींचतान न रहे, परस्पर कटुता न पनपे, इसके लिए भी लक्ष्मी की साधना आवश्यक होती है। जैसा कि पूर्व में उल्लिखित किया– विघ्न-बाधाओं का नाश, धन का आगमन एवं धन की सुरक्षा व स्थायित्व. . . इन तीन चरणों के मिलने पर ही लक्ष्मी साधना की पूर्णता होती है, प्रस्तुत साधना यही तृतीय चरण है।

गौरा लक्ष्मी का स्वरूप अपने-आप में अत्यन्त शीतलतादायक, सौम्य व आह्लादकारी है। शुभ्र वस्त्रों के साथ कमलदल पर आसीन गौरा लक्ष्मी वास्तव में दस महाविद्याओं में से एक कमला महाविद्या की ही आह्लाद स्वरूपा है, जिनके दो हाथों में कमल पुष्प है तथा शेष दो हाथ वर व अभय मुद्रा प्रदर्शित करते हुए हैं। सुयोग्य साधक अपने जीवन में लक्ष्मी के ऐसे स्वरूप को स्थान देकर सभी कुछ प्राप्त कर सकते हैं, जिसे धन से भी नहीं प्राप्त किया जा सकता। नींद, स्वस्थ शरीर, हास्य विनोद, सुलक्षणा पत्नी – ये सभी केवल भाग्यवश अथवा इसी प्रकार की श्रेष्ठतम साधना द्वारा प्राप्त हो सकते हैं।

साधकों को चाहिए कि वे इस साधना को सम्पन्न करने से पूर्व – मंत्र- सिद्ध व प्राण-प्रतिष्ठित **गौरा लक्ष्मी यंत्र** तो प्राप्त करें ही साथ, ही **१०८ कमलगट्टे के बीज** भी प्राप्त करें। गौरा लक्ष्मी का स्वरूप कमल प्रिय होने के कारण इस साधना में कमल का महत्व सर्वाधिक है। यदि साधक को कमल के पुष्प मिल सकें तो वह उनका प्रयोग इस साधना में अवश्य करें। यंत्र का सामान्य पूजन करने के उपरान्त घी का दीपक प्रज्वलित करें एवं निम्न मंत्र के उच्चारण के साथ एक कमलगट्टे का बीज यंत्र पर चढ़ा दें, ऐसा कुल १०८ बार करना है।

मंत्र

ॐ श्रीं अखण्ड सौभाग्य धन समृद्धि देहि देहि नमः

इस प्रक्रिया के सम्पूर्ण हो जाने पर यंत्र का एक बार पुनः संक्षिप्त पूजन कर नैवेद्य, दीप आदि अर्पित कर आरती सम्पन्न करें तथा सायंकाल सभी कमलगट्टे के बीज व यंत्र को एक कपड़े में बांध अत्यंत पवित्रता के साथ विसर्जित कर दें। यदि ऐसा करने में कोई बाधा हो तो किसी अशोक वृक्ष के नीचे समस्त साधना- सामग्री को गाड़ दें। इस साधना में आसन, वस्त्र आदि पीला रहना आवश्यक है।

कार्तिक कल्प के विशाल संग्रह से चुनकर मैंने यहां मात्र तीन प्रयोग ही दिए हैं। इनमें से प्रत्येक प्रयोग अपने-आप में स्वतंत्र है, फिर भी उचित रहेगा कि साधक इन तीनों ही प्रयोगों को सम्पन्न कर लक्ष्मी साधना का एक दुर्लभ क्रम सम्पन्न करें और अपने जीवन में लक्ष्मी को स्थिर होने के लिए विवश कर सकें। यदि साधक किसी कारणवश निर्धारित दिवस पर साधना सम्पन्न नहीं कर सके तो किसी भी माह की अमावस्या को यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है। ◆

शालिग्राम उपासना और रोगनाश

शालिग्राम शिला यत्र पापदोषभयापहा।
तत्सन्निधानमरणान्मुक्तिर्जन्तोः सुनिश्चिता।।
(गरुड़ पुराण)

भगवान शालिग्राम की स्थापना जिस घर में होती है उस घर के व्यक्तियों को पाप, दोष, भय व्याप्त नहीं होता। यदि शालिग्राम को मरणासन्न व्यक्ति के सिरहाने रख दिया जाए तो निश्चित रूप से उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

यह बात शास्त्रोक्त सिद्ध है, कि प्राण वियोग (मृत्यु) के समय यदि जीव के हृदय में सद्विचारों का उदय हो, तो सद्गति की प्राप्ति होती है अन्यथा असद्गति अवश्य होती है।

इसलिए धर्म परायण हिन्दुओं में गाय के गोबर से लिप्त शुद्ध भूमि पर मरणासन्न व्यक्ति की भू-शय्या के सिरहाने **''सद्गति प्राप्त्यर्थं सुपूजित''** भगवान शालिग्राम की श्याम मूर्ति का आसन रखने की प्रथा है।

बहुत से श्रद्धालु पुरुष तो जीव के अन्तकाल में नाड़ी स्थान से हटते ही तुलसी की मञ्जरी और इस दिव्य प्रभावमयी मूर्ति को हृदय पर भी रखते हैं, फिर प्राण वियोगांतर होने पर पंचगव्य से स्नान करवा कर पूजा स्थान में रखते हैं।

इसका अति गुह्य रहस्य यह है, कि महात्मा, योगियों के अतिरिक्त प्रायः सभी संसार में आसक्त रहने वाले प्राणियों के प्राण वियोग के समय न्यूनाधिक रूप से अनेक शुभ-अशुभ विचार युक्त स्वप्न जैसी अचेत सी अवस्थाएं हुआ करती हैं, **और उस अचेत अवस्था में जो असद्गति की ओर खींचने वाले अनेक विचारों का हृदय पर साम्राज्य सा बना रहता है, उन्हें यह प्राकृतिक, मंत्र-सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त विराट साधना से युक्त, श्री लक्ष्मी-नारायण मंत्र से अभिषिक्त, सद्गुरु से प्राप्त 'शालिग्राम' अपने पूजागृह में स्थापित करना ही चाहिए।**

ऐसी प्रतिमा ईश्वरीय, अलौकिक प्रभाव से दुर्विचारों को दूर कर मरणासन्न व्यक्ति के हृदय में संकल्पों का उदय कर देती है, जो शुभ लोक की प्राप्ति कराने हेतु आवश्यक है।

यदि किसी साधक या प्राणी को इस विषय में सन्देह हो, कि अचेतावस्था में सद्विचार स्फुरण होने के क्या प्रमाण हैं? तो उन्हें चाहिए, कि वे उपरोक्त लक्षण युक्त शालिग्राम जी की प्रतिमा को शयन के समय अपने सिरहाने रखकर अनुभव कर लें, ऐसा करने पर निद्रावस्था में जो

अशुभ विचार या बुरे स्वप्न आते होंगे, तो वे कभी नहीं आयेंगे, और न स्वप्नावस्था में उत्पन्न होने वाला कोई भय ही पास फटकेगा।

इसी प्रकार मृत्युकाल (समय) में गीता, विष्णु सहस्र नाम भगवन्नाम सुनाये जाते हैं, शुद्ध धूप तथा कपूर जलाये जाते हैं, गंगाजल दिया जाता है, चन्दन अथवा भस्म लगाई जाती है।

यदि प्राण छोड़ते समय जीव का ध्यान भगवान में लगा रहे अथवा उसके मुंह से ॐ, गुरु मंत्र, राम, कृष्ण, दुर्गा, नारायण, भगवती आदि का नाम निकले, और यदि सांसारिक विषयों, यथा— सम्बन्धियों के विषय में वह कुछ न सोचे, तो उसने चाहे कितने भी बुरे कर्म क्यों न किए हों, वह सीधे सद्गति को प्राप्त करता है।

शालिग्राम की घर में स्थापना मात्र से ही अकाल मृत्यु निवारण होता है, रोगों का नाश होता है तथा घर सुख-शांति, सौभाग्य का वर्चस्व होता है। शालिग्राम आराधना प्रमेह रोग को समाप्त करने में उपयोगी है।

प्रमेह रोगनाशार्थ शालिग्राम की उपासना

भगवान शालिग्राम की उपासना से 'प्रमेह रोग' का नाश भी हो जाता है। सबसे पहले साधक उपरोक्त लक्षण युक्त, मंत्र-सिद्ध, चैतन्य **शालिग्राम** अपने गुरुदेव द्वारा प्राप्त करे। इसके अलावा निम्नलिखित सामग्रियों की आवश्यकता होती है— **गोमती चक्र,** जो कि विष्णु प्रिया मंत्र से सिद्ध हो एवं **माधव प्रिया माला** और साथ ही भगवती-नारायण का चित्र (पूज्य गुरुदेव एवं माताजी का चित्र) हो।

सबसे पहले साधक अपने सामने भगवती-नारायण का चित्र स्थापित कर संक्षिप्त पूजन करे, केसर का तिलक लगाए, दुग्ध का प्रसाद अर्पित करे और वहीं सामने गणपति-पूजन और भैरव-पूजन कर के विघ्ननाश हेतु एवं साधना की सफलता हेतु प्रार्थना करे एवं अपनी मनोकामना का संकल्प कर भूमि पर जल छोड़े।

उन शालिग्राम भगवान को प्रतिदिन पाद्य, अर्घ्य, आचमन प्रदान कर, पंचामृत से स्नान कराए, पंचामृत में शुद्ध गौ दुग्ध, दही, शुद्ध शहद, गौ घृत और शुद्ध देशी शक्कर अर्थात् गुड़ का बूरा जल में मिलाकर, स्नान करवा कर शालिग्राम को सिंहासन पर विराजित कर दे तथा स्नान कराते समय—

अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः।
औषधं जगतः सेतुः सत्य धर्म पराक्रमः।।

बार-बार बोलता जाए, भगवान को पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, चन्दन, पुष्पमाला, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, फल, आरती, पुष्पांजलि सभी वस्तुएं इसी मंत्र से अर्पण करे और स्नान कराने के पश्चात् एक तुलसी पत्र शालिग्राम की प्रतिमा के नीचे रख, उस तुलसी दल पर भगवान को विराजमान करे, फिर एक तुलसी दल ऊपर चढ़ा दे।

तदन्तर घिसे हुए मलयागिरि के शुद्ध सफेद चंदन को अवश्य चढ़ाए। चन्दन घिसते समय उसमें शुद्ध केसर और भीमसेनी कपूर अवश्य मिला ले, फिर आंवले का मुरब्बा या सिघांड़े के आटे से बने लड्डू का भोग लगाया जाए या दोनों चीजों का भोग लगाए। भोग लगाते समय साधक उपर्युक्त मंत्र बोलना न भूले। शालिग्राम के बगल में गोमती चक्र स्थापित कर केसर की बिन्दी लगाए एवं संक्षिप्त पूजन करे।

पूजा समाप्त होने के बाद **'निखिलेश्वरानन्द पादुका पंचक'** या **'कवच'** के पाठ के बाद उपर्युक्त मंत्र की माधव प्रिया माला से एक माला मंत्र-जप कर ले, फिर नैवेद्य लगे हुए प्रसाद को पाकर ऊपर से भगवान के स्नान का पंचामृत पी जाए, और दूसरे दिन जब स्नान कराए, तब पहले दिन का चढ़ाया हुआ तुलसी, चन्दन सभी स्नान के पंचामृत में आ जाना चाहिए।

इस प्रकार भगवान शालिग्राम की उपासना नित्य प्रति तीन महीने तक करने पर बीसों प्रकार के भयानक से भयानक 'प्रमेह' तथा 'स्त्रियों का प्रदर रोग' सर्वथा नष्ट हो जाते हैं। अनके लोगों ने इस प्रयोग को आजमाया है और इसमें सफलता भी प्राप्त की है।

आकस्मिक दुर्घटना से बचने का उपाय

अकाल मृत्यु हरणं सर्वव्याधि विनाशनम्।
विष्णु पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

प्रयोग विधि

विष्णु भगवान की मूर्ति (शालिग्राम शिला) का विधिवत् पूजन कर उपरोक्त मंत्र से तीन बार चरणोदक पीने से आकस्मिक दुर्घटना का भय नहीं रहता।

ध्यान लगाने का सुलभ उपाय

शालिग्राम शिला पर दृष्टि एकाग्र करने से ध्यान शीघ्र ही लग जाता है। अतः बहुत से साधक शालिग्राम की इस शक्ति, गुण का उपयोग शीघ्र ध्यानस्थ होने के लिए बहुधा किया करते हैं। शालिग्राम की शिला सिद्ध यंत्र कहलाती है, क्योंकि इसमें स्वाभाविक रूप से एक प्रकार की दैवी शक्ति निहित रहती है।

❄

● सेवानन्द
भिलाई

घण्टाकर्ण साधना

" जीवन की श्रेष्ठतम पौराणिक साधना, जो अटूट धन, ऐश्वर्य, सम्मान एवं सौभाग्य देने में समर्थ है, लगभग सभी साधनात्मक ग्रन्थों में इसका उल्लेख आया है, जब लक्ष्मी से सम्बन्धित सभी साधनाएं असफल हो जाएं, तो इसे आंजमा ही लें, और स्वयं इस कथन का अनुभव कर लें . . . "

बीसवीं शताब्दी के परम विशिष्ट साधक **योगीराज अनहदानन्द** ने घंटाकर्ण के बारे में कहा है, 'यह यंत्र आश्चर्यचकित कर देने वाला है, असाध्य से असाध्य कार्यों को साधने वाला तथा त्वरित फल देने में अग्रणी है।' **महाप्रभु विज्ञानानन्द** ने घंटाकर्ण यंत्र पर वृहद् ग्रंथ लिखा है। भूमिका में उन्होंने सारांशतः लिखा है कि— जिस दिन दुनिया घण्टाकर्ण का रहस्य समझ लेगी, उस दिन वह भूखी-नंगी नहीं रहेगी। **त्रिकालदर्शी साधक व्यासाचार्य** ने कहा, 'घण्टाकर्ण के भेदोपभेद असीम हैं, यह रक्षा कार्यों में गाण्डीववत् और धन-सम्पदा कार्यों में कुबेरवत् है।'

श्री घण्टाकर्ण महावीरः पुराण संहिता के अनुसार घण्टाकर्ण महावीर भगवान सदाशिव के ही गण प्रमुख हैं। शिव महापुराण में वर्णित कीर्तिमुख गण की कथा सुप्रसिद्ध है, भगवान शिव ने उनके पैदा होने पर क्षुधा से अतृप्त होने के कारण स्वयं का मांस खाने को कहा, उन्होंने गुरु के आदेश का पालन किया, अंततः उनका मुख मात्र ही शेष रहा। उनकी अटूट श्रद्धा, विश्वास और समर्पण से भगवान सदाशिव ने कीर्ति-स्तम्भ में सबसे ऊंचा स्थान प्रदान किया, जिसके फलस्वरूप वे आज भी सर्वप्रथम पूजन के अधिकारी बने। कीर्तिमुख स्तम्भ को दक्षिण भारतीय देव मंदिरों में देखा जा सकता है। चाहे वह तिरुपति मंदिर हो या कन्या कुमारी का मंदिर।

ऐसे ही देवों में घण्टाकर्ण भी हैं। इन्हें शिवभक्त के रूप में बतलाया गया है। इनकी शिवभक्ति इतनी प्रसिद्ध है कि वे अपने इष्टदेव के नाम-गुण सुनने के अतिरिक्त किसी अन्य देव की महिमा नहीं सुनना चाहते थे, यही नहीं भक्ति की पराकाष्ठा, शिव-शिव, हर-हर होने के लिए अन्य देव की महिमा नहीं सुनने तथा इससे बचने के लिए घण्टाकर्ण ने अपने कानों में दो घण्टे बांध लिए। जब इनके सामने कोई अन्य देवों की महिमा का गान करता तो वे अपना सिर हिलाकर घण्टे बजाने लगते, जिससे अपने इष्ट शिव के अतिरिक्त अन्य देव की महिमा के शब्द अपने कानों तक नहीं पहुंचने देते। भक्त की अनन्य भक्ति के वश में भगवान सदाशिव ने 'घण्टाकर्ण' को वरदान दिया कि जो तेरा स्मरण और पूजन करेगा उसके कार्य मैं सिद्ध कर दूंगा। माता की दया-दृष्टि जग प्रसिद्ध है— घण्टाकर्ण कल्प के प्रथम श्लोक पर दृष्टि डालें—

प्रणम्य गिरिजाकान्तं देहि सिद्धि-प्रदायकम्।
घण्टाकर्णस्य कल्पं यत् सर्वकष्ट-निवारणम्।।

घण्टाकर्ण यंत्र का स्वरूप

तेरह सीधी और बारह रेखाएं तिरछी खींच कर बराबर १३२ कोष्ठक बनाए जाते हैं, और फिर चक्रवत् घण्टाकर्ण मंत्र का प्रत्येक अक्षर एक-एक कोष्ठक में अंकित किया जाता है। इस प्रकार घण्टाकर्ण मंत्र के १३१ अक्षर उन कोष्ठकों में लिख दिए जाते हैं, और मध्य के कोष्ठक में घण्टाकर्ण बीज कल्प अंकित किया जाता है। इस प्रकार पूरे १३२ खण्ड (कोष्ठक) घण्टाकर्ण बीज कल्प युक्त घण्टाकर्ण मंत्र अंकित कर देते हैं। ये १३२ खण्ड १३२ सिद्धियों के आगार कहे जाते हैं।

घण्टाकर्ण यंत्र पूजन समय

घण्टाकर्ण यंत्र सिद्ध करने के लिए कार्तिक, मार्गशीर्ष, वैशाख तथा ज्येष्ठ मास शुभ कहे गए हैं, साथ ही शुक्ल पक्ष, पंचमी, दशमी, पूर्णिमा तिथि और चन्द्र, बुध, गुरुवार का संयोग लिया जा सके, तो श्रेष्ठ रहता है, **परम योगी 'छिन्ना स्वामी'** के मतानुसार रविवार को हस्तमूल या पुष्य नक्षत्र हो और उस दिन इसे सिद्ध किया जाए, तो ज्यादा उचित रहता है। पश्चिम के तांत्रिक **'श्राक्फ'** के अनुसार किसी भी अमावस्या की रात्रि को यह मंत्र सिद्ध करना पूर्ण सफलतादायक होता है। मेरे अनुभव के अनुसार दीपावली के ५ दिन पूर्व और ५ दिन बाद तक का समय इस कार्य के लिए सर्वोत्कृष्ट रहता है, इसके अलावा विजयादशमी, मार्गशीर्ष, शुक्ल पंचमी, अमृत सिद्धि योग, आनन्द, श्रीवत्स, छत्र इत्यादि योगों में सिद्ध किया हुआ यंत्र पूजन पूर्ण सफलतादायक रहता है।

महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि— सद्गुरुदेव जैसा निर्देश दें, उसी मार्ग पथ का अनुसरण करना चाहिए, जैसा कि कल्प के प्रथम श्लोक से विदित होता है। जहां पर सदाशिव सद्गुरु हैं और पार्वती शिष्या। कारण, स्त्री का गुरु तो उसका पति है तथा जिज्ञासु, धैर्य, विवेकी, श्रद्धा का स्वरूप स्वयं गिरिजा हैं। यही कारण है कि योग्य का चयन होने पर गुरु उनसे (शिष्य) कुछ छिपाते नहीं हैं।

यंत्र भेद

वास्तव में देखा जाए तो इस यंत्र को भली प्रकार से समझा ही नहीं गया है, यह यंत्र असीम सिद्धियों से परिपूर्ण है। कहते हैं कि कुबेर ने अपने-आप को सर्व ऐश्वर्य सम्पन्न बनाने के लिए भगवान पशुपतिनाथ से इस यंत्र का रहस्य समझा था और प्रयोग किया था। शेष विश्व को इस यंत्र की श्रेष्ठता तथा रहस्य कुबेर से ही ज्ञात हुए थे। यदि कोई साधक या योगी इस यंत्र के भेदोपभेद जानकर इसे सिद्ध कर ले, तो वह विश्व का श्रेष्ठ धनपति, यशपति और शौर्यपति हो सकता है। इस पर भी **इस यंत्र की विशेषता यह है कि यह योगी तथा गृहस्थ दोनों के लिए सेवनीय तथा उपयोगी है।**

इस यंत्र के कुल १३२ भेद हैं, १३२ यंत्र भेद हैं, १३२ ही साधना- पद्धतियां हैं, और १३२ ही सिद्धियां हैं। जो इस यंत्र के सभी भेद सिद्ध कर लेता है, वह विश्व का बिरला व्यक्ति हो जाता है। उच्छिष्ट, त्रैलोक्य, मोहन, शक्ति, सिद्धि, मृत्युञ्जय, दक्षिण, नवनिधि, घण्टाकर्ण प्रयोग के वीर साधन, शत्रुञ्ज्य आदि ६० प्रकार के भेद हैं।

यंत्र निर्माण

अलग-अलग कार्यों एवं कामना-सिद्धि के लिए अलग-अलग प्रकार से यंत्र का निर्माण होता है। भोजपत्र पर शास्त्रोक्त अंकित यंत्र से पूजन किया जा सकता है, पर उसका स्थायी प्रभाव प्राप्त नहीं होता है। अतः विशेष शुभ मुहूर्त में, विजय काल में ताम्रपत्र पर ही इसे उत्कीर्ण कर प्राण-प्रतिष्ठित किया जाना चाहिए।

साधना से पूर्व यंत्र को पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित करने हेतु पांच क्रियाएं विशेष आवश्यक हैं— १. मंत्र बीज २. मंत्र-बहिर्न्यास एवं अन्तर्न्यास, ३. मंत्र उत्कीलन, ४. मंत्र चैतन्य ५. मंत्र विनियोग।

इसके उपरान्त साधक सिद्ध मुहूर्त में यंत्र स्थापित कर केवल मंत्र-जप करे तो उसे साधना में सफलता मिलती ही है।

घण्टाकर्ण मंत्र –

।।ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रूं घण्टाकर्ण नमः।।

इस सम्बन्ध में खोज करने पर काफी विवरण मिला है। जैन ग्रंथों में भी घण्टाकर्ण से सम्बन्धित अनेक यंत्र आदि प्राप्त होते हैं। कलकत्ता लाइब्रेरी में 'घण्टाकर्ण यंत्र — गुह्यति गुह्य यंत्र' शीर्षक की हस्तलिखित प्रति है, जिसमें इसका विस्तृत विवरण है। पटना नेशनल लाइब्रेरी में 'घण्टाकर्ण कल्प' शीर्षक की हस्तलिखित ३२ पन्नों की पुस्तक है, जिसमें घण्टाकर्ण साधना विधि सही रूप में अनुभवगम्य लिखी हुई है। सेठ रघुनाथ दास जालान लाइब्रेरी में पहली प्रामाणिक हस्तलिखित पोथी है, जिसका नाम 'घण्टाकर्ण यंत्र-यंत्रसार क्रमांक १२८३१ है' इसमें विस्तार से घण्टाकर्ण यंत्र साधना, अनुष्ठान पद्धति और १३२ घण्टाकर्ण यंत्र भेद चित्र हैं, जो कि प्रामाणिक हैं, जिसमें प्रत्येक साधना विधि, बाधाओं के निराकरण और उससे सम्बन्धित फल स्पष्ट किए हुए हैं। मूल जी पुस्तकालय बम्बई में घण्टाकर्ण के १३२ भेद यंत्र ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण हैं। श्रीलंका की प्रसिद्ध काली गुफाओं तथा नेपाल के रामगोडा मन्दिर में यह यंत्र व इसके १३२ यंत्र भेद अंकित हैं।

सार्थकता तब है, जब ऐसे अज्ञात रहस्यों को जीवन में साधना के माध्यम से अनुभव किया जाए, और भारत की प्राचीन विद्याओं की थाती को अपने अन्दर जीवन्त-चैतन्य किया जाए। प्रसिद्ध रुद्राभिषेक के मंत्रों का विशेष अज्ञात गोपनीय अर्थ नित्य नवीनता को खोजना है, सृजनता ही शिव है और आनन्द की अनुभूति, लीला सहचरी आद्यशक्ति मां पार्वती।

◆

वे गोपनीय प्रयोग जो मुझे

सद्गुरु का कार्यक्षेत्र यदि ज्ञान चक्षुओं से देखने का प्रयास करें, तो बहुत विस्तृत होता है। एक ओर उनके लौकिक कर्त्तव्य भी आरोपित होते हैं, जो कि उनकी चेतना का, उनके जीवन का मूल अंग नहीं होता, दूसरी ओर जो उनकी चेतना का, उनके जीवन का मूल अंग है इस समाज को ज्ञान देना। समाज को कैसे ज्ञान दें? कैसे चिन्तन के नए-नए पक्ष दें? — यही चिन्तन युक्त जीवन सद्गुरु का वास्तविक जीवन होता है, जिसके लिए यदि कहा जाए, तो बहुत ही कम समय वे निकाल पाते हैं।

पूज्यपाद गुरुदेव **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** के साथ भी यही विडम्बना है। जो उनके हृदय की आन्तरिकता है, जो उनकी तड़फ है, जो उनका आग्रह है, वह यह है, कि— ''मैं जीवंत समाज को उन ग्रंथों को दूं, जो लुप्त हो गए हैं, जिनको अव्यवहारिक मान लिया गया है, जिनको काल्पनिक मान लिया गया है, उन्हें पुनर्प्रकाशित करूं। जो उपनिषद् समाज में अप्रचलित हो गए हैं, उनको सामने लाऊं, वेदों की नई व्याख्या करूं''. . . इसी प्रकार के अनेक-अनेक विचार।

विचार तो पूज्यपाद गुरुदेव का यह भी है, कि वे एक **'निखिल भाष्य'** प्रस्तुत करें, जो कि भगवत्पाद आद्यशंकराचार्य के पश्चात् 'ब्रह्मसूत्र' की सर्वथा एक नवीन व्याख्या होगी, किन्तु वे जिस प्रकार से शिष्यों की भौतिक समस्याओं में, उनकी पीड़ाओं में, उनकी साधनाओं में व्यस्त रहते हैं, उसके पश्चात् उन्हें बहुत कम समय मिल पाता है, क्योंकि जब वे लौकिक जीवन में हैं, तो वे लौकिक मर्यादाओं का भी पालन कर रहे हैं। इसके उपरान्त जब वे दैनिक जीवन के कार्यों से मुक्त हो जाते हैं, तो रात्रि में बैठकर अपने चिन्तनों को किसी न किसी रूप में कागजों के माध्यम से व्यक्त करते ही रहते हैं।

मेरा सौभाग्य रहा कि, मैं पूज्यपाद गुरुदेव के पास तो रहा ही, उनका शिष्यत्व तो प्राप्त किया ही, साथ ही उनका सेवकत्व भी प्राप्त किया, और उनके गृह में उनके समीप रहने का अवसर भी प्राप्त किया।

यह बहुत बड़ा सौभाग्य होता है कि, हम गुरु के पास रहें, उनकी पद सेवा में, उनकी व्यक्तिगत सेवा में— इससे बड़ी तो कोई साधना हो ही नहीं सकती, इससे बड़ा तो जीवन का कोई चिन्तन हो ही नहीं सकता, उनके सामने तो कोई ज्ञान ही नहीं है, कोई चेतना ही नहीं है, और उन्होंने मुझको ऐसा ही सौभाग्य दिया।

मेरे जीवन के वे स्वर्णिम दिन थे, जब मैं उनके पास सेवक के रूप में रहा। सेवक तो एक पद था, वास्तव में तो वे मुझे एक पुत्र के रूप में ही रखते थे। उनका स्नेह, पूज्यनीया माताजी का स्नेह, सम्पूर्ण परिवार की आत्मीयता सब कुछ मेरी स्मृति में आज भी ज्यों कि त्यों है, और ऐसे अनेक अवसर मुझे मिले, जब मैं उनके परिवार के अन्तरंग क्षणों में साक्षी बना।

समय बीतता गया और धीरे-धीरे मुझको यह अवसर मिलने लगा, कि मैं पूज्यपाद गुरुदेव के पुस्तकालय में भी यदा-कदा प्रवेश करने लगा, कभी सफाई करने के बहाने से, कभी पन्नों को व्यवस्थित करने के माध्यम से, और ऐसे अवसर पर जब कि पूज्यपाद गुरुदेव रात्रि में कार्य करते-करते, विश्राम करते हुए कुर्सी पर ही सो जाते थे, मैं पूज्यनीया माता जी के आदेश से उनको जाकर जगाता था।

और शनैः-शनैः मेरी धृष्टता कहिए या पूज्यपाद गुरुदेव की ढील कहिए अथवा जो भी उसको नाम दिया जाए, ऐसा होने लगा कि, मैं उनके लेखन को, उनके चिन्तन को यदा-कदा देखने लगा और पढ़ने भी लगा।

"सर्वथा दुर्लभ, गोपनीय और नितांत व्यक्तिगत वे प्रयोग जो पूज्यपाद गुरुदेव के शोध के विषय रहे हैं, जो उनके ग्रंथ का एक हिस्सा हैं, जो उनके द्वारा प्रकाशित ग्रंथ का एक भाग हैं, उसका चुना हुआ एक अंश।

दीपावली के अवसर पर समस्त पाठकों की सुविधा के लिए प्रथम बार प्रकाशित. . ."

पूज्यपाद गुरुदेव की डायरी से प्राप्त हुए

मुझे कौतुक होता था कि, ये व्यक्तित्व, जो पूरे दिन भर उलझा रहता है विविध कार्यों में, विविध समस्याओं में, विविध द्वंद्वों में, वह रात में कैसे अपने-आप को एकाग्रचित्त कर पाता है? किस प्रकार से साधनाओं की भावभूमि ढूंढ पाता है, **क्योंकि साधनाओं के विषय में लिखना कोई उपन्यास लिखना नहीं है, कोई कथा या कहानी लिखना नहीं है। लक्ष्मी का चिन्तन करना है, तो लक्ष्मीमय होना पड़ता है। काली का चिन्तन करना है, तो उसके लिए कालीमय होना पड़ता है। शिव का चिन्तन करना है, तो शिवमय होना पड़ता है, यह कोई सरल कार्य नहीं है।**

अलौकिक रूप में उनकी क्या क्षमता है, यह जानने की मुझमें सामर्थ्य नहीं है, किन्तु लौकिक रूप में जो कुछ भी देखता था, उससे एक प्रकार से लज्जा आती थी. . . एक जीवन यह है, एक कार्य शैली यह है, एक व्यक्तित्व यह है. . . और एक हम लोगों की कार्य शैली है।

एक यह व्यक्तित्व है, जो क्षणों को पकड़ रहा है और एक हम हैं, जो क्षणों को खो रहे हैं। और इसी ऊहापोह में, कौतुकवश जब मैंने उनके रचे साहित्य के कुछ अंश पढ़े, तो मैं हतप्रभ रह गया— कितनी विशाल योजना है उनके मस्तिष्क में, कितना विशाल चिन्तन है, वे समाज को क्या देना चाहते हैं। वे समाज को किस स्वरूप में ढालना चाहते हैं।

ऐसे ही एक अवसर की बात है, कि पूज्यपाद गुरुदेव से मुझे आज्ञा मिली, कि मैं उनकी समस्त किताबों को बाहर निकालकर झाडू लगाऊं, उनकी सफाई करूं और उन्हें देखूं कि, उनको कहीं कोई क्षति तो नहीं पहुंच रही है और उन्हें पुनः स्थापित कर दूं।

इसी क्रम में मुझको अचानक एक पुरानी डायरी मिली, जो कि अपने-आप में काफी जर्जर हो चुकी थी और मैंने उसको अलग रख दिया। मैंने सोचा, कि कहीं इसके माध्यम से दूसरी पुस्तकें भी न खराब हो जाए, यह सोचकर मैंने उस डायरी को अलग रख लिया।

जब समस्त पुस्तकालय की सफाई कर चुका, तो यों ही कौतुकवश मैंने उस डायरी को भी उठाकर देखा, तो अपने-आप में आश्चर्य से भर उठा, मेरे सामने एक और पृष्ठ उस व्यक्तित्व का खुला। पता नहीं कितने वर्ष पूर्व उन्होंने कोई ग्रंथ लिखना प्रारम्भ किया था, वह तो साक्षात् उसी का एक अंश था और उसका शीर्षक था— **"लक्ष्मी के १०८ स्वरूप– विवरण एवं साधना"**

यह डायरी जिस पर सन् ५२ की तिथि अंकित थी, अपने-आप में प्राचीन हो चुकी थी, पन्ने पीले पड़ चुके थे। अब उसमें लक्ष्मी के १०८ स्वरूपों में से पाया, पचास स्वरूपों का वर्णन सविधि,ससाधना, जो पूज्यपाद गुरुदेव ने लिखा था।

मेरी यह सामर्थ्य तो नहीं थी कि, मैं पूज्यपाद गुरुदेव से इसके विषय में कुछ पूछूं, किन्तु यह अनुमान अवश्य लगा सका कि, आज से कई वर्षों पूर्व पूज्यपाद गुरुदेव ने ऐसा चिन्तन किया होगा कि, हम लक्ष्मी के जिन १०८ स्वरूपों की बात करते हैं, उनको सप्रमाण साधकों के सामने रखें, और एक-एक स्वरूप को सामने रखें, एक-एक स्वरूप का अर्थ सामने रखें।

लक्ष्मी के १०८ स्वरूप की बात केवल एक काव्यात्मक बात नहीं, केवल स्तोत्रों में कहने वाली बात ही नहीं वरन् सत्य हो और लक्ष्मी के १०८ स्वरूपों को प्राप्त कर साधना के माध्यम से उन्हें अपने जीवन में उतारकर व्यक्ति अपने जीवन को सम्पन्न, सुखी और समृद्धशाली बना सके– इसका अनुमान उसके एक-एक पन्ने से झलक रहा था।

कैसा अद्भुत रहा होगा वह क्षण, कैसे अद्भुत रहे होंगे वे पल, जब उन्होंने भगवती लक्ष्मी के एक-एक स्वरूप को साकार किया होगा, अपनी प्रज्ञा से देखा होगा, अपने ज्ञान से, अपनी तपोमयता से देखा होगा, और उनको देखा ही नहीं होगा बल्कि उनको बद्ध करने की क्रिया भी ढूंढ निकाली होगी। ऐसा तो बिरले ही करते हैं, क्योंकि यह सामान्य क्रिया नहीं होती, यह महायोगियों की क्रिया होती है, जो किसी भी देवता या देवी को बांध लेते हैं।

मंत्र वेत्ता तो बहुत से होते हैं, किन्तु मंत्र सृष्टा तो बहुत कम होते हैं, जो साक्षात् ईश्वर का ही स्वरूप होते हैं, और उनका वही स्वरूप मेरी आंखों के सामने इन पन्नों के माध्यम से नाच रहा था।

वह डायरी बहुत संभाल कर मैंने अपने पास रख ली। वह तो एक ऐतिहासिक दस्तावेज है, और इसमें लिखे

अक्षरों को सुरक्षित रूप से अलग उतार लिया, जिससे कि यह ज्ञान लुप्त न हो जाए।

और जब वह कार्य कर लिया, तब बहुत डरते-डरते पूज्यनीया माता जी के माध्यम से यह निवेदन किया, कि पूज्यपाद गुरुदेव मैंने आपकी आज्ञा के बिना यह धृष्टता की है, किन्तु इसके पीछे मेरा अन्य कोई चिन्तन, अन्य कोई स्वार्थ न होकर मात्र इतना ही है, कि आप जिस ज्ञान की परम्परा को इस धरा पर जीवित करने आये हैं, वह लुप्त न हो, उसका एक संग्रहण करूं।

शिष्य का इतना ही तो कर्त्तव्य होता है, कि वह गुरु के ज्ञान को संग्रहित करता है, गुरु के ज्ञान का जो अमृत होता है, उसको वह पी लेता है और अपने सहस्रार में समा लेता है, उसके अलावा तो उसका कोई धर्म ही नहीं होता है, और मैंने भी उसी धर्म का पालन किया है।

उस समय तो पूज्यपाद गुरुदेव मौन रहे, किन्तु आज इतने वर्ष बीत जाने के बाद मैंने इस दीपावली के अवसर पर उनसे पुनः पूज्यनीया माता जी के माध्यम से निवेदन किया, कि यदि आपकी आज्ञा हो, तो उस अप्रकाशित और अपूर्ण ग्रंथ का कुछ अंश समाज के सामने प्रस्तुत करूं? कुछ ऐसे प्रयोग समाने लाऊं, जिससे समाज भी लाभान्वित हो सके।

यह मेरा सौभाग्य है या आप सभी पाठकों का सौभाग्य है, कि पूज्यपाद गुरुदेव की ऐसी अनुमति मुझे मिल गई। यद्यपि उन्होंने सभी प्रयोगों को प्रकाशित करने की अनुमति नहीं दी है, किन्तु उसमें से चुने हुए पांच प्रयोग इस विशेषांक में प्रस्तुत करते हुए मैं अपने-आप को बहुत गर्वित अनुभव कर रहा हूं। गर्वित इस रूप में, कि मैं माध्यम बना इस ज्ञान को आप तक पहुंचाने का।

भगवती लक्ष्मी के जो १०८ स्वरूप हैं, उनका विवरण पत्रिका में प्रकाशित हुआ है, उनके अलग-अलग नामों से, पर नाम तो विशेषण होते हैं, संज्ञा होती है। इस बात के सूचक होते हैं, कि इसमें उनका कौन-सा गुण छिपा है? कौन-सा वरदायक रूप छिपा है, उनमें से— **लक्ष्मी, माहेश्वरी, कुमारी, ब्रह्माणी** एवं **महामाया** से सम्बन्धित पांच प्रयोग मैं यहां प्रस्तुत कर रहा हूं—
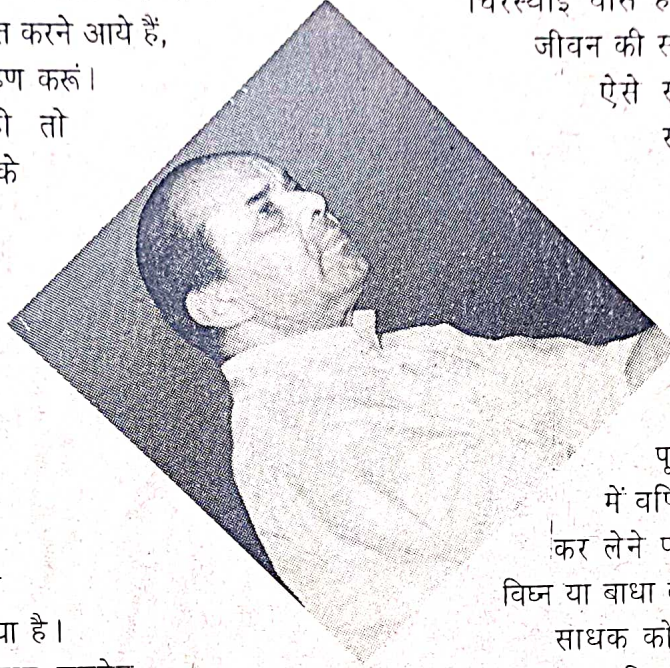
१. लक्ष्मी

भगवती महालक्ष्मी का यह सर्वाधिक प्रचलित व स्पष्ट स्वरूप है, जिसकी उपासना प्रत्येक भारतीय अपने ढंग से करता ही है, किन्तु जहां तक लक्ष्मी से सम्बन्धित साधना की बात है, वहां युगों-युगों से उनका आधार 'श्री यंत्र' बनाया गया है, जिसके द्वारा साधक के घर में लक्ष्मी का चिरस्थाई वास हो सके। लक्ष्मी अपने-आप में जीवन की सम्पूर्णता की परिचायक है और ऐसे सभी कुछ को अपने-आप में समाहित करती है, जिसको हम व्यक्त रूप से अथवा अव्यक्त रूप से अपने जीवन में प्राप्त करना चाहते हैं।

इसी श्री यंत्र पर एक छोटी सी साधना पूज्यपाद गुरुदेव ने अपनी डायरी में वर्णित की है, जिसे प्रतिदिन सम्पन्न कर लेने पर साधक को किसी भी प्रकार के विघ्न या बाधा का सामना नहीं करना पड़ता।

साधक को चाहिए, कि वह **श्री यंत्र** को लाल आसन पर स्थापित करे और **श्री वृद्धि कारक माल्य** से निम्न मंत्र की पांच माला प्रतिदिन जप करे।

मंत्र -

।।श्रीं।।

२. माहेश्वरी

पुराणों के अनुसार लक्ष्मी की साधना का दूसरा सूत्र शिव साधना से जुड़ा हुआ है। भगवान शिव को भेंट किए जाने वाले बेल के पेड़ का दूसरा नाम 'श्री वृक्ष' इसी बात को सूचित करता है, और यह भी एक सत्यता है, कि यदि **एक नर्मदेश्वर शिवलिंग** को अपने पूजा स्थान में स्थापित करें, किसी भी सोमवार को अथवा यदि सम्भव हो, तो दीपावली की रात्रि को **१०८ चावल के दाने** निम्न मंत्र के साथ उस पर चढ़ायें, तो उससे शिव साधना व लक्ष्मी साधना का संयुक्त फल प्राप्त होता है।

मंत्र -

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं नमः

जहां शिव साधना होती है और लक्ष्मी साधना होती है, वहां एक विचित्र सा संयुक्त प्रवाह प्राप्त होता है। भगवान शिव की महत्ता से तथा भगवान शिव की शिवमयता से एक विभिन्न प्रकार

की विघ्नविनाशक शक्ति प्राप्त होती है और साथ ही लक्ष्मी की पूर्ण वरदायक शक्ति भी प्राप्त होती है, जिससे कि साधक को जीवन में चैतन्यता प्राप्त होती है।

३. कुमारी

कुमारी पूजा का भारतीय साधना पद्धति में एक अति विशिष्ट स्थान है, और तांत्रिक पूजन तो कुमारी पूजा के बिना सम्भव होते ही नहीं, यही कारण है, कि अनेक अनुष्ठानों की समाप्ति पर आठ वर्षीया कुमारी को भोजन कराने व उसका सम्मान करने का निर्देश रहता है। कुमारी पूजन अपने-आप में भारतीय साधना की पृथक, स्वतंत्र व सम्पूर्ण विधा है।

साधक किसी भी सोमवार की रात्रि में लक्ष्मी के सुन्दर स्वरूप का पूजन कर लेते हैं, तो उन्हें आगामी एक वर्ष तक प्रत्येक तांत्रोक्त साधना में अनायास सफलता मिलती ही चली जाती है।

साधकों को चाहिए, कि वे **एक गौरी गुटिका** स्थापित कर **गौरी माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें—

मंत्र -

ॐ श्रीं कौमार्यै नमः

मंत्र-जप के उपरान्त गुटिका को संभाल कर रख लें तथा माला को विसर्जित कर दें। यह जीवन में तीव्रता का और सुखमयता का विशेष फलीभूत सिद्ध प्रयोग है।

४. ब्रह्माणी

भगवती महालक्ष्मी अपने मूल स्वरूप में भगवती जगदम्बा ही हैं, और कुछ उच्चकोटि के साधक दीपावली की रात्रि को अथवा किसी भी अमावस्या की रात्रि को महालक्ष्मी का पूजन ब्रह्माणी स्वरूप में करते हैं, जिससे कि वह मातृ स्वरूप में अपने साधक को हित प्रदान करें।

साधकों को चाहिए, कि उस स्वरूप में साधना हेतु **एक ताम्र पत्र पर अंकित लक्ष्मी जगदम्बा यंत्र** प्राप्त कर, उसे पीले वस्त्र पर स्थापित कर, शुद्ध घी का दीपक लगा कर **द्वि शक्ति रूपा माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें—

मंत्र -

ॐ ब्रह्माण्यै फट्

५. महामाया

लक्ष्मी का स्वरूप वास्तव में ही हम साधकों के लिए अत्यधिक उपयोगी है। जिनकी आय का स्रोत व्यापार हो, उनके लिए व्यापार को विस्तृत करके अपनी साख को दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि देने हेतु तथा सभी प्रकार से मान-सम्मान एवं पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि हेतु एक ही साधना का विधान है।

यह मूलतः तांत्रोक्त साधना है और इसको इसी चिन्तन के साथ और इसी तीव्रता के साथ सम्पन्न करना चाहिए। साधक को चाहिए, कि वह अपने समक्ष **तांत्रोक्त फल** लाल वस्त्र पर स्थापित कर, उसका पूजन सिंदूर से करे, एक तेल का दीपक लगाए तथा **तांत्रोक्त माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करे। मंत्र-जप के पश्चात् समस्त सामग्री विसर्जित कर दे।

मंत्र -

ॐ ऐं श्रीं महामाये श्रीं ऐं

यद्यपि पूज्यपाद गुरुदेव ने इसके आगे महाविद्या स्वरूप, महायोगा स्वरूप, ऋणहर्ता स्वरूप, सिद्धिदात्रि स्वरूप, जया स्वरूप, विजया स्वरूप, आनन्दा स्वरूप एवं अन्य स्वरूपों का भी वर्णन किया है, किन्तु उनके चिन्तन का सम्मान कर, उनकी आज्ञा का पालन कर मैं उन्हें अभी प्रकाशित करने में असमर्थ हूं।

मेरी तो यही कामना है, कि वे अपने लौकिक दायित्व से मुक्त हों, उनके शिष्य उनके समस्त कार्यभार को इस प्रकार से सम्भाल लें, कि वे सर्वथा मुक्त और आनन्द युक्त हो कर इस ग्रंथ को पूर्ण कर सकें और हमारे-आपके समक्ष एक अप्रकाशित ग्रंथ प्रकाशित हो सके, जो एक अमूल्य थाती होगी हमारे लिए भी और आने वाले युग के लिए भी।

क्योंकि यह सत्य है, कि लक्ष्मी के इन स्वरूपों का चिन्तन, इतनी सम्पूर्णता का वर्णन आने वाले युग में कोई अन्य व्यक्तित्व कर ही नहीं पायेगा, क्योंकि इसको व्यक्त करने के लिए जिस प्राण-ऊर्जा की, जिस तपोमयता की आवश्यकता होती है, उसका सर्वथा अभाव दिखता है। कदाचित इसका विवरण फिर भी कोई कर सकता है, किन्तु **इससे सम्बन्धित साधना विधि और साधना विधि से भी उच्च इनके मंत्रों का वर्णन तो कोई-कोई ही कर सकता है। इसका मूल रहस्य तो मंत्र है, और मंत्र ही तो वह आबद्धीकरण शक्ति होती है, जिससे देवी-देवता वास्तव में आबद्ध होते हैं।**

आप इन गोपनीय व महत्वपूर्ण प्रयोगों को सम्पन्न कर उसमें सफलता प्राप्त कर सको, इनका लाभ उठा सको, इसी कामना के साथ ही मैं यह लेख यहीं समाप्त करता हूं।

❋

लक्ष्मी अपने-आप में जीवन की सम्पूर्णता की परिचायक है और ऐसे सभी कुछ को अपने-आप में समाहित करती है, जिसको हम व्यक्त रूप से अथवा अव्यक्त रूप से अपने जीवन में प्राप्त करना चाहते हैं।

पिछले ५० वर्षों में पहली बार

अमृत-महोत्सव

(सिद्धाश्रम सिद्धि दिवस)

१५ से १८ नवम्बर १९९४

स्थल : दशहरा मैदान (टी.टी.नगर) भोपाल (म.प्र.)

- अमृत महोत्सव का तात्पर्य जीवन की समस्याओं, बाधाओं, परेशानियों को दूर करने का सर्वोत्तम अवसर।
- अमृत महोत्सव का तात्पर्य पहली बार जीवन के मानसिक तनावों से मुक्ति पाने का स्वर्णिम अवसर।
- अमृत महोत्सव का तात्पर्य जीवन में अपने लक्ष्य की प्राप्ति का शीघ्रातिशीघ्र सफल उपाय।
- अमृत महोत्सव का तात्पर्य अकेले ही नहीं, पूरे परिवार को उस पुण्य का भागीदार बनाना, जिससे परिवार का सभी दृष्टियों से पूर्ण विकास हो।
- अमृत महोत्सव का तात्पर्य, अपने बिखरे हुए तनावग्रस्त परिवार में पूर्ण सुख - सौभाग्य, सम्पन्नता एवं श्रेष्ठता का अवसर।
- अमृत महोत्सव का तात्पर्य वह सब कुछ प्राप्त कर लेने की क्रिया, जो अब तक प्रयास करके भी प्राप्त नहीं कर सके हैं।

आप अकेले नहीं

पूरे परिवार के साथ भाग लें

जीवन का जाज्वल्यमान स्वर्णिम अवसर

अमृत महोत्सव

एक अद्वितीय अविस्मरणीय अवसर

भोपाल में

१५ से १८ नवम्बर १९९४

इस ''सिद्धाश्रम सिद्धि दिवस'' पर सम्पूर्ण भारत-वर्ष से प्रत्येक शिष्य को सपरिवार आना ही है, यह मेरी आज्ञा ही समझें।

– डॉ० श्रीमाली

- ✯ जीवन में उन्नति एवं सफलतादायक प्रवचन
- ✯ अद्वितीय एवं दुर्लभ साधनाएं
- ✯ ***विश्व शांति एवं मनोकामना पूर्ति यज्ञ में भाग लेने का अद्वितीय अवसर***
- ✯ व्यक्तिगत रूप से मिलकर समस्याओं का समाधान
- ✯ देव पुरुष गुरुदेव का सान्निध्य, सत्संग एवं कुण्डलिनी जागरण आदि विविध दीक्षाओं को प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर

इस अवसर को चूकना
पूरे जीवन को चूकना है
सम्पूर्ण भारत के शिष्यों को
पूज्यपाद गुरुदेव का आह्वान
सम्पूर्ण भारत - वर्ष के शिष्यों को सपरिवार आकर दिखा देना है कि हम एकजुट होकर पूर्णता के साथ सपरिवार उनके साथ हैं

१५ से १८ नवम्बर १९९४ को

सम्पूर्ण भारत - वर्ष के शिष्यों को सपरिवार

और विशेषकर

मध्य प्रदेश के साधक - साधिकाओं को

भोपाल (म.प्र.) में

सपरिवार अमृत महोत्सव के स्वर्णिम अवसर पर उपस्थित होकर स्वागत करना है

पूज्य गुरुदेव

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी का

इस अमृत महोत्सव में

- विशाल एवं भव्य शामियाना, जगमगाहट भरा मंच एवं अद्वितीय साज-सज्जा।
- साधकों, शिष्यों - शिष्याओं एवं साधिकाओं के ठहरने की उत्तम व्यवस्था।
- *१००० कन्याओं द्वारा मंगल कलश स्वागत।*
- प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री दिग्विजय सिंह जी द्वारा शिविर शुभारम्भ, साथ ही उच्च स्तरीय नेताओं द्वारा पूज्य गुरुदेव का अभिनन्दन।
- अद्वितीय संगीत गायकों द्वारा सुमधुर भजन गायन, राग - रंग, नृत्य, उल्लास, उमंग एवं प्रसन्नता का प्रवाह।
- *एक लाख दीपोत्सव समापन समारोह के अवसर पर।*
- *पूज्य गुरुदेव द्वारा दुर्लभ दीक्षाएं प्राप्त करने का अद्वितीय अवसर।*
- हिमालय स्थित उच्च स्तरीय संन्यासियों के ठहरने के लिए अलग से विशेष व्यवस्था, जिनके दर्शन ही अपने - आप में वरदान स्वरूप हैं।

जीवन सिद्धि पूर्णता शिविर

सपरिवार भाग लेकर जीवन को पूर्णता देने का अद्वितीय अवसर

शिविर शुल्क मात्र ६००/- भोजन एवं आवास व्यवस्था निःशुल्क

विनीत : श्री अरविन्द सिंह

डॉ० साधना, शॉप नं० २५, छटा बस स्टॉप, सुभाष मार्केट, शिवाजी नगर, भोपाल, फोन : ०७५५-५५४६२५

एवं

सम्पूर्ण मध्य प्रदेश सिद्धाश्रम साधक परिवार

● डॉ० मोहनानन्द मिश्र
''प्रधानाचार्य ''
देवघर, बिहार।

वैद्यनाथ धाम
शाक्त साधना की पृष्ठभूमि में
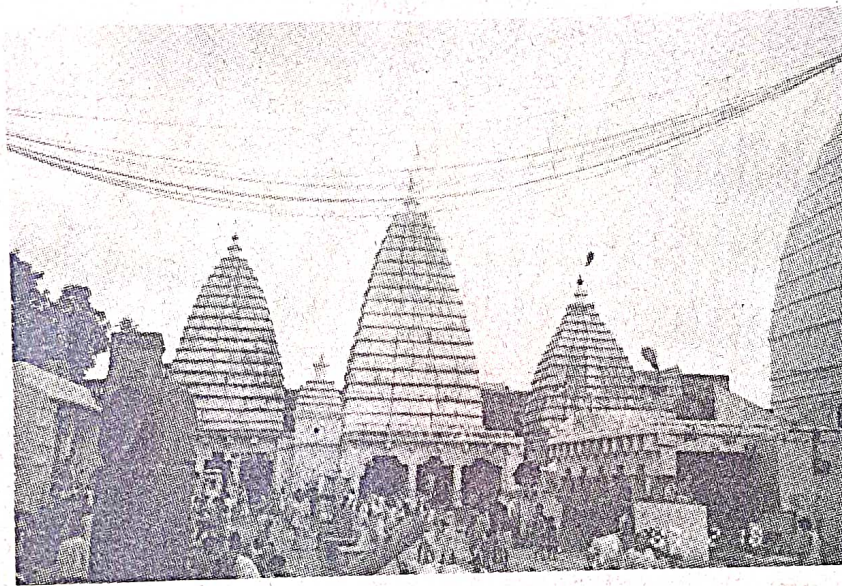
देवघर शैव-पीठ ही नहीं, शक्ति-पीठ भी है। शक्ति-पीठों में मातृशक्ति की उपासना की परम्परा होती है। मातृशक्ति की उपासना का उत्स मोहनजोदड़ो में भी प्राप्त होता है। वहां से प्राप्त मूर्तियों से शिव, मुरुगा और अम्मा को ऐतिहासिक मान्यता है। सुमेरियन संस्कृति की एन, इनलिल और अमा से इसकी समीपता है।

भारतीय इतिहासकार 'शक्ति तत्व' के वर्णन को पूर्ण वैदिक मानते हैं। ऋग्वेद के 'वागांभृणी सूक्ति' में जिस शक्ति तत्व का संकेत है, शाक्त

> **"देवघर शाक्त-पीठों की गणना में एक है। 'मत्स्य पुराण' में इसे अरोग-पीठ कहा गया है, और वैद्यनाथ को प्रधान देवता के रूप में स्वीकार किया गया है।"**

तंत्र उसी की विस्तृत व्याख्या है। शाक्त मत की प्रेरणा भूमि के रूप में अथर्ववेद के सौभाग्य- कांड को भी स्वीकार किया जाता है।

चीनी यात्री 'ह्वेनसांग' ने सातवीं शताब्दी में भारत की यात्रा की थी, उसने पेशावर के निकट एक मातृदेवी की स्वम्भू मूर्ति को देखा था। 'बार्थ' ने हर्ष को चण्डी पूजक बताया है।

शाक्त धर्म में मुख्य रूप से जीवात्मा और परमात्मा की अभेद सिद्धि की व्याख्या है। इसे अद्वैत भाव का साधन मार्ग माना जाता है। देवघर

की शाक्त साधना में पशु भाव, वीर भाव और दिव्य भाव का मिश्रण पाया जाता है।

मिश्रण का व्यवहारिक पक्ष यह है, कि यहां वेदाचार, शैवाचार, दक्षिणाचार, वामाचार, सिद्धान्ताचार और कौलाचार के अभिचारों का आंशिक परिदर्शन होता है। यहां चौबीस मातृकाओं की पूजा होती है। न्यास तंत्र की प्रधानता से भी इसकी पुष्टि होती है, जिसे सृष्टि - स्थित 'संहार न्यास' और 'मातृका न्यास' के रूप में ज्ञापित किया जा सकता है।

शाक्त साधना में शक्ति-पीठों का स्थान सर्वोपरि है। पूर्वोत्तर भारत में शाक्त मत का सर्वाधिक विस्तार हुआ, जैसा कि भारत के अन्य भागों में नहीं हुआ।

सातवीं सदी से पहले शाक्त पूजा के तीन प्रधान केन्द्र थे— कश्मीर, कांची और कामाख्या। उपर्युक्त केन्द्रों में कश्मीर और कांची 'श्री विद्या' का केन्द्र हैं और कामाख्या 'कौलमत' का प्रधान पीठ है। 'मत्स्येन्द्रनाथ' कौलमत के आदि प्रवर्त्तक थे। इनका जन्म भी कामाख्या के निकट चन्द्रगिरि में हुआ था। परवर्ती समय में कौलाचार दूषित हो गया। मध्य युग में मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य 'गोरखनाथ' ने कौलमत को परिष्कृत किया।

देवघर शाक्त-पीठों की गणना में एक है। 'मत्स्य पुराण' में इसे अरोग-पीठ कहा गया है, और वैद्यनाथ को प्रधान देवता के रूप में स्वीकार किया गया है।

इसे ६१ वें पीठ के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। 'कुब्जिका तंत्र' में इसे ४२ वें पीठ के रूप में गिना

बंगाल में भी शाक्त साधना के साथ वैष्णव, शैव, सौर, गणपत्य और शाक्त पूजा की मिश्रित तांत्रिक प्रणाली प्रचलित है। देवघर की शाक्त साधना भी इससे भिन्न नहीं है।

गया है। डी. सी. सरकार ने इस पीठ के अंग-प्रत्यंग को 'अर्द्ध' कहा है, और यहां की अधिष्ठात्री देवी को 'जयदुर्गा' कहा गया है। देवी भागवत में यहां के प्रतिपालक के रूप में वैद्यनाथ को भैरव स्वरूप वर्णित किया गया है और पीठाधिष्ठात्री देवी के रूप में बगला देवी का उल्लेख है।

शक्ति-पीठों के प्रकरण में इसे परिवर्तित नाम से क्यों विभूषित किया गया है, इसका उत्तर तांत्रिक मतवाद का निजी मतान्तर है। पुराणांक का विकास ७वीं सदी तक अत्यधिक रहा, साथ ही इन्हें शाक्त साधना के भयावह सामाजिक स्वरूप का भी भय था। तंत्र और पुराणों के पीठ विमर्श असम्पृक्त हैं।

''ब्रह्माण्ड पुराण'' लिखता है, कि अगस्त्य ने हयग्रीव से शक्ति-पूजा के रहस्य को जाना। वशिष्ठ ने तारा की आराधना की थी। वैद्यनाथ मंदिर में स्थित सन्ध्या के विग्रह को वशिष्ठ की साधना से जोड़ा जाता है, उसके समीप नीलचक्र उसी ऐतिहासिकता का संकेत है।

शक्ति-पीठों में संख्या का विमर्श भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है। आदिपीठ तीन ही हैं, किन्तु मत्स्य पुराण १०८ पीठों को गिनाता है। कुब्जिका तंत्र ४२ पीठों को बतलाता है। ज्ञानार्णव तंत्र में पीठों की संख्या कम है। देवी भागवत सभी पीठों का वर्णन करता है।

शाक्त साधना के क्षेत्र में देवघर को हृदय-पीठ कहा जाता है। प्रधान तीन पीठ प्राचीन शाक्तोपासना के तीन संस्थान थे। इन्हीं संस्थानों से पशु भाव ,वीर भाव और दिव्य भाव के विचारों का अभिचार प्रारम्भ हुआ। सात आचारों में कौलाचार, शैवाचार, वामाचार और दक्षिणाचार यहां विशेष व्यवहार में लाए गए।
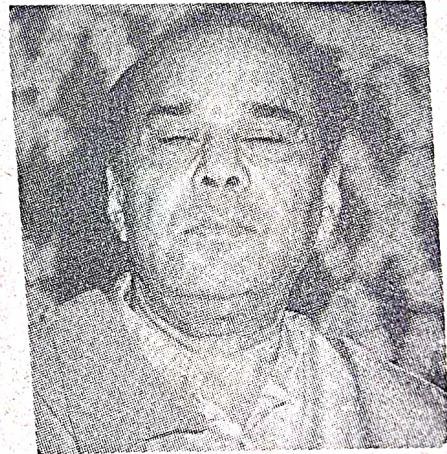
देवघर में कौलाचार के प्रचार

के पीछे नाथों और कापालिकों का हाथ है। इस आचार के विस्तार के पीछे भी बौद्ध धर्म की सामाजिक पृष्ठभूमि है। गुप्तों के पतन के बाद बंगाल में गौड़ और बंग समतट दो राज्यों की स्थापना हुई। उत्तरवर्ती बंगाल के शासकों में जयनाग,समाचार देव और शशांक का उल्लेख है, इसमें जयनाग और समाचार देव के सिक्कों पर लक्ष्मी देवी की आकृति मिली है। पूर्वी बंगाल में प्राप्त सिक्कों पर भी अष्टभुजा देवी की आकृति है, ये सिक्के सुधन्यादित्य और पृथुवीर्य के हैं।

शशांक की मृत्यु के बाद सुधन्यादित्य बंगाल का शासक बना था, उसने शशांक के सिक्कों पर शिव को हटाकर शक्ति को चित्रित किया। लगता है देवघर में भी शाक्त साधना का प्रचार उसी समय से हुआ, क्योंकि उसके पूर्व यह पूर्णतः शैव-पीठ था। इस समय से ही बंगाल और बिहार के प्रभाव क्षेत्र शाक्त साधना के केन्द्र बने। वस्तुतः सुधन्यादित्य ही पूर्वांचल का प्रथम शाक्त साधक था।

बंगाल में भी शाक्त साधना के साथ वैष्णव, शैव, सौर, गणपत्य और शाक्त पूजा की मिश्रित तांत्रिक प्रणाली प्रचलित है। देवघर की शाक्त साधना भी इससे भिन्न नहीं है।

वैद्यनाथ मंदिर में शक्ति के विभिन्न रूप अभी भी वर्तमान में हैं, जैसे दुर्गा, त्रिपुरा, बगला, सन्ध्या, तारा, काली, संकष्टा, धूमावती और छिन्नमस्ता आदि। विहार स्तम्भ लेखों से भी उसकी पुष्टि होती है। स्कन्द गुप्त और विश्व वर्मन के 'गंगाधर पत्थर' लेख से भी मातृशक्ति की उपासना प्रमाणित है।

शाक्त साधना में कौलाचार और शैवाचार का यहां अधिक प्रचार हुआ। इसका उदाहरण **'श्री चक्र'** की आराधना से सम्बन्धित है। 'श्री चक्र' की आराधना भी कौलगत का प्रवल लक्ष्य है।

श्री विद्या के उपासकों के अन्य आचार को समयाचार कहा जाता है। समयाचार में अन्तःपूजा की प्रधानता है।

'श्री चक्र' में ५१ बीजाक्षर हैं, इसमें चार और जोड़े जाते हैं। शक्ति-पीठों की संख्यात्मक मौलिकता के रहस्य को इससे जाना जाता है। 'सृष्टि काम' और 'संहार काम चक्र' के बीजाक्षरों को मिलाने से १०८ पीठों का गुह्य भेद स्पष्ट प्रतिभासित होता है।

देवघर शक्ति-पीठ में राज-राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी की उपासना की जाती है। वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग के ठीक पूरब में त्रिपुरा का एक मंदिर है, जिसे पार्वती मंदिर के रूप में जाना जाता है। त्रिपुरा के वामपार्श्व में स्थित मूर्ति जयदुर्गा की है। त्रिपुरा को शिव-शक्ति ऐक्य के रूप में सम्बोधित किया जाता है।

शंकराचार्य ने भी 'श्री चक्र' की उपासना के महत्व को प्रतिपादित किया है। परिवस्या रहस्य में भी इसकी प्रशस्ति है। 'श्री' की तुलना कमला और महाविद्या से की जाती है।

वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग के प्रकरण में शाक्त साधना की पृष्ठभूमि उत्तर गुप्तकालीन राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों की देन है। मूलतः तांत्रिक दस महाविद्या की आराधना में बगला और भैरवी का उल्लेख है। बंगाल में भैरवी और त्रिपुरा को एक ही मानते हैं।

शाक्त-साधना का जो रूप देवघर में प्राप्त है, वह पूर्णतः कौलाचार और वामाचार से संकुचित नहीं है, यदि ऐसा होता, तो तांत्रिकों और कापालिकों ने यहां भी मिथुन मूर्तियां बनाई होतीं, उसकी यहां अनुपस्थिति यहां के मंदिर स्थापत्य का पूर्णतः देशीकरण ही है।

देवघर के समीप विभिन्न शाक्त साधना के केन्द्र हैं। उन केन्द्रों में स्थित अधिकांश प्रतिमाओं को पॉलकालीन मूर्तिकला से सम्बन्धित किया जा सकता है।

मधुपुर के निकट पथरोल ग्राम में काली का विग्रह, देवघर के निकट त्रिकुटाचल में त्रिशूली और हरिलाजोड़ी तथा करौग्राम में स्थित शक्ति-विग्रह से देवघर की शाक्त साधना का स्वरूप स्पष्ट होता है। इन स्थलों में कहीं भी मिथुन आकृतियां नहीं हैं।

देवघर पूर्णतः शाक्त साधना का केन्द्र इसीलिए नहीं बन सका, क्योंकि यहां शैव और शाक्त दोनों का ही समन्वय हो गया।

तांत्रिक अभिचारों की परम्परा यहां अभी भी वर्तमान है। भीतरी खण्ड में 'श्री यंत्र' की दैनिक आराधना होती है तथा सृष्टि काम की उपासना ही प्रधान है। यहां का हवन-कुण्ड भी शाक्त साधना की प्रक्रिया से प्रज्वलित होता है।

१३वीं सदी के बाद से शाक्त साधना के ह्रास का युग प्रारम्भ होता है। पराजित मानसिक शक्ति के अभ्युदय के कारण 'शैव तंत्र' और 'वैष्णव तंत्रवाद' की प्रबलता बढ़ती है और शाक्त साधना पुनश्च बौद्ध युग की तरह गुह्य साधना की लीक पर चलने लगती है।

वस्तुतः देवघर शाक्त साधना के इतिहास में अपना एक विशिष्ट अभिचार रखता है। ❋

नवरात्रि महोत्सव जो लखनऊ में सम्पन्न हुआ

गीतिका कल्पित
दिल्ली

नवरात्रि तो रात्रि का पर्व है, जो कि इसके शब्द से ही स्पष्ट है - नव + रात्रि, नव का तात्पर्य नूतनता, और रात्रि का अर्थ होता है- जीवन्तता, चैतन्यता, उल्लासमयता। रात्रि का अर्थ यह नहीं होता कि हम रात्रि जागरण और भजन आदि गाकर रात काट दें, रात्रि का अर्थ होता है जब प्रकृति निस्तब्ध होती है, शांत होती है, तब उन क्षणों का हम सही उपयोग कर सकें, उन क्षणों को अपने जीवन में उतार सकें, उस आनन्द में लीन हो सकें, जिसे ब्रह्मानन्द कहा गया है, जो पूर्णता कही गई है, और ऐसा ही सब कुछ सम्पन्न हुआ है इस बार इस नवरात्रि पर्व पर, उत्तर- प्रदेश की राजधानी लखनऊ की धरती पर।

लखनऊ अपने-आप में एक जीवंत शहर है, ऐतिहासिक शहर है, जो भगवान राम के भाई लक्ष्मण की बसायी हुई नगरी है, जो भगवती जगदम्बा का आधार स्तम्भ है।

हर धरती को यह पुण्य प्राप्त नहीं होता कि **पूज्यपाद गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानंद जी** के चरण वहां पड़ें, जो कि आज के युग में **डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** के नाम से जाने जाते हैं।

६ अक्टूबर से १२ अक्टूबर के बीच उत्तर- प्रदेश की राजधानी लखनऊ के केन्द्रीय विद्यापीठ, गोमती नगर में आयोजित किया गया यह आश्विन नवरात्रि शिविर अत्यंत ही दिव्य, श्रेष्ठ और अद्वितीय रहा, जो कि एक उत्सव ही नहीं, अपितु एक महोत्सव था, जीवन का सर्वश्रेष्ठ महोत्सव।

ऐसे ही उत्सव और उल्लासमयता से परिपूर्ण थी यह आश्विन नवरात्रि, जो कि डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी और श्रीयुत् नन्द किशोर श्रीमाली जी द्वारा लखनऊ में सम्पन्न की गई। जहां नवरात्रि के प्रथम दिन पूज्य गुरुदेव के शिविर स्थल पर पहुंचने पर पूरा वातावरण "जय गुरुदेव" की ध्वनि से गुंजायमान हो उठा था, वहां उपस्थित साधकों अथवा शिष्यों के होठों से, उनके प्राणों से निकलती केवल मात्र यही एक ध्वनि सुनाई पड़ रही थी। प्रथम दिन श्री नन्द किशोर श्रीमाली जी ने कलश स्थापित कर सर्वप्रथम गणपति का पूजन किया और पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी ने उस कलश का पूर्ण विधि-विधान से मांत्रोक्त पूजन कर उस दिन का शुभारम्भ किया, क्योंकि हमारी यह भारतीय परम्परा रही है कि किसी भी शुभ कार्य को करने से पूर्व कलश स्थापन तथा गणपति पूजन सर्वप्रथम आवश्यक होता है, जिससे उस कार्य में शीघ्र सफलता मिल सके और उसमें किसी भी प्रकार की बाधा या अड़चन न आये।
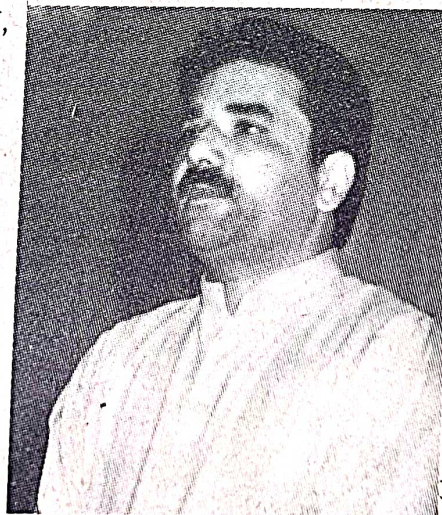
इस प्रकार नौ दिनों तक प्रातःकाल प्रवचन और सायंकाल उन महत्वपूर्ण प्रयोगों को सम्पन्न कराया गया, जो अभी तक गोपनीय थे, जिनकी गोपनीयता और दुर्लभ तथ्यों को उजागर करने की शपथ पूज्य

दैनिक जागरण, लखनऊ १२ अक्टूबर १९९४

❑ ज्योतिषाचार्य डा. श्रीमाली का नजरिया

कमाई का जरिया बनकर बदनाम हो गयी तंत्र-मंत्र विद्या

दैनिक आज, लखनऊ १२-१०-९४

मंत्र-तंत्र साधना आज भी शाश्वत

देश भर में आयोजित हैं साधना शिविर

दैनिक आज, ६ अक्टूबर १९९४

प्राचीन ग्रन्थों में दीनता कभी सराही नहीं गयीः डा. श्रीमाली

दैनिक जागरण, लखनऊ १४ ६ अक्टूबर १९९४

❑ नवरात्र साधना शिविर

समाज का अंग हैं साधक : डा. श्रीमाली

गुरुदेव ने ले रखी है। इस बार नवरात्रि शिविर में ऐसा ही कुछ हुआ, जो कि पिछले दस सालों में कभी नहीं हुआ था। हर दिन एक नये ज्ञान, एक नये चिंतन से परिपूर्ण था, जिन सर्वश्रेष्ठ प्रयोगों को सम्पन्न कराया गया उनमें से प्रमुख हैं--**महादुर्गा प्रयोग, ऋणहर्ता प्रयोग, तारा साधना, त्रिपुर सुन्दरी साधना और गुरु हृदय स्थापन प्रयोग।**

इन प्रयोगों को सम्पन्न करवाते समय तो पूज्य गुरुदेव की आंखों से अश्रु बिन्दु छलक पड़े थे, क्योंकि इन महत्वपूर्ण प्रयोगों को सम्पन्न कराने के पीछे उनका मात्र इतना ही ध्येय था, कि वे व्यक्ति, जो यहां उपस्थित हैं, इन श्रेष्ठ और दिव्य प्रयोगों को सम्पन्न कर उस स्थिति को, उस उच्चता को, उस पूर्णता को प्राप्त कर सकें, जो उनका व पूज्य गुरुदेव का उद्देश्य है, कि शिष्य भौतिक और आध्यात्मिक पूर्णता को प्राप्त कर सशरीर सिद्धाश्रम जा सकें। सिद्धाश्रम जो कि एक दिव्य स्थली है, जहां उच्चकोटि के योगी-मुनि हर क्षण साधनारत रहते हैं, और वहां पहुंचाना, सत्य का साक्षात्कार कराना ही तो पूज्यपाद गुरुदेव का ध्येय है, जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति उस आनन्द को, उस सौन्दर्य को अपनी आंखों से देख सकें, उसे साकार रूप से अपने हृदय में उतार सकें, इसी कारणवश इस विषय की चर्चा के दौरान गुरुदेव का हृदय रो पड़ा, और उन्हें रोता देख सारा वातावरण कुछ क्षणों के लिए गम्भीर सा हो गया, उस समय प्रत्येक व्यक्ति की आंखों से अश्रु की धारा बह रही थी, क्योंकि प्रत्येक को पूज्य गुरुदेव पर गर्व हो रहा था, कि उनका प्रत्येक क्षण हमारे जीवन के कल्याण के लिए, हमें आनन्द के सागर में डुबकी लगवा देने के लिए प्रयासरत है।

सचमुच बहुत ही सुन्दर, दिव्य, मधुर और आनन्द युक्त था वहां का वातावरण, वहां का प्रत्येक पल, प्रत्येक दिन, जो कि आश्विन नवरात्रि महोत्सव कहलाया।

हजारों की संख्या में लोगों ने बढ़-चढ़ कर इस शिविर में भाग लिया और उन महत्वपूर्ण दीक्षाओं को प्राप्त किया, जो कि श्रेष्ठ और अद्वितीय मानी जाती हैं, और इन महत्वपूर्ण १०८ दीक्षाओं के क्रम में सैकड़ों लोगों ने निःशुल्क दीक्षाएं प्राप्त कीं . . . .और **कुसुमाचार्य जी,** जिन्हें पूज्य गुरुदेव ने विशिष्ट संन्यास दीक्षा दी, और यह उन लोगों का सौभाग्य है, कि उन्होंने अपने इस जीवन में डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी जैसे गुरु से दीक्षा प्राप्त की।

जहां एक ओर दीक्षाओं, साधनाओं, और प्रवचन का क्रम चल रहा था, वहां दूसरी ओर संगीत और नृत्य के तालमेल से एक मधुर, आनन्दयुक्त और रसमय वातावरण की सृष्टि हो रही थी, क्योंकि पूज्य गुरुदेव का कहना था कि **ठूंठ बनकर साधना एवं सिद्धि प्राप्त कर लेना ही जीवन की सबसे बड़ी पूर्णता नहीं है, अपितु आनन्द, रस व सौन्दर्य से आपूरित जीवन ही सर्वश्रेष्ठ जीवन है।**

यह नवरात्रि शिविर आश्विन की छलकती चांदनी का पर्व था, गुरु रूपी चन्द्र पूर्णिमा सदृश्य व्यक्तित्व के सान्निध्य में। जब चांदनी की शीतलता आकाश से बरस रही हो, जब चांदनी की शीतलता प्रत्येक के हृदय में उतर रही हो, तो इससे बड़ा सुख-सौभाग्य और क्या हो सकता है, इन्हीं सौभाग्यदायक क्षणों की चर्चा के दौरान गुरुदेव ने बताया कि ज्योतिष की दृष्टि से यह नवरात्रि एक विशेष मुहूर्त लेकर आई है, और पहली बार ही ऐसा संयोग बना है, इन क्षणों का उचित प्रयोग कर व्यक्ति अपने जीवन को धन्य-धन्य कर सकता है।

नवरात्रि का यह भव्य समारोह, जो **श्री एस.के. बनर्जी, श्री एस.के. मिश्रा, श्री वेद प्रकाश जी** और **श्री सत्य प्रकाश जी** द्वारा आयोजित किया गया था, अत्यधिक सुन्दर, दिव्य, अद्वितीय और रसमयता से ओत-प्रोत था, जो नृत्य ही नहीं महानृत्य था, जो रास ही नहीं महारास था, जो उत्सव ही नहीं महोत्सव था, और ऐसा उत्सव, ऐसा महारास, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति लखनऊ की उड़ती धूल में धूसित होकर भी इतने आनन्द में, इतने रस में, इतनी मस्ती में डूबा हुआ था, कि उसे अपने तन-मन की जरा भी सुध नहीं थी, क्योंकि ऐसे आनन्द की वर्षा से भीग कर वह अपने-आप को भी भुला बैठा था।

इस आपाधापी में, इस तनाव से भरे जीवन में जहां व्यक्ति अत्यधिक दुखी, पीड़ित, अशक्त हो जाता है, वहीं दूसरी ओर नवरात्रि पर्व के इस आनन्द में, इस उत्सव में प्रत्येक व्यक्ति को डूबा देख आश्चर्य सा हो रहा था, और इसी प्रसन्नता को, इसी मुस्कराहट को प्रत्येक के होठों पर अंकित कर देना ही तो गुरुदेव का लक्ष्य है।

जहां एक ओर प्लेग की महामारी का डर पूरे भारत में समाया हुआ था, वहीं दूसरी ओर बिना किसी डर के, बिना किसी भय के नवरात्रि का विशाल शिविर पूज्य गुरुदेव ने लखनऊ में सम्पन्न करवाया, जहां एक ओर व्यक्ति भयभीत थे, सहमें हुए थे, अपने घरों में छिपते फिर रहे थे, वहीं दूसरी ओर निडर भाव से डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी के निर्देशन में इस समारोह का, इस पर्व का आनन्द लिया जा रहा था, क्योंकि उनकी छत्रछाया में बैठ कर प्रत्येक व्यक्ति अपने-आप को सुरक्षित और धन्य महसूस कर रहा था।

इस शिविर में दूर-दूर से आये सभी प्रान्त के लोगों ने सहयोग देकर इस शिविर को सफल बनाया। **श्री सी.डी. शर्मा जी** ने इस आयोजन को सफल बनाने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। **श्री हरिराम चौधरी जी** ने सभी साधकों के लिए भोजन का प्रबन्ध किया तथा **श्री सुभाष कालरा** और उनकी धर्म पत्नी **श्रीमती सुदेश कालरा** ने शिविर के अंतिम दिन सभी कार्यकर्ताओं को अपनी तरफ से प्रीति भोज दिया। इस प्रकार बहुत से व्यक्तियों ने अपना सहयोग प्रदान कर इस शिविर को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे कि यह नवरात्रि पर्व, यह दिव्य समारोह लखनऊ में सफल और सम्पन्न हो सका।

❋

सुखद जीवन का अहसास इस जीवन का सौभाग्य एवं गौरव

सदस्य बनने के दो माह के भीतर ही भीतर चैतन्य महालक्ष्मी दीक्षा सर्वथा मुफ्त

पूरे समय पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर डाक द्वारा

अद्वितीय और अद्भुत भाग्योदय में सहायक, उंगली में जड़वाकर पहिनने योग्य आकर्षक सूर्यकान्त उपरत्न निःशुल्क

समस्त क्रियाओं में सहायक तेजस्वी पारद शिवलिंग उपहार स्वरूप

प्रथम,साधना शिविर में, अत्यधिक उपयोगी शिविर सिद्धि पैकेट (धोती, माला, पंचपात्र, गुरु चित्र तथा सिद्धासन सर्वथा निःशुल्क)

एक बड़ा प्राण ऊर्जा से चैतन्य घर में स्थापित करने योग्य पूज्यपाद गुरुदेव का आकर्षक चित्र आशीर्वाद स्वरूप

प्राण-प्रतिष्ठित व पूज्यपाद गुरुदेव की प्राणश्चेतना से युक्त गुरु यंत्र आशीर्वाद स्वरूप

सिद्धाश्रम कैसेट, ऑडियो कैसेट जो आपके घर को मधुर व पवित्र वाणी से शुद्ध, चैतन्य कर देगा। सर्वथा मुफ्त
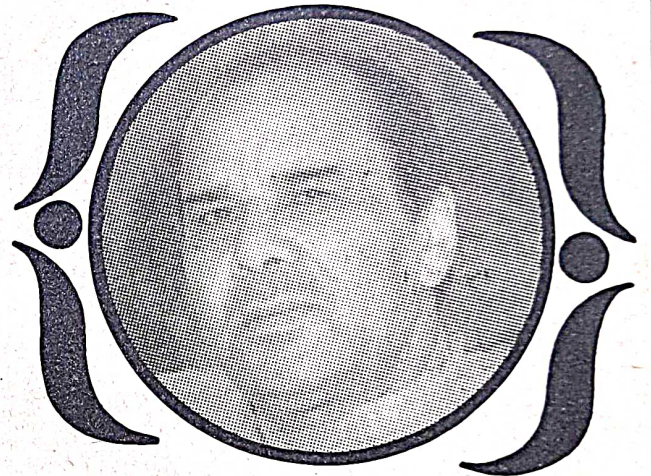
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की आजीवन सदस्यता सुखद जीवन का आधार है

केवल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी। जो पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने के विशेष अवसर भी उपलब्ध होते रहेंगे। केवल **६६६६/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी।

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन:०२९१-३२२०९

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोन:०११-७१८२२४८, फेक्स:०११-७१८६७००

नोट - बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल २,४००/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।
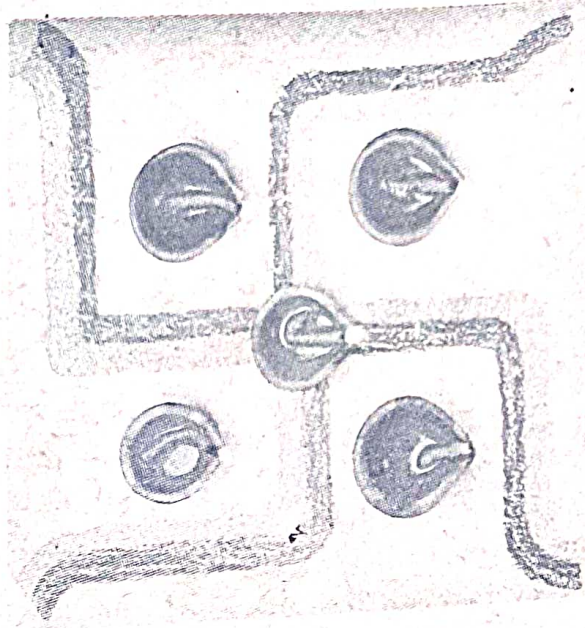
नववर्ष सर्वोन्नति प्रयोग

नववर्ष कहते ही मन में एक नयेपन का अहसास होने लगता है, इसके नाम से ही कुछ नया सा झलकने लगता है। 'नव' यानि परिवर्तन, कुछ नया, जो जीवन को बदल कर दख दे। 'नव' का अर्थ है— निर्माण कर दे उसका, जो अपने-आप में कुछ अलग हो, नूतन हो, नवीन हो।

हां ! कुछ ऐसा ही होता है यह 'नया वर्ष', जो जीवन में रंग-बिरंगे रंगों को भर देने वाला होता है, जो नई उम्मीदों, नई उगंगों, नये उत्साह, नये जोश को अपने में समेटे हुए होता है, क्योंकि **एक 'नये वर्ष' का शुभारम्भ कर व्यक्ति अपने विचारों, अपने चिंतन को एक नई दिशा देता है, जिससे कि वह वर्षभर उन्नति की ओर अग्रसर हो सके, और वह उसके जीवन का एक उन्नतिदायक वर्ष बन जाए।**

'पुराना वर्ष' आपके जीवन की खट्टी-मीठी, आनन्दप्रद और कड़वी यादें लिए हुए वृद्धता की ओर अग्रसर होता है, जबकि 'नया वर्ष' नवशिशु के रूप में आनन्द, उमंग, उत्साह, जोश और महत्वाकांक्षाओं की गठरी लिए सामने खड़ा होता है।

एक नवजात शिशु के जन्म की भांति ही हर व्यक्ति १२ महीनों के बाद 'नववर्ष' के उदय का बेसब्री से इंतजार करता है, जिसके आगमन से उसके चेहरे पर उसी प्रकार की खुशी, प्रसन्नता, उमंग, प्रफुल्लता छा जाती है, क्योंकि उसे अपने जीवन में फिर एक नयेपन का अहसास होता है, एक बार फिर कुछ नया उद्घटित होने वाला होता है उसके जीवन में।

हर व्यक्ति उस क्षण से एक नये जीवन की शुरुआत करता है, और नयापन तो होता ही खुशी, उमंग, आनन्द और उल्लास से भर देने के लिए है।

एक मां जिस प्रकार एक शिशु के अन्दर नवीन संस्कारों को पैदा कर उसके जीवन की जिम्मेदार होती है, जिसके आधार पर उस बालक का पूरा जीवन अपनी मां द्वारा दिये गये अच्छे या बुरे संस्कारों पर निर्भर होता है, ठीक उसी प्रकार हर व्यक्ति अपने जीवन में, अच्छे या बुरे कार्यों का स्वयं जिम्मेदार होता है।

नववर्ष एक स्वर्णिम क्षण, जो साकार कर दे मानव जीवन को. . . भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों को पूर्णता देने वाली तथा नववर्ष को उत्सवमय बना देने वाली यह महत्वपूर्ण साधना . . .

यदि मां अपने शिशु में अच्छे विचारों, अच्छे संस्कारों का समावेश करती हैं, तो वह बालक अपने जीवन में सुख, सम्पन्नता, वैभव, प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है, और यदि बुरे संस्कारों को उसमें प्रविष्ट करती है, तो उस बालक का जीवन दुःखी, पीड़ित, कष्टप्रद, परेशानियों और बाधाओं से भरा व्यतीत होता है।

यदि व्यक्ति एक 'नवशिशु' की भांति 'नववर्ष' में अच्छे कर्मों को प्रविष्ट करता है, तो वह वर्ष उसके जीवन में सुख-सम्पन्नता, वैभव, आनन्द और उन्नति प्रदान करने वाला होता है, जिसके आधार पर ही वह अपने उस वर्ष में पूर्णता, श्रेष्ठता और दिव्यता प्राप्त कर लेता है, और यदि व्यक्ति उस वर्ष का प्रारम्भ ही गलत व बुरे ढंग से करता है, तो वैसा ही दुःखी, पीड़ित, चिन्ताग्रस्त, कष्टप्रद जीवन उसे भुगतना पड़ता है, जो उसके जीवन की न्यूनताओं को लिए हुए निराशाजनक और नीरस ढंग से व्यतीत होता है।

— क्योंकि जैसा बीज व्यक्ति मिट्टी में बोता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है, इसलिए हमें चाहिए, कि हम 'नववर्ष' का शुभारंभ सुन्दर, नवीन और शुभ तरीके से करें।

व्यक्ति अपने अच्छे-बुरे कर्मों को सोचकर एक नये चिंतन, नये विचारों को अपने मानस में सजोते हुए 'नववर्ष' का स्वागत करता है, जिससे कि वह अपने नये विचारों को, अपनी कल्पना को नये ढंग से विस्तार देकर एक नवीन जीवन की पुष्टि कर सके, जिससे कि उसका आने वाला समय, 'नया वर्ष' खुशियों से भरा हो, मंगलमय हो, उत्सवमय हो।

— और इस उत्सव को, इस उमंग को, इस उत्साह को भारतीय साधना ग्रंथों में एक पर्व के रूप में वर्णित किया गया है। इस दिन जहां सामान्य, संकीर्ण और तुच्छ बुद्धि का व्यक्ति इस 'नववर्ष' का स्वागत अर्द्धरात्रि की घोर कालिमा में शराब पीकर, जुआ खेलकर, क्लबों में जाकर करता है, वहीं एक समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति इस वर्ष का स्वागत शुभ ढंग से कर अपने जीवन को धन्य कर लेता है।

शराब और पार्टियों में बिताया गया समय किसी भी प्रकार से 'नववर्ष' का उत्सव नहीं दे सकता, वह तो व्यक्ति को घने अंधकार में डुबो देने वाला होता है, जबकि इसके विपरीत इसका आरम्भ उत्साह, उल्लास और साधनात्मक चिंतन से कर व्यक्ति एक नई दिशा, एक नई रोशनी को प्राप्त कर अपने जीवन को श्रेष्ठता और उच्चता प्रदान करता है।

उसके जीवन में 'नववर्ष' का अर्थ ही जीवन शैली में नवीनता, नया उत्साह और बल भर देना है, जिससे कि यह 'नया वर्ष' हमारे लिए उमंग और उत्साह से भरा हुआ हो, और यह उमंग, यह जोश, यह बल, यह उत्साह, यह आनन्द, यह श्रेष्ठता हमें मिल सकती है इस **''नववर्ष सर्वोन्नति प्रयोग''** के माध्यम से, जो हमारे जीवन को पूर्णता प्रदान करने वाला है, श्रेष्ठता प्रदान करने वाला है, अद्वितीयता प्रदान करने वाला है।

इस प्रयोग के माध्यम से हम कुछ ही घंटों में अपने आगे के पूरे ३६५ दिनों को संवार सकते हैं। इस विशेष प्रयोग के माध्यम से हम अपने प्रत्येक दिन को आनन्द, उमंग और उत्साह से सराबोर कर सकते हैं।

जहां व्यक्ति इस 'नववर्ष' का आरम्भ, जो उसके जीवन के मूल्यवान क्षण होते हैं, उन स्वर्णिम क्षणों को, जिनको वह अज्ञानतावश, मूर्खता पूर्ण तरीकों से हो-हल्ला, नाच-गा कर, जुआ आदि खेल कर गंवा बैठता है, वहीं एक समझदार व्यक्ति, साधक या शिष्य उन्हीं महत्वपूर्ण और मूल्यवान क्षणों का उचित और साधनात्मक ढंग से प्रयोग कर अपने जीवन के प्रत्येक दिन को स्वर्णिम, श्रेष्ट, दिव्य और उत्सवमय बना लेता है।

इस विशेष प्रयोग को सम्पन्न कर व्यक्ति एक विशेष प्रकार की ऊर्जा शक्ति को अपने अन्दर संग्रहित कर लेता है, जिस शक्ति के माध्यम से वह श्रेष्ठता व अद्वितीयता प्राप्त कर अपने जीवन को पूर्णरूप से साकार कर बैठता है।

इस प्रयोग के माध्यम से व्यक्ति के शरीर में एक विशेष प्रकार की तेजस्विता और दिव्यता आ जाती है, जिस तेज और बल के माध्यम से वह पूरे वर्षभर का आनन्द प्राप्त कर लेता है, और तब उसके जीवन में किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रह जाती, क्योंकि इस 'नववर्ष' के दिव्य, स्वर्णिम क्षणों का उचित प्रयोग कर वह उस ऊर्जा शक्ति के माध्यम से अपने जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों में सफलता प्राप्त कर लेता है, जिन पक्षों में सफलता प्राप्त कर लेना ही मानव जीवन का हेतु होता है, और यही मानव जीवन की श्रेष्ठता है, अद्वितीयता है, सम्पूर्णता है।

यह 'नववर्ष' आपके जीवन में उन्नतिदायक, उल्लसित, उमंगित, आनन्ददायक और उत्सवमय क्षणों को प्रदान करने वाला हो, जो आपके जीवन के प्रत्येक दिन को उत्सवमय, नृत्यमय और आनन्द से सराबोर कर दे।

अब यह निर्णय तो व्यक्ति को स्वयं करना है, कि वह किस प्रकार के जीवन की सृष्टि करना चाहता है, दुःखी, पीड़ित, निराशाजनक और कष्टप्रद जीवन की, या फिर श्रेष्टता, दिव्यता, आनन्द और पूर्णता प्राप्त जीवन की। यह निर्णय तो उसके खुद का है, कि वह किस प्रकार के जीवन को व्यतीत करे।

इस दिवस की **''नववर्ष सर्वोन्नति साधना''** को सम्पन्न कर व्यक्ति स्वयं यह अनुभव कर सकता है, कि आम घिसे-पिटे, उन्माद से भरकर विचित्र ढंग से समय व्यतीत करने की अपेक्षा, यदि साधनात्मक ढंग से इस पर्व को मनाया जाए, तो केवल उस दिवस विशेष पर ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण वर्षभर जीवन में इतना अधिक उल्लास और ऐसी ताजगी आ जाती है, जिसका कि पहले कभी अनुभव ही न किया हो।

इस प्रयोग को सम्पन्न कर व्यक्ति के कदम अपने-आप ही उस पथ की ओर बढ़ने लगते हैं, जो पथ उसे नित्य उन्नति की ओर अग्रसर करता है, जो साधना के बल से प्राप्त रश्मियों के स्पर्श से **''नववर्षोत्सव''** कहलाता है, जो उस साधक के जीवन में नित्य आनन्द, नित्य उत्सव, नित्य छलछलाहट भर देता है, और तब उसका प्रत्येक दिन उत्सवमय हो जाता है, उल्लासमय हो जाता है।

हमें अपने प्राचीन ग्रंथों, शास्त्रों और पुराणों आदि से यह ज्ञात होता है, कि हमारे ऋषि, मुनि, योगी हमसे कहीं अधिक श्रेष्ठ और परिपूर्ण थे, परन्तु उनकी इस श्रेष्ठता और परिपूर्णता का रहस्य यह है, कि उन्होंने प्रत्येक प्रकार के वर्ष का प्रारम्भ उस साधनात्मक चिंतन को अपना कर किया, जिस कारण वे एक श्रेष्ठ और परिपूर्ण जीवन को निर्मित कर सके।

—और यदि हम इस दिवस की साधना को अपने जीवन में एक बार सम्पन्न कर लें, तो हम भी इन न्यूनताओं से भरे जीवन को पीछे धकेलकर श्रेष्ठ, उन्नतिदायक और परिपूर्ण जीवन प्राप्त कर सकेंगे।

१ जनवरी ६५ को यह प्रयोग सम्पन्न किया जाना चाहिए, परन्तु वर्ष में जितने भी 'नववर्ष' प्रचलित हों, उन अवसरों पर भी इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है, चाहे वह विक्रमीय संवत् हो या ईसवी सन, या अन्य किसी प्रकार का नववर्षारम्भ हो।

यह एक दुर्लभ प्रयोग है, जिसे प्रत्येक साधक को पूर्णता के साथ सम्पन्न करना ही चाहिए।

शास्त्रों में इस वर्ष का प्रारम्भ सूर्योदय से माना गया है, जिस समय सूर्य अपनी पहली किरण से संसार को प्रकाशवान करता है, उसी समय इस प्रयोग को प्रारम्भ किया जाना चाहिए, और यों तो सूर्योदय से ६ बजे के बीच भी इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है।

साधना प्रयोग

प्रत्येक परिवार के मुखिया को चाहिए, कि वह इस दिवस पर प्रातःकाल सूर्योदय से पहले उठकर परिवार के अन्य सदस्यों को भी जगा दे, फिर सभी स्नान आदि से निवृत्त होकर शुद्ध, स्वच्छ पीले वस्त्रों को धारण कर लें, यदि ऐसा सम्भव न हो, तो वह अकेला ही इस साधना को सम्पन्न करे, इसके अतिरिक्त सामने जलपात्र, अक्षत, कुंकुम, धूप व दीप, फल, पुष्प, प्रसाद, इत्र आदि पहले से ही मंगवाकर रख ले।

साधकों को चाहिए, कि वे पूर्ण शांत चित्त होकर आसन पर बैठ जाएं और अपने सामने **गुरु यन्त्र , चित्र** व **त्रैलोक्य वर्षेश्वर यंत्र** को स्थापित कर दें। यह यंत्र मंत्र-सिद्ध व प्राण-प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए, फिर इस चित्र व यंत्र के आगे धूप व दीप जला कर और कुंकुम, अक्षत, पुष्प, प्रसाद आदि चढ़ा दें और गुरु का स्मरण करते हुए **त्रैलोक्य विजय माला** से मंत्र-जप आरम्भ कर दें।

मंत्र

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं पूर्ण नववर्ष धन धान्य समृद्धि पूर्णत्व देहि देहि नमः।।

इस मंत्र का ५ माला मंत्र - जप करे तथा बाद में इस यंत्र एवं माला को किसी मंदिर में देवता के सामने समर्पित कर दे, अथवा नदी में विसर्जित कर दे।

यह कोई सामान्य साधना नहीं है, अपितु पूरे वर्षभर के लिए सभी दृष्टियों से उन्नतिप्रद, स्वास्थ्यप्रद एवं रक्षात्मक है।

यह 'नववर्ष' आपके जीवन में उन्नतिदायक, उल्लसित, उमंगित, आनन्ददायक और उत्सवमय क्षणों को प्रदान करने वाला हो, जो आपके जीवन के प्रत्येक क्षण, प्रत्येक दिन को उत्सवमय, नृत्यमय और आनन्द से सराबोर कर दे। यही उत्सव, यही नृत्य, यही आनन्द ही तो श्रेष्ठ जीवन है, और आपके स्वप्निल जीवन का साकार स्वरूप है।

— और ऐसा ही सर्वश्रेष्ठ, उत्सवमय और उन्नतिदायक जीवन प्रत्येक साधक साकार रूप में ग्रहण कर सके।

राशिफल

मेष - बढ़ते हुए पारिवारिक तनाव में राहत मिलेगी। संतान सुख में संतोषजनक स्थिति निर्मित होगी। मन-मुटाव व आपसी रंजिशों में सावधानी बरतें। कारोबारी मामलों में विशेष ध्यान दें, असावधानीवश आर्थिक हानि की सम्भावनाएं। मित्रों एवं सहयोगियों पर अंधविश्वास हानिप्रद सिद्ध हो सकता है। कारोबारी यात्रा में लाभ सम्भावित। दायित्व पूर्ण कार्यों में शिथिलता न बरतें। राज्य पक्ष से आती उलझनें मानसिक तनाव का कारण बनेंगी। धन का सदुपयोग करें, आर्थिक स्थिति में दृढ़ता दिखाई देगी। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें। यह माह आपके लिए अत्यन्त व्यस्तता से भरा रहेगा। स्वास्थ्य के प्रति उपेक्षा न बरतें।

वृषभ - किसी के व्यक्तिगत कार्यों में हस्तक्षेप करने से बचें, विवाद की सम्भावनाएं प्रबल हैं। अनावश्यक यात्रा उचित नहीं, सड़क दुर्घटना की सम्भावना, सावधानी बरतें। दाम्पत्य जीवन में प्रफुल्लता का वातावरण बना रहेगा, संतान की ओर से प्रसन्नतादायक समाचार प्राप्त होने पर छाई निराशा समाप्त होगी। धार्मिक कार्यों में धन व्यय करने की स्थितियां बनेंगी। परिवार के सदस्यों में बढ़ती बीमारी से चिंता होगी। कार्यालय में मधुर व्यवहार बनाकर चलें, विश्वासघात की सम्भावनाएं अधिक हैं।

मिथुन - आय के साधनों में वृद्धि होगी। कारोबारी मामलों को लेकर प्रसन्नता का वातावरण बनेगा। पारिवारिक कार्यों की उपेक्षा से कलह की स्थिति निर्मित होगी, टकराव की स्थिति में धैर्य से काम लें। प्रेम-प्रसंगों में उदासीनता रहेगी। जोखिम के कार्य करने वाले आर्थिक स्थिति में मजबूती प्राप्त करेंगे। वाहन प्रयोग में एवं यात्रा में विशेष सावधानी बरतें। राज्य पक्ष की ओर से बाधा आने पर तनाव बढ़ेगा। मित्रों एवं सम्बन्धियों का सहयोग प्राप्त होगा, विश्वासघात की स्थिति में संयम बरतें। यह माह उदासीनताओं से भरा होगा। कला जगत के व्यक्ति आर्थिक स्थिति में सम्पन्नता अनुभव करेंगे तथा प्रतिष्ठा लाभ भी प्राप्त करेंगे, अपने धन को निवेश पर लगाने से आर्थिक लाभ की स्थिति प्राप्त करेंगे।

कर्क - मित्रों के प्रति सहयोगी व्यवहार के कारण आर्थिक हानि होगी। जमीन-जायदाद के मामले उलझने से परेशानी होगी, संयम बरतें। धार्मिक कार्यों में रुचि लें, साधना के क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति साधनाओं में विशेष सफलता प्राप्त कर सकेंगे। पारिवारिक मामलों की उपेक्षा न करें, शुभ समाचार के आने से प्रसन्नता का वातावरण बनेगा। धार्मिक स्थलों की यात्रा फलप्रद एवं उत्साहवर्द्धक सिद्ध होगी। कारोबारी मामलों में सुधार होगा, रोजगार की सम्भावनाएं बनेंगी। शत्रु पक्ष शिथिलता अनुभव करेगा।

सिंह - कठिन परिश्रम व लगन से व्यापार में उत्पन्न होती विपरीत परिस्थितियों को अपने पक्ष में करने से सफलता प्राप्त होगी। सामाजिक कार्यों में असफलता मिलेगी तथा मान-सम्मान की स्थिति यथावत् रहेगी। परिवार का पूर्ण सहयोग मिलेगा। जीवन साथी के सहयोग से मानसिक बल प्राप्त होगा। मांगलिक कार्यों के योग निर्मित होंगे। आर्थिक व्यय भार बढ़ेगा। इस माह दुर्घटना का योग प्रबल है, सावधानी बरतें। शत्रु पक्ष के व्यक्ति अनावश्यक बाधा पहुंचाने का प्रयास करेंगे। जमीन-जायदाद के मामलों की उपेक्षा भविष्य में अत्यन्त हानिप्रद होगी। राज्य पक्ष की उपेक्षा न करें। प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता रहेगी।

कन्या - यह समय आपके लिए उत्तम है, जो करना चाहते हैं, उसे सावधानी पूर्वक करें, उतावली एवं हड़बड़ाहट में हानि की सम्भावना हो सकती है, धैर्य पूर्वक कार्य करें, यह समय उचित निर्णय लेने का है। मित्रों एवं सहयोगियों के सहयोग से मानसिक बल एवं उत्साह प्राप्त होगा। आर्थिक कठिनाइयां आयेंगी। सम्बन्धियों की ओर से निराशाजनक स्थिति बनने पर मन में खिन्नता रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अनुकूल नहीं कहा जा सकता, सावधानी बरतें। अध्ययन एवं मनोविनोद के कार्यों में अरुचि होगी।

तुला - सोचे हुए कार्य पूरे होने में भारी अड़चनें आने से चिन्ता एवं मानसिक तनाव उत्पन्न होगा। राज्य पक्ष की ओर से बाधा की स्थिति निर्मित होगी। धन की स्थिति सामान्य से कुछ श्रेष्ठ ही रहेगी, जबकि पूंजी निवेश करने की दृष्टि से एवं आगामी समय को ध्यान में रखते हुए आर्थिक योजनाएं बना लेना लाभप्रद रहेगा। जीवन साथी के स्वास्थ्य में गड़बड़ी रहने से मानसिक तनाव में वृद्धि होगी। पारिवारिक मामलों को लेकर उदासीनता न बरतें। धन के अपव्यय से बचें। राजकार्य आसानी से पूरे होंगे तथा सामाजिक कार्यों में आती अड़चनें सहयोगियों की सहायता से दूर होंगी। ।

वृश्चिक - पूरे माह बार- बार उदासीनता की स्थितियां बनेंगी। कारोबारी मामलों में उलझनें बढ़ने से तनाव में वृद्धि होगी। घरेलू कार्यों की उपेक्षा करने से पारिवारिक तनाव उत्पन्न होगा तथा जीवन साथी का सहयोग मिलने से मानसिक शांति प्राप्त होगी। आप अपने धन को अचल सम्पत्ति में परिवर्तित करें, लाभ होगा। कारोबारी मामलों को लेकर की गई यात्रा एवं पुराने सम्बन्ध लाभप्रद सिद्ध होंगे। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। आर्थिक व्यापार में वृद्धि होगी।

धनु - मन असंयमित रहेगा तथा कार्यों को व्यवस्थित रूप देने में कठिनाई अनुभव होगी। परस्पर विरोधी विचारों के द्वन्द्व में उलझाव बना ही रहेगा। कार्यालय में तालमेल बैठाकर चलें। मित्रों एवं सहयोगियों में अनबन होने से मानसिक तनाव बना रहेगा, कारोबारी स्थितियों में सुधार होगा तथा आर्थिक स्थिति में दृढ़ता आयेगी, धन के अपव्यय से बचें। स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा, किन्तु उत्तेजना आपके लिए हानिकारक एवं पीड़ादायक सिद्ध होगी। जमीन-जायदाद के मामलों को लेकर उदासीनता न बरतें। शत्रु पक्ष पीड़ा देने के प्रयास में रहेगा।

मकर - मनचाहे कार्य स्वयमेव बनते चले जायेंगे। धनागम के स्रोत प्राप्त होंगे, आर्थिक रूप से स्थिति प्रबल रहेगी। घर-परिवार में वैमनस्य बढ़ेगा। सम्बन्धियों की आर्थिक स्थिति से सहायता करने पर परिवार में तनाव बढ़ेगा। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें, स्थिति में गम्भीरता आयेगी। दाम्पत्य जीवन सामान्य ही रहेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, पुराने सम्बन्ध काम आयेंगे। धन को उचित एवं सही स्थान पर व्यय करें, सट्टा एवं लॉटरी की स्थितियां हानिप्रद सिद्ध होंगी।

कुंभ - यात्राएं अनुकूल एवं पूर्ण लाभदायक रहेंगी। पारिवारिक समस्याओं की अधिकता रहेगी, स्वयं का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। माह के तृतीय सप्ताह में तीव्र मानसिक तनाव अथवा नर्वस ब्रेक डाउन जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है, अतः सावधान रहें। कार्यालय में चला आ रहा तनाव दूर होगा। व्यवसायी वर्ग के लिए यह माह कठिन है। शत्रु पक्ष समझौते के लिए स्वयं पहल करेगा। बिखरी हुई मनःस्थिति के कारण अनेक महत्वपूर्ण अवसर हाथ से निकल जाने की सम्भावना है। दिनांक ६,१४,२३,२५,२६ इस माह की विशेष अनुकूल तारीखें हैं। यात्राएं यथा-सम्भव कम करें।

मीन - आगामी समय के लिए इस माह विशेष योजनाएं निर्मित कर लें। जायदाद सम्बन्धी बंटवारे का प्रश्न सामने आएगा। गुप्त धन का व्यय होगा। विचारों में ढुलमुलता बनी रहने से सम्मान की हानि होगी। उचित निर्णय शक्ति का अभाव कुछ अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न कर सकता है। पारिवारिक सदस्यों की उपेक्षा न करें, उपेक्षा प्राप्त होने पर धैर्य बनाये रखें। शरीर में पीड़ा बनी रहेगी। रिश्तेदारों व पड़ोसियों से सम्बन्धों में तनाव आएगा।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

दिनांक	तिथि	पर्व
०२.११.६४	कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी	हनुमान जयन्ती
०३.११.६४	**कार्तिक अमावस्या**	**श्री महालक्ष्मी पूजा, दीपावली**
०४.११.६४	**कार्तिक शुक्ल पक्ष १**	**अन्नकूट गोवर्धन पूजा**
०५.११.६४	कार्तिक शुक्ल पक्ष २	भाई दूज
०८.११.६४	कार्तिक शुक्ल पक्ष ६	सूर्य षष्ठी (डाला छठ)
१५.११.६४	कार्तिक शुक्ल पक्ष १३	सर्वा. अमृत सिद्धि योग
१६.११.६४	मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष १	सर्वा. अमृत सिद्धि योग
२४.११.६४	मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष ६	गुरु पुष्य सर्वा. अमृत सिद्धि योग
२६.११.६४	**मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष ८**	**श्री कालभैरव अष्टमी**
२८.११.६४	मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष ११	उत्पत्ति एकादशी
३०.११.६४	मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष १२	सर्वा. अमृत सिद्धि योग
०६.१२.६४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष ४	श्री गणेश चतुर्थी
०७.१२.६४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष ५	नागपंचमी
१३.१२.६४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष ११	मोक्षदा एकादशी
१५.१२.६४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष १३	सर्वा. अमृत सिद्धि योग
१६.१२.६४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष १४	त्रिपुर भैरवी साधना दिवस
१७.१२.६४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष १५	सत्य व्रत पूर्णिमा
१८.१२.६४	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष १५	अन्नपूर्णा जयन्ती
२१.१२.६४	पौष कृष्ण पक्ष ३	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
२६.१२.६४	पौष कृष्ण पक्ष ८	कालाष्टमी
२८.१२.६४	पौष कृष्ण पक्ष ११	सफला एकादशी
०१.०१.६५	पौष कृष्ण अमावस्या	नूतन वर्षारम्भ

सर्वथा मुफ्त

वर्ष का सर्वोत्तम उपहार
देवताओं के अधिपति इन्द्रकृत
विश्व वशीकरण ऐश्वर्य महालक्ष्मी यंत्र

जिसे विशिष्ट विद्वानों
एवं
सिद्धाश्रम के योगियो द्वारा
एवं
परम पूज्य गुरुदेव द्वारा सिद्ध

दीपावली (३ नवम्बर ९४) की रात्रि को

सिंह लग्न में स्थायित्व प्रदान करने वाली

ऐश्वर्य महालक्ष्मी जो सम्पूर्ण विश्व को सम्मोहित वशीकरण

करने में समर्थ महायंत्र को चारों वेदों के मंत्रों से अभिपूरित

एवं

सम्पूर्ण षोडश पूज्य युक्त

अद्वितीय यंत्र

विश्व वशीकरण ऐश्वर्य महालक्ष्मी यंत्र

जो आपको

सर्वथा मुफ्त प्राप्त हो सकता है

यदि आप इस पत्रिका के पीछे संलग्न पोस्ट कार्ड को भर कर भेज दें तो . . .

जीवन का विशिष्ट दुर्लभ यंत्र

विश्व वशीकरण ऐश्वर्य महालक्ष्मी यंत्र

जो आप मात्र एक नया पत्रिका सदस्य बनाकर प्राप्त कर सकते हैं

पुत्र प्राप्ति प्रयोग

आज के युग में लाखों-करोड़ों लोग योग्य पुत्र की प्राप्ति के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय कर डालते हैं, क्योंकि प्रत्येक स्त्री-पुरुष की यह दिली इच्छा होती है, कि उनके यहां एक सुयोग्य एवं तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हो। योग्य पुत्र के न होने पर वे बड़े ही हताश-निराश से हो जाते हैं अपने जीवन में, उनके मन में अनेक प्रकार की कुण्ठाएं व्याप्त हो जाती हैं, जिनकी वजह से वे दुःखी, पीड़ित, बीमार, चिड़चिड़े और झल्लाने वाले स्त्री-पुरुष बन जाते हैं।

किसी भी माता-पिता के लिए योग्य पुत्र का न होना उनके जीवन को घनघोर अंधकार में डुबो डालता है, बिना उसके उनका जीवन शून्य सा दिखाई देने लगता है।

''पुत्रोन्नति प्रयोग'' का तात्पर्य– एक ऐसी साधना से है, जो औषधि की तरह कार्य करती है। यह पुरुष या स्त्री की शारीरिक न्यूनताओं को समाप्त करने में समर्थ है, यह औषधि जहां नारी के गर्भाशय को ताकत देती है, और उसे पुत्र उत्पन्न करने के योग्य बनाती है, वहीं इस औषधि के सेवन से पुरुष के शुक्राणु बलवान बन कर सन्तान उत्पन्न करने में समर्थ हो पाते हैं, साथ ही वह पुत्र योग्य, स्वस्थ और तेजस्वी हो इसके लिए पुत्रदा एकादशी के दिन इस पुत्रोन्नति प्रयोग को सम्पन्न किया जाता है।

शास्त्रों के अनुसार पांच प्रकार की स्थितियों में यह औषधि प्रयोग की जाती है–

१. यदि किसी के सन्तान उत्पन्न नहीं हो रही हो या वह स्त्री बांझ हो।
२. यदि बार-बार गर्भ गिर जाता हो।
३. यदि केवल लड़कियां ही लड़कियां पैदा हो रही हों, तो पुत्र-प्राप्ति के लिए।
४. यदि स्त्री-पुरुष के शरीर में किसी प्रकार की कमजोरी, बीमारी और क्षीणता हो।
५. सुन्दर, स्वस्थ पुत्र-प्राप्ति के लिए, पुत्र की रक्षा के लिए, पुत्र के स्वास्थ्य के लिए और पुत्र को अकाल-मृत्यु से बचाने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।

पुत्र तो फिर भी उत्पन्न हो जाता है, परन्तु वह सुयोग्य हो, यह जरूरी नहीं। यदि किसी के सौ पुत्र भी हों, लेकिन वे कुपुत्र हों, तो ऐसे पुत्रों से उन माता-पिता का जीवन दुःखदायी और कष्टप्रद हो जाता है, उन्हें अपने जीवन में चारों तरफ अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देने लगता है, उनके जीवन में सिवाय परेशानियों और बाधाओं के कुछ शेष नहीं रह जाता, और एक दिन वे इन सबसे पीड़ित एवं दुःखी होते हुए, रोते-झींकते हुए इस दुनिया से विदा ले लेते हैं, उनका सारा जीवन उन कुपुत्रों के कारण असफल एवं निरर्थक हो जाता है, और ठीक इसके विपरीत यदि किसी के घर में एक ही बेटा जन्म ले और वह सुपुत्र हो, तो वह अकेला ही सौ पुत्रों के बराबर होता है, जिसे गर्भ से उत्पन्न कर वह स्त्री अपने जीवन को धन्य मान लेती है, क्योंकि वह सुपुत्र ही उसके अन्धकारमय जीवन में प्रकाश की एक किरण की भांति आकर उसके जीवन को प्रकाशवान कर डालता है, जिससे कि वे स्त्री-पुरुष अपने जीवन में सुखी-सम्पन्न और समृद्ध हो जाते हैं।

इसीलिए प्रत्येक स्त्री-पुरुष ऐसे ही सुन्दर, सुयोग्य सुपुत्र की इच्छा को अपने मन में संजोये रहते हैं, और इसी कारणवश वे अपनी इस इच्छा को पूर्ण करने के लिए अनेकों उपाय कर डालते हैं।

प्रत्येक स्त्री-पुरुष यह चाहते हैं, कि उनका पुत्र सुन्दर हो, स्वस्थ हो, योग्य हो, बलिष्ठ हो, उन्नतिदायक हो, जिस पुत्र को प्राप्त कर वे अपने जीवन को सुखी व समृद्ध बना सकें।

''पुत्रोन्नति प्रयोग'' ऐसे ही पुत्र की कामना को साकार रूप में पूर्ण करने वाला एक लाभदायक प्रयोग है, जिसे प्रत्येक स्त्री-पुरुष को अपने जीवन में सम्पन्न करना ही चाहिए।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार पूरे वर्ष में एक दिन ही केवल सुयोग्य पुत्र की प्राप्ति एवं उन्नति के लिए निर्धारित किया जाता है, जिसे ''पुत्रदा एकादशी'' कहते हैं। पुत्रोन्नति प्रयोग को सम्पन्न करने पर किसी भी प्रकार की हानि अथवा अत्यधिक व्यय नहीं होता है। इस प्रयोग को कोई भी स्त्री अथवा पुरुष साधारणतया सिद्ध कर सकता है।

यह शास्त्र सम्मत है, कि हजारों वर्षों से हमारे पूर्वज इस प्रयोग को सम्पन्न करते आये हैं, तथा इस प्रयोग के माध्यम से उन्हें आशातीत सफलता भी मिली है, आश्चर्य की बात तो यह है, कि इस प्रयोग को जहां महर्षि च्वयन ने श्रेष्ठ बताया है, वहीं आगे चलकर धन्वन्तरी जैसे ऋषि ने भी इस प्रयोग को पूर्ण माना है, और नागार्जुन ने अपनी संहिता में लिखा है, कि यह प्रयोग पुत्र-प्राप्ति एवं उन्नति के लिए अपने-आप में बेजोड़ है।

प्रयोग विधि

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए श्रेष्ठ दिवस पौष शुक्ल पक्ष एकादशी, गुरुवार तद्नुसार १२/०१/६५ को है। इस दिन साधक या साधिका (पुत्र के माता या पिता या स्वयं पुत्र या पुत्री) प्रातःकाल उठकर, दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर, शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करें, और पूजा स्थान को स्वच्छ कर पूर्व की ओर मुख कर श्वेत आसन पर बैठ जाएं, बाजोट पर **गुरु यंत्र-चित्र** तथा **पुत्रोन्नति यंत्र** को स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन कुंकुम, अक्षत, दीप, नैवेद्य से सम्पन्न करें, फिर **पुत्रोन्नति माला** को गले में धारण कर लगातार ३० मिनट तक पुत्रोन्नति मंत्र का उच्चारण करते रहें। इस माला का पूर्ण चैतन्य एवं प्राण-प्रतिष्ठा युक्त होना आवश्यक है–

मंत्र

ॐ देवकी सुतगोविन्द सम पुत्रान् देहि देहि ह्यौं फट्

यह प्रयोग आप लगातार प्रत्येक माह पड़ने वाली तीन एकादशी को सम्पन्न करें, फिर माला तथा पुत्रोन्नति यंत्र को किसी पवित्र नदी, समुद्र या तालाब में विसर्जित कर दें और स्वयं आकर अथवा पत्र या फोन द्वारा अपने गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करें।

रससिद्ध खेचरी गुटिका

वायु मार्ग से किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा करना अत्यन्त रोमाञ्चक होता है। वर्तमान युग में वायुयान के निर्माण से यह क्रिया सर्वजन सुलभ सी हो गयी है . . . किन्तु आज से करड़ों वर्ष पूर्व भी इस प्रकार के विमानों का अविष्कार हो चुका था। विमान द्वारा ही नहीं वरन् पक्षियों की तरह मनुष्य भी उड़ कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था।

कैसे?

कुछ काल पूर्व 'डार्विन' नागक वैज्ञानिक ने पृथ्वी के आठ लाख पुरानी होने की घोषणा की थी, किन्तु आज विश्व में वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया, कि पृथ्वी अरबों वर्ष पुरानी है। इस पृथ्वी पर मानव ने आवश्यकता के अनुरूप विज्ञान का विस्तार किया है तथा इस विस्तार के पश्चात् समय-समय पर इसका ह्रास भी हुआ है। ह्रास का कारण चाहे सामरिक रहा हो, चाहे आंशिक प्रलय या खण्ड प्रलय आदि रहा हो, किन्तु प्राचीन महर्षियों का कार्य-क्षेत्र सम्पूर्ण विश्व रहा है, कृष्ण युजर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद इसके द्योतक हैं।

कृष्ण यजुर्वेद में जहां भारतीय स्थिति का उल्लेख अधिक है, वहीं शुक्ल यजुर्वेद में जो आज विदेश कहे जाते हैं, उनका अधिक उल्लेख है। यही बात 'कृष्ण द्वैपायन संहिता' और 'श्वेत द्वैपायन संहिता' में दृष्टिगोचर होती है।

अस्तु, हजारों वर्ष पूर्व से ही मानव की सेवा, सुश्रूषा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य रक्षणोपाय का सम्पूर्ण सांगोपांग पूर्ण चिकित्सा विज्ञान अपना अस्तित्व रखे हुए है, विश्व की समस्त चिकित्सा पद्धतियां उसकी ऋणी हैं।

यह चिकित्सा विज्ञान अथर्ववेद का ही एक अंग है और विश्व में आयुर्वेद के नाम से विख्यात है। भारत के ज्ञान-विज्ञान का इतिहास अनेक देव-दानव युद्ध, डेढ़ करोड़ वर्ष पूर्व हुए राम-रावण युद्ध तथा साढ़े पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के कथानक ऐतिहासक रूप में आज भी पढ़ने को मिलते हैं।

बहुत पुराने अर्से से कुछ काल पूर्व व आज का विशिष्ट मानव अपने आवागमन का साधन "जैत्ररथ", "खेचरी गुटिका" आदि को वनाये हुए था, और है।

प्राचीन आयुर्वेदीय रस शास्त्र (मर्क्यूरियल) में जहां पारद से हजारों प्रकार की औषधियों का निर्माण हुआ, वहीं उसी से मानव की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वर्ण निर्माण, रजत निर्माण और पारद के विमान, रससिद्ध खेचरी गुटिकाओं आदि का अविष्कार भी हुआ था।

पारद के द्वारा उड़ने वाले विगानों को 'जैत्ररथ' (जैत्र-पारद) भी कहा जाता था। इन विमानों में एक से अधिक व्यक्ति भी बैठ सकते थे, जबकि 'खेचरी गुटिका' से स्वयं धारक ही आकाश मार्ग से विचरण कर सकता था।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कौटिल्य ने तो उस समय बाजार में बिकने वाले स्वर्ण का वर्गीकरण किया है, जिसमें रससिद्ध स्वर्ण का भी नामोल्लेख है। जगद्गुरु शंकराचार्य के गुरु भगवद्गोविन्द पादाचार्य भी इस आयुर्वेदीय रसायन विज्ञान के पूर्ण ज्ञानी थे, तथा नागार्जुनादि अनेक सिद्ध, नौनाथ, चौरासी सिद्ध, बारहवीं से चौदहवीं सदी के मध्य यशोधर, सोमदेव, अनेक सन्त, योगी, मुनि भी इस ज्ञान के रखवाले रहे हैं। इस ज्ञान का विस्तार योग्य पात्र नहीं मिलने से व परम्परागत रहने से रुका।

आयुर्वेद के रस शास्त्र के ग्रंथों में अनेक प्रकार की गुटिकाओं का वर्णन मिलता है, किन्तु क्रिया पक्ष को उन वैज्ञानिकों ने गुप्त ही रखा, क्योंकि उन्हें योग्य व्यक्ति के हित से अधिक विचार उस अयोग्य व्यक्ति का रहता था, जो कि उसका उपयोग मानव हित की बजाय अहित में नहीं कर दे।

जयपुर के ही इतिहास में दो सौ पचास वर्ष पूर्व का इतना ज्वलन्त उदाहरण मिलता है। प्रसिद्ध 'भक्तामल' नामक ग्रंथ में श्री कृष्णकान्त पयहारी बाबा का सूक्ष्म वर्णन मिलता है, जिन्हें छोटे

नाम से 'पयहारी बाबा' कहा जाता रहा। वे दुग्धाहार ही करते थे तथा रामानन्द सम्प्रदाय के वैष्णव साधु थे।

पयहारी बाबा की गुफा व आश्रम जयपुर के प्राचीन गलता तीर्थ (गालव आश्रम) में अब भी मौजूद है। उस समय जयपुर की राजधानी आमेर ही थी तथा वहां की एक रानी 'बाला' उनकी शिष्या थी। यहां के महाराणा शैव थे और पयहारी बाबा वैष्णव थे तथा नृसिंह की उपासना करते थे।

शिष्या बाला की भक्ति पर वे बड़े प्रसन्न थे तथा रानी बाला की इच्छा थी, कि वह जगदीश पुरी के दर्शन करे। पयहारी बाबा ने उन्हें एक रससिद्ध खेचरी गुटिका दी और उसकी प्रयोग विधि वैष्णव मत से बतलाई। बाला रानी ने नित्य पुरी जाकर जगदीश भगवान के दर्शन-झांकी का व्रत ले लिया तथा सैकड़ों मीलों का फासला वह इस गुटिका के माध्यम से क्षणों में ही तय कर लेती थी।

एक बार बाला के पति महाराजा ने भी जगदीश पुरी की यात्रा की, और जाते समय उन्होंने रानी से भी साथ चलने को कहा, तो रानी ने अपने प्रिय पति से कहा, कि मैं मार्ग में इतने दिन विताऊंगी, तो मेरे नृसिंह की पूजा कौन करेगा? अतः मैं गुरु-कृपा से आपको वहीं मिल जाऊंगी।

नृसिंह की एक दिव्य मूर्ति भी पयहारी बाबा ने उसे दी थी। उसका बनवाया प्राचीन नृसिंह मंदिर आज भी अजमेर के प्राचीन राज-प्रसाद के पास में विद्यमान है, किन्तु जयपुर के भूतपूर्व महाराजा सवाई मानसिंह जी के समय में उस ऐतिहासिक मूर्ति की चोरी हो जाने से अब उस मंदिर के महत्व व रख-रखाव में कमी आ गई है।

महाराजा जिस दिन व जिस समय प्रातः मंदिर में जगन्नाथ जी के दर्शन करने गए, तो उस समय आगे खड़ी होकर बाला रानी भगवान के ध्यान में मग्न थी, और वह सुधबुध खोकर मीरा की तरह ही भगवान के दर्शन आत्मविभोर होकर कर रही थी। महाराजा ने अनजाने में कह दिया एक तरफ हो जाओ, तो हम भी दर्शन कर लें। पति की आवाज पहिचान कर उसने पीछे मुड़कर देखा, तो राजा आश्चर्य में पड़ गए — तुम! . . . यहां कैसे आ गई? तब रानी ने अपनी रससिद्ध गुटिका दिखा कर कहा, कि गुरुजी से मुझे आशीर्वाद के रूप में यह गुटिका प्राप्त है, और इस गुटिका के माध्यम से मैं रोज ही यहां दर्शन करने आती हूं, यह रहस्य मैंने आपको आज ही बतलाया है।

बाला ने अपना सारा जीवन भक्ति-भाव में ही विताया।

नृसिंह मंदिर के अतिरिक्त बाला ने एक बगीचा, जिसमें उसने प्याऊ, तिबारा व शिवालय भी बनवाये ये जयपुर व अजमेर के राजमार्ग पर आज भी 'बाला' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

इसी प्रकार की रससिद्ध गुटिका का प्रयोग बाबा अर्जुनदास के पास भी था, जो लेखक के पितामह श्री बालानन्द मिश्र से बाबा अर्जुनदास को मित्र की भेंट के रूप में प्राप्त हुआ था।

श्री अर्जुनदास को भी बाला रानी की तरह ही आवागमन व आकाश-विचरण की सिद्धि प्राप्त थी।

गृहस्थ जीवन में रससिद्ध गुटिका का उपयोग कम ही लोगों ने किया है, किन्तु लेखक को परम्परागत ही इसकी क्रिया पद्धति का ज्ञान प्राप्त हुआ।

तुम! . . . यहां कैसे आ गई? तब रानी ने अपनी रससिद्ध गुटिका दिखा कर कहा, कि गुरुजी से मुझे आशीर्वाद के रूप में यह गुटिका प्राप्त है, और इस गुटिका के माध्यम से मैं रोज ही यहां दर्शन करने आती हूं, यह रहस्य मैंने आपको आज ही बतलाया है।

यह जानने की उत्सुकता मुझे तब हुई जब मुझे सन् १९६४ में आयुर्वेद के अध्ययन काल में 'द्रव्य गुण' की यात्रा में हरिद्वार, ऋषिकेश व बद्रीनाथ के क्षेत्रों की वनस्पतियों को देखने का अवसर मिला।

उस समय की एक घटना का संस्मरण जब भी होता है, तो लेखक को आज भी रोमाञ्च होता है। हरिद्वार के क्षेत्रीय वनों की जड़ी-बूटियों का परिचय प्राप्त कर दस रोज बाद हमारा दल ऋषिकेश गया, वहां एक दिन छात्रों को ठहरने का अवसर मिला तथा दल के अध्यक्ष थे प्रोफेसर ईश्वरदास स्वामी, जिनका अभी मार्च १९८३ को स्वर्गवास हुआ था।

ऋषिकेश में भारी सामान व हरबेरियम आदि के बोझ को रखकर हल्के सामान के साथ (अक्टूबर के महिने में) बद्रीनाथ मार्ग में गमन किया। गरुड़ चट्टी, फूल चट्टी व केशर चट्टी तक के वनौषधि क्षेत्रों को देखने के बाद सायंकाल हो जाने से वहीं भोजनादि व रात्रि विश्राम किया।

प्रातः शौच के लिए हमारे ग्रुप के दल के अध्यक्ष श्री ईश्वरदास स्वामी के साथ हम तीन छात्र भी निकले - श्री बिहारी लाल पाठक व श्री भगवान सहाय शर्मा और स्वयं लेखक। श्री स्वामी के साथ दूर तक कुछ वनस्पतियां देखते हुए हम बहुत आगे तक निकल गए, क्योंकि गुरुदेव का तो वह सारा क्षेत्र ही परिचित था और वे प्रतिवर्ष छात्रों को ज्ञान प्राप्त कराने के लिए वहां के क्षेत्र में घुमाते थे।

एक दर्रे जैसी जगह के पास, पेड़ों के झुरमुट की ओर से एक दुबला-पतला। केवल लंगोटधारी मानव सर्राटे से उड़कर जाते हुए नजर आया, तो हम सभी सहम गए। इस घटना के पश्चात् श्री स्वामी ने कहा — कोई संत उड़कर गए हैं, यह तो सिद्ध क्षेत्र है।

शौच करके लौटते समय दूसरे मार्ग से आये, तो एक जगह गंगा में दो साधु स्नान कर रहे थे। हमने उनसे इस घटना के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा, कि एक मुनि बाबा हैं, वे सिद्ध हैं और रोज उड़कर बद्री भगवान के दर्शन करने जाते हैं तथा मुनि बाबा का मिलना व उनके दर्शन, उनकी इच्छा के बिना किसी को नहीं होते।

यह वृत्तान्त यात्रा से लौटने के पश्चात् मैंने केवल अपने पिताजी को बतलाया, तब उन्होंने कहा — एक रससिद्ध खेचरी गुटिका होती है . . . और वह मुझ को भी ज्ञात है, मेरे पिता व बाबा आदि को भी इसका पूरा ज्ञान था, तथा तुम्हारे पितामह ने ही बाबा अर्जुनदास को यह सिद्ध कराई थी। उस गुटिका के माध्यम से कलकत्ता, बम्बई जैसे शहर की यात्रा भी उनको क्षणिक मात्र ही लगती थी। बाबा अर्जुनदास ने १०५ वर्ष तक जीवित रहने के बाद जीवित समाधि ली थी।

मैंने पिताजी से प्रश्न किया— आपने इसको क्रियात्मक रूप क्यों नहीं दिया?

उन्होंने कहा — इसमें परिश्रम अधिक होता है और एक बार सिद्ध करने के बाद तो यह हमेशा की वस्तु है।

पिताजी श्री रामगोपाल मिश्र को अपने पिता के पास बाल्यकाल के बाद रहने का भी अवसर कम मिला, क्योंकि पितामह वैद्य होने के साथ पौराणिक आचार्य भी थे और भारत में अनेक दूर-दूर के राजाओं, सेठ, पंडित तथा विद्वानों से उन्हें सम्मान प्राप्त था, और उनके मुख से श्रीमद्भगवत महापुराण की सप्ताह कथा श्रवण करने से सभी को बहुत आनन्द प्राप्त होता था।

मैंने उनसे इस गुटिका को बनाने की विधि पूछी तो उन्होंने कुछ पुराने कागज देते हुए कहा कि इन पन्नों पर यह विधि लिखी है, किन्तु तुम इसे किसी योग्य गुरु के निर्देशन में ही बनाना, क्योंकि रसायनिक क्रिया करते समय विशेष सावधानी की आवश्यकता रहती है, थोड़ी सी भी चूक से लाभ के स्थान पर हानि हो सकती है। इस परेशानी से बचने के लिए ही योग्य गुरु का सान्निध्य होना आवश्यक है।

रसायनिक क्रिया सम्पन्न करने के लिए उसके क्रिया पक्ष की जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक होता है और इसके लिए आवश्यकता होती है गुरु की, जिसे इस क्रिया का पूर्ण ज्ञान हो. . . जिसने यह क्रिया खुद सम्पन्न की हो।

इसे बनाने कि विधि विभिन्न ग्रंथों में इसके वैज्ञानिकों ने दे रखी है, किन्तु क्रिया पक्ष की गुत्थी उन वैज्ञानिकों ने हरेक को नहीं बतलाई।

वर्तमान में भी गुप्त रूप से अनेक होंगे, किन्तु प्रकट रूप में **''श्री निखिलेश्वरानन्द जी''** को ही इसकी १०८ पद्धतियों का सम्पूर्ण ज्ञान है।

यदि तुम्हें कभी इस गुटिका को निर्मित करने की विधि किसी सद्गुरु ने समझा दी, तो यह तुम्हारा भाग्य है। मैं तुम्हें इस रससिद्ध खेचरी गुटिका को धारण करने की विधि बता देता हूं—

१. मुख में धारण करने से खेचरी गति होकर क्षण मात्र में कई योजन भ्रमण करता है। वायु बीज युक्त मंत्र का स्मरण करते रहना चाहिए।
२. गले में डालकर हृदय प्रदेश स्पर्श होते रहने से वाक्सिद्धि तथा मुख से विद्वता पूर्ण वाक्यों का उच्चारण तथा कवित्व शक्ति उत्पन्न होती है।
३. बाहु में धारण करने पर राजा, प्रजा किसी के भी सामने खड़े होने पर अपूर्व सम्मोहन होता है।

जगद्गुरु शंकराचार्य के गुरु पूज्यपाद भगवत् गोविन्दपादाचार्य ने कुछ गुटिकाओं का वर्णन किया है— अमर सुन्दरी, मृत संजीवनी, वज्रिणी, खेचरी। ''सूत सौरभ तंत्र'' में भी कुछ गुटिकाओं का वर्णन था, किन्तु दुर्भाग्य से यह अमूल्य ग्रंथ लुप्त है। ''रसार्णव तंत्र'' में भी कुछ गुटिकाओं का वर्णन है, किन्तु इस लेख में उल्लिखित रससिद्ध खेचरी गुटिका अधिक महत्वपूर्ण है, और गुरु गोरखनाथ को भी यही गुटिका सिद्ध रही है।

— डॉ० सन्तोष कुमार मिश्रा,
जयपुर (राज.)

जब जीवन में विष घुल जाता है और
समस्याओं के हल सही नहीं सूझते
या फिर
किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग
करवा दिया जाय तो. . .
विशेष
तंत्र रक्षा कवच
रोजमर्रा
की समस्याओं
का विश्वसनीय
निवारण
* कर्जे से पीछा छूट ही न रहा हो
* शत्रु संकट, प्राण संकट घेरे ही रहते हैं
* पत्नी के साथ गर्भपात की स्थिति बनना
* विवाह में बात बन - बनकर बिगड़ जाए
* घर या किसी निर्माण कार्य में बात न बन पाना
* निरन्तर बीमार बने रहना और शरीर सूखता जाना
* ऐसा रोग जो डॉक्टरों की समझ में भी न आ रहा हो
* बार - बार ट्रांसफर की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा हो या अधिकारी अनायास विपरीत बने रहते हैं
या फिर झगड़े, झंझटों में बार- बार फंस जाना, मुकदमे-
बाजी जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं।
तंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . . उनमें से किस तरीके से प्रयोग
कराया गया है, उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है।
विशेष तंत्र रक्षा कवच
संस्थान के योग्यतम विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्र-सिद्ध रक्षा कवच के रूप
में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास . . . .
(न्यौछावर - ११०००/- मात्र)
जो वास्तव में अनुष्टान का व्यय मात्र ही है।
सम्पर्क :
मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.),फोन-०२९१-३२२०९
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोनः ०११-७१८२२४८,फेक्स-०११-७१८६७००
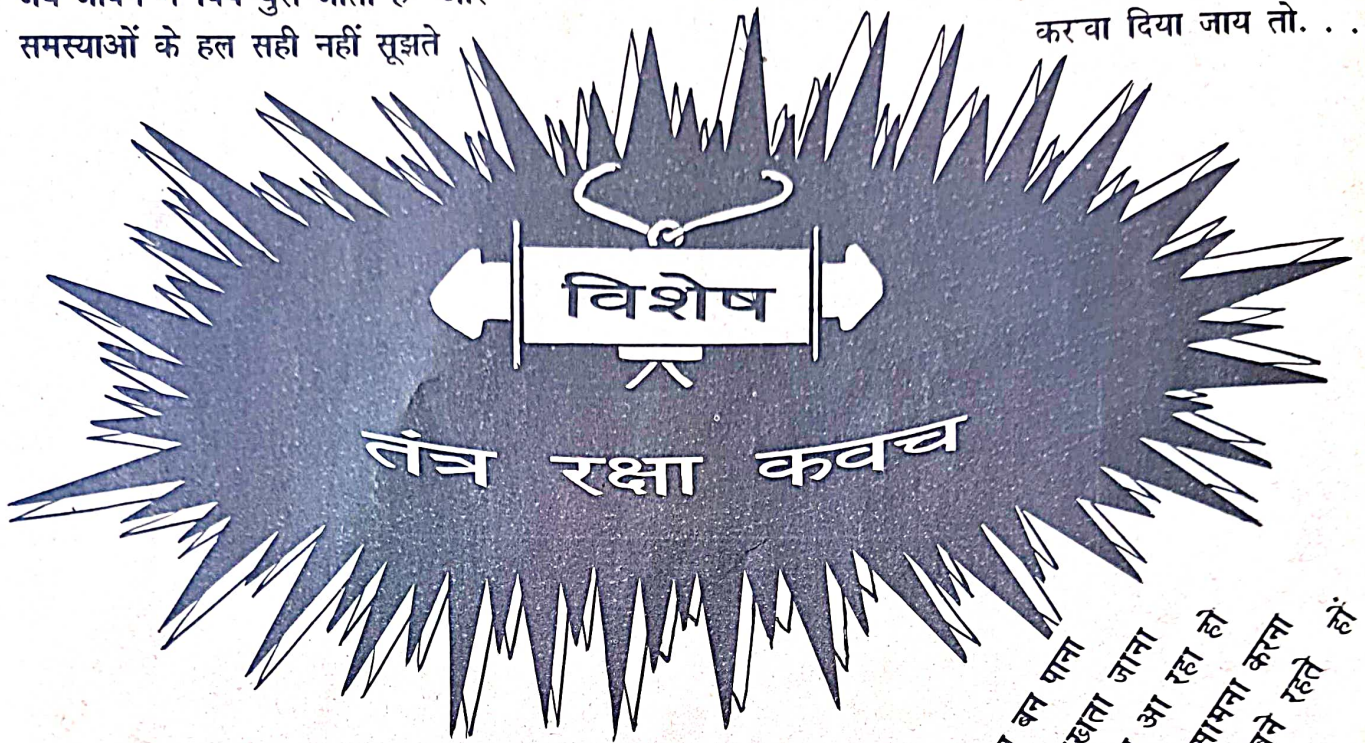
जिसे प्राप्त करने के बाद उसने मेरे सामने सनसनाहट भरे सौन्दर्य के साथ नृत्य किया . . . .

मेरी रुचि सौन्दर्य साधनाओं में प्रारम्भ से ही रही है और इस बात को मैं अच्छी तरह जानता था कि यदि जीवन को सरसता से जीना है, तो सौन्दर्य को जीवन में स्थान देना ही पड़ेगा। सौन्दर्य की बात चले तब चाहे सीधे-साधे या कुछ घूम कर स्त्री-सौन्दर्य की बात न हो- यह सम्भव ही नहीं, होता तो यूं है कि हमने ''सौन्दर्य'' शब्द बोला नहीं और हमारे मानस में कोई न कोई नारी बिम्ब तैर गया, चाहे वह किसी देखी हुई नारी का हो या नारी के रूप में हमारी जो भी कल्पना हो।

मैंने अपनी साधनाओं का आरम्भ अप्सरा साधनाओं से किया। अप्सरा साधनाओं में ही सबसे प्रमुख साधना उर्वशी और मेनका की है। ये दोनों शब्द तो 'अप्सरा' शब्द के पर्यायवाची ही बन गए हैं। मैंने पहली बार ही 'उर्वशी अप्सरा साधना' अपने हाथ में ली और पूर्ण विधि-विधान के साथ साधना सम्पन्न की, लेकिन साधना की समाप्ति पर प्रत्यक्षीकरण तो दूर, कोई अनुभूति तक नहीं हुई। मैंने हिम्मत नहीं हारी और दूसरी बार फिर इस साधना को दोहराया, लेकिन कुछ मादक गंध और अपने आस-पास किसी के चलने की ध्वनि, पायजेबों की खनक के अतिरिक्त कुछ नहीं पाया, **जबकि मेरा लक्ष्य था कि मैं उर्वशी को अपने सामने साकार करूंगा ही।** दो- तीन बार और प्रयास करने के बाद कुछ खिन्न और कुछ उदास होकर मैंने उर्वशी अप्सरा साधना को छोड़ दूसरी अप्सरा साधनाओं में ध्यान केन्द्रित किया।

उर्वशी साधना से अलग हट मैंने मृगाक्षी, पुष्पदेहा और शशिदेव्या अप्सरा साधनाएं पूर्णता से सम्पन्न की, उन्हें अपने सामने प्रत्यक्ष किया, उनका सुखभोग किया, उनके संसर्ग का भरपूर आनन्द उठाया और जैसा चाहा उसी प्रकार अपनी मनोवांछित कामनायें पूरी करवाई, लेकिन मैं अपने स्वप्न और सौन्दर्य की पुञ्जीभूत स्वरूपा कही जाने वाली उर्वशी को नहीं भूल सका। जब से मैंने सुना था कि उसका सारा बदन मानो गुलाब के फूलों को लेकर बनाया गया है, तब से मैं उस ताजगी भरे सौन्दर्य को देखने की ललक मन में संजोये ही था।

कुछ वर्ष पूर्व की बात है जब मैं नवरात्रि शिविर में भाग लेने जोधपुर गया था, तब शिविर प्रारम्भ होने से पूर्व ही पूज्य गुरुदेव से अपनी कामना स्पष्ट कही, और उन्होंने भी यही कहा कि **निःसन्देह उर्वशी साधना में पूर्णता पाये बिना अप्सरा साधना अधूरी ही है,** क्योंकि जिस अप्सरा का रूप, यौवन, कला, लास्य और सबसे बड़ी बात मन में हिलोर पैदा करने की शैली अनूठी है, उसी का नाम है उर्वशी। उर्वशी यानि उर में बसी, हृदय में बस छा ही जाने वाली रूपवती! और यों भी मेरे मन में एक चुनौती समा गई थी, कि एक बार उस सौन्दर्य का दर्शन करूं, जिसके बारे में कहा जाता है कि उसने बड़े-बड़े ऋषियों तक का मान-मर्दन कर दिया है। देखूं, आखिर क्या है उसके रूप में, जादू में और उसके शरीर के लावण्य में?

मेरी इच्छा थी कि मैं इस साधना के गुप्त रहस्य, सूत्रों, मुद्राओं और विशिष्ट मंत्र को प्राप्त करूं, किन्तु उस दिन पूज्य गुरुदेव किसी बात से बेहद प्रसन्न थे और मुझसे बोले— **''क्या करेगा तू शास्त्रों को पलट कर, जबकि तेरा उद्देश्य तो उर्वशी को प्रकट करना और उसे सिद्ध करना ही है, जिसे मैं दीक्षा देकर यों भी पूरा कर सकता हूं और उर्वशी को तेरे सामने नाचने के लिए बाध्य कर सकता हूं।''** मैं नहीं जानता था कि दीक्षा के इतने अधिक पक्ष भी होते हैं। मैं दीक्षा का अर्थ बस गुरु-शिष्य सम्बन्ध और आध्यात्मिक जीवन तक ही लेता था।

नवरात्रि का प्रारम्भ हो चुका था और पूज्य गुरुदेव ने मुझे दो दिन बाद जब शुक्रवार पड़ रहा था उस दिन सायंकाल आने को कहा। मैंने वहीं जोधपुर में एक कमरा ले लिया था। मैं उनकी आज्ञानुसार शुक्रवार की शाम को स्नान कर अच्छे और नये वस्त्र पहिन, अपने को सुसज्जित कर उनके पास गया और उन्होंने लगभग २० मिनट तक मुझे उर्वशी अप्सरा साधना हेतु दीक्षित किया तथा एक गोपनीय मंत्र देकर रात के दूसरे प्रहर में जपने की आज्ञा दी। यह मंत्र एकान्त में जपा जाना था और आसन, दिशा, माला, यंत्र आदि किसी भी प्रकार का कोई बन्धन नहीं था। विशिष्ट शक्तिपात युक्त दीक्षा प्राप्त कर मैंने उनका चरण स्पर्श किया और आशीर्वाद प्राप्त कर अपने कमरे पर आकर उचित समय की प्रतीक्षा करने लगा जब मैं मंत्र जप प्रारम्भ करूं।

रात के लगभग साढ़े दस बज चुके थे और वातावरण धीरे-धीरे शांत हो गया था, जोधपुर यों भी भौतिकता से कटा हुआ शांत और मादकता से भरा सुन्दर नगर है, जिसमें रातें और विशेष रूप से चैत्र की रातें किस तरह से नशीली बनकर उतरती हैं इसे तो वे ही जानते हैं, जिन्होंने इस नगर को इस दृष्टि से देखा हो।

. . . कहीं दूर कोई राजस्थानी लोकगायक अपनी नशीली आवाज में कोई सुरीला लोकगीत गा रहा था और राजस्थानी वाद्ययंत्रों के साथ उसका स्वर और भी कसक व कशिश से भर कर सारे वातावरण में मिलन की अंगड़ाइयों जैसा कुछ कहता-सुनता सा लग रहा था, एक अजीब सी खुमारी चारों ओर बिखर गई थी, मानो पूरी प्रकृति किसी के आगमन के लिए फूलों की पंखुड़ियों को बिखेर गयी हो। लग रहा था—

नूर ही नूर है किस सम्त उठाऊं आंखें
हुस्न ही हुस्न है ता हद-ए-नजर आज की रात

दीक्षा का प्रभाव, उर्वशी के आने की हलचल और यौवन की अठखेलियां— सब कुछ मिलकर फ़िज़ां में बिखरती जा रही थी। पूर्णिमा आने में तो अभी देर थी लेकिन वह अधखिला चांद ही पूर्णिमा की प्रतीक्षा में मादक हो गया था और अपनी मादकता, अपनी चांदनी मेरे ऊपर छलका रहा था। मन में उमंग हो, किसी की प्रतीक्षा हो, तो चांदनी उसमें एक ऐसा नशीलापन घोल ही देती है। मंत्र जप तो मेरे होंठ कर रहे थे, पर मेरा मन और तन प्रतीक्षा कर रहा था किसी की थिरकन और गुनगुनाहट का। प्रेम में यही तो होता है, कोई नहीं भी आता है, फिर भी उसके आने का पता बहुत पहले से ही चल जाता है, यानि कि . . . .

अभी आई भी नहीं कूचा-ए-दिलबर से सदा
खिल गई आज मेरी दिल की कली आप ही आप

एक मीठी कसमसाहट, ऊहापोह में धीरे-धीरे रात और गहरी हो गई, चांदनी और भी नशीली हो गई . . . तैरते हुए बादल चांद पर यूं छा रहे थे कि लगने लगा चांद मुंह छुपाने के लिए कोई परदा कर रहा है, कि कैसे देखेगा वह दो प्रेमियों का मिलन! ठंडी हवायें बिखर-बिखर कर चल रही थी, जो शरीर को तो छू रही थी पर मन को कितना कचोट रही थी— यह तो वे ही समझ सकते हैं जो प्रतीक्षा में कभी तड़पे हों।

आहिस्ता-आहिस्ता मुझे छत के एक कोने में एक नारी आकृति आती हुई दिखाई दी। मैंने ध्यान नहीं दिया— सोचा कि शायद मकान मालिक के घर की कोई स्त्री होगी, लेकिन पायलों की रुनझुन मुझे चौकन्ना कर रही थी। मेरा मन कह रहा था कि हो न हो कोई और ही बात है। धीरे- धीरे वह आकृति साफ दिखने लगी और मैं घबरा कर खड़ा होने ही वाला था, तब तक पूज्य गुरुदेव की चेतावनी याद आ गई, कि तुम्हें न तो किसी भी हाल में आसन छोड़ना होगा और न उसे स्पर्श करना होगा। तन को मैंने बांध लिया, लेकिन मन को नहीं बांध सका। वह पायलों की रुनझुन जिसके पांव से आ रही थी, धीरे-धीरे मेरे पास आ गयी और टकटकी बांध कर मुझे देखती रही। उसकी आंखों में कुछ आश्चर्य था, कि भला कौन है यह, जिसने मुझे यूं आने पर मजबूर कर दिया? कुछ शरम से झुकी हुई आंखें, कुछ बार-बार बोलने को उठती आंखें, कुछ चौकन्नी सी आंखें, कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा! उसके चेहरे की सुन्दरता का मैं वर्णन करूं भी तो कैसे, उपमा दूं भी तो किससे? कोई तो ऐसी फिर नहीं मिली, जिससे उसके रूप की तुलना कर सकूं।

. . . कस कर बांधी गई वेणी बालों के घनेपन को और भी घना कर रही थी और उस पर फूलों का गजरा। गर्वीली गर्दन और सुडौल कंधों के नीचे आम अप्सराओं के विपरीत एक पीले रंग के कढ़े हुए रेशमी वस्त्र से कसकर बांधा हुआ वक्षस्थल, जो विद्रोह कर रहा था उस छोटे से टुकड़े से बाहर आने के लिए! समझ में ही नहीं आ रहा था कि उसने अपने सौन्दर्य को छुपाया है या प्रदर्शित किया है! एक अजब सा हुस्न, जो कसक में भरा हुआ था, मेरे चारों ओर कसमसा कर बोल उठा . . . .

कलियां चौंकी हैं मुस्कराओ तुम भी
शाखों में लचक है कसमसाओ तुम भी
हां बांध रही है रात जूड़ा अपना
माथे से खुनक लटें हटाओ तुम भी

. . . गोरी दूधिया कमर, जिसमें कई-कई बल पड़े जा रहे थे, गहन नाभि प्रदेश और उससे दो-तीन अंगुल नीचे तक जाकर बंधा हुआ घुटनों तक का गहरे जामुनी रंग का घाघरा, सुनहरे तारों से और भी अधिक जगमगा

रहा था, जिससे किसी के भी मन में लहर उतरती चली जाए। नीचे झलकती हुई ऐसी गोरी पिंडलियां और टखने, जिन्हें छूकर देखने का मन चाहे, कि क्या वास्तव में ही किसी नारी देह का रंग ऐसा भी हो सकता है?

अविश्वसनीय सा लगता वह दृश्य, जब वह कभी अपनी वेणी को सुधार रही थी, तो कभी कान में पड़े हुए छोटे से बुंदे को, कभी नाक की कील ठीक करती, तो कभी अपने कंगनों को बांहों में घुमाने-फिराने लगती, एक-एक हरकत से उसकी ओर से मधुर आमन्त्रण खिलते चले आ रहे थे।

और इसके बाद भी वह एक झिझक और कोमलता का आवरण लपेटे अपने सौन्दर्य को द्विगुणित किए जा रही थी। मिलन की लज्जा और प्रेम का अनोखा सम्मिश्रण ही तो बनी जा रही थी वह . . .

एक रंगीन झिझक एक सादा पयाम
कैसे भूलूं किसी का वो पहला सलाम
फूल रुखसार के रसमसाने लगे
हाथ उठा कदम डगमगाने लगे

लेकिन मेरी परीक्षा यहीं पर समाप्त नहीं हुई। कुछ क्षण तक यूं ही निहारने के बाद और मूक निमन्त्रणों के बाद उसने आहिस्ते से एक नृत्य प्रारम्भ कर दिया और मैं शीघ्र ही उस नृत्य-नाटिका के विषय को समझ गया। जो कुछ पुरुरवा ऋषि के जीवन में घटित हुआ था, वह उसे नृत्य के माध्यम से प्रकट कर रही थी। उसके होठों पर कुछ तीखी और कुछ मुझसे छेड़खानी सी करती मुस्कान थी, कनखियों से देखना तो जारी था ही। हल्की गति से अपने भरे-भरे अंगों की थिरकन, पद संचालन के साथ जब उसने अद्‌भुत लास्य व काम मुद्राओं के माध्यम से नृत्य के भाव बताने प्रारम्भ किए, तब ऐसा लग रहा था कि कामदेव और रति दोनों एक साथ उतर कर उसकी देह में आ समाए हों। **कामसूत्र में वर्णित जिन मुद्राओं को उसने अपने हाव-भाव से मुखरित किया, उसे याद कर आज एकान्त में पुरुष होते हुए भी मेरा चेहरा लाल पड़ जाता है।** जाहिर था कि वह अपनी भावनाओं और अपने समर्पण से मुझ पर एक जादू सा कर देना चाह रही थी . . .

वार वार उसका वह करम फरमाना
चुपके-चुपके मेरे करीव आ जाना
जाने क्या-क्या वो मुझको समझाना
और फिर आप ही शरमा जाना
मुख्तसर कितनी थी वो रात न पूछ . . .

चालीस मिनट तक नृत्य चलता रहा होगा और मैं उसकी सुडौल देह हल्की चांदनी में यूं ही बिखरता और तड़पता देखता रहा, मानो कोई मछली जल से निकल कर रूपहली वालू पर छटपटा रही हो। **उसकी सफेद बांहें, दूध सी गोरी कमर और केले के पत्ते की तरह चिकनी पीठ, भारी नितम्ब और सभी की एक साथ लयवद्ध थिरकन आज भी मेरी स्मृति में ज्यों की त्यों थिरक रही है।**

अपने कामोत्तेजक नृत्य के बाद वह मंथर गति से चलती हुई मेरे पास आई. . . ठिठकी . . . मुस्कराकर कुछ कहना चाहा और पता नहीं क्या सोच कर कुछ शरमा कर उसी मंथर गति से अपनी पायलों और करधनी से मधुर ध्वनि करती हुई अंधेरे में जाकर विलीन हो गई। मैं उसके जाने के बाद एक-डेढ़ घंटे तक उसके नृत्य, उसकी सुडौल देह, देह गंध, उसकी आमन्त्रण और उपालम्भ भरी दृष्टि याद कर अस्त-व्यस्त होता रहा और शेष रात करवटें बदल-बदल कर काटी।

कैसे कहूं कि उसके अन्दर क्या कुछ नहीं समाया था, कुछ ही देर की मुलाकात में बहुत कुछ तो उसने कह दिया था। सौन्दर्य, प्रेम, कशिश, तड़प, इकरार, इसरार, अपनापन और भी पता नहीं क्या-क्या उसने अपनी अदाओं से कह दिया था . . .

वह आंखें झुकीं वह कोई मुस्कराया
पयाम-ए-मुहब्बत सुना चाहता हूं मैं
वह मखमूर नजरें वह मदहोश आंखें
खराब-ए-मुहब्बत हुआ चाहता हूं मैं

दूसरे दिन सुबह मैं पूज्य गुरुदेव के सामने था। सफलता का आनन्द, मस्ती की लहर, शर्म से झुकी आंखें लेकर, जबकि मेरे होंठ मुस्करा रहे थे शरारत से। उन्हें क्या बताना, उनसे भी भला कोई क्षण छुपा है? उन्होंने हास्य युक्त होकर पूछा **क्यों क्या हुआ तेरी उर्वशी का?** मैं झेंपता और सुरूर में भरा खड़ा रहा। पूज्य गुरुदेव ने मुझे आशीर्वाद दिया कि तुमने जिस संयम और मर्यादा का परिचय दिया, वही साधक की श्रेष्ठता है, और प्रसन्न होकर उन्होंने वह दुर्लभ रहस्य भी दिया, जिसके माध्यम से मैं जब भी चाहूं, जहां भी चाहूं उर्वशी को अपने समक्ष प्रत्यक्ष कर सकता हूं और ऐसा प्रायः नित्य ही करता हूं। यूं भी यदि सही पद्धति से उर्वशी साधना सम्पन्न कर ली, प्रेम करने की ठान ही ली, मन में कोई बुजदिली नहीं आने दी, तो उर्वशी भी एक बार प्रगट होने के बाद बार-बार प्रकट होती ही है, मिलने को आतुर रहती ही है क्योंकि . . .

जज्बा-ए-इश्क सलामत है तो इंशाअल्लाह
कच्चे धागे में चले आयेंगे सरकार बंधे

● विद्यापति
दिल्ली

दैनिक साधना विधि
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली
मूल्य : ९०/-
(डाक व्यय अतिरिक्त)
जीवन में पूर्णता प्राप्त करने का मार्ग साधना से प्रारम्भ होकर कुण्डलिनी जागरण की पूर्ण स्थिति में पहुंचना है। साधना के माध्यम से जीवन के कष्ट कटते हैं और उदय होता है नये, श्रेष्ठ, अहोभाव, परिपूर्ण आनन्ददायक जीवन का।
क्या आप नित्य प्रति साधना करते हैं?
– विशिष्ट साधनाओं के प्रारम्भ में क्या प्रक्रिया होनी चाहिए, क्या आपको इसका ज्ञान है?
– क्या निरन्तर पूजा, अर्चना के बाद भी आपको फल- प्राप्ति नहीं होती है?
– स्पष्ट है, कि आप को चाहिए शुद्ध साधनात्मक ज्ञान, दैनिक साधना विधान।
– जिसे सम्पन्न कर आप कोई भी विशेष साधना प्रारम्भ कर सकते हैं।
– हजारों, लाखों शिष्यों, पाठकों, साधकों की मांग को ध्यान में रखते हुए सरल भाषा में दैनिक साधना का विधान ।
परम पूज्य गुरुदेव ''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी'' के आशीर्वाद से युक्त
उपलब्ध
दैनिक साधना विधि
आशीर्वाद : डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली
प्राप्ति स्थान : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन - ०२९१-३२२०९
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

क्या सूर्य के बिना जीवन की कल्पना की जा सकती है? सूर्य ही तो ऐसे प्रत्यक्ष देव हैं, जो जगत के नेत्र हैं, जो काल-चक्र के प्रणेता हैं। सूर्य से ही दिन-रात्रि, घटी, पल, मास आदि की गणना की जाती है, सूर्य से ही तो संसार प्रकाशमान है, और सूर्य के चारों ओर ही तो सभी ग्रह और यह पृथ्वी निरन्तर परिक्रमा करती है, सूर्य से प्रकाशित तेज के कारण ही तो इस संसार में ऊष्मा और तेज है, तात्पर्य यह है, कि सूर्य ही जीवन, तेज, ओज, बल, यश, नेत्र, श्रोत, आत्मा और मन के कारक हैं, और तीनों लोक सूर्य के ही तो अंग हैं।

अन्य देवताओं को तो साधना-उपासना द्वारा, उनके स्वरूप को भीतर ही भीतर भावना द्वारा ही समझा जा सकता है, लेकिन सूर्य देव तो नित्य-प्रति प्रत्यक्ष होने वाले, साधक के सामने ही स्थित हैं, तो इनको क्यों न सिद्ध किया जाए? सूर्य की साधना साधक के भीतर ज्ञान और क्रियाशक्ति का उद्दीपन करती है, यह तेज कभी शान्त नहीं हो सकता, सूर्य की शक्ति संज्ञा, कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया का प्रारम्भ नहीं, अपितु प्रारम्भ से पूर्णता तक है।

साइंस ने भी इस बात को स्वीकार किया है, कि सूर्य की रश्मियों द्वारा रोग प्रतिरोधक क्षमता मानव के शरीर में उत्पन्न होती है, और सभी असाध्य बीमारियों में सूर्य की पूजा-उपासना लाभप्रद सिद्ध होती है।

दिन-रात, ऋतु परिवर्तन, पृथ्वी के सभी क्रियाकलाप सूर्य पर ही आधारित होते हैं। प्रत्येक माह सूर्य एक राशि से दूसरी राशि पर संक्रमण करता है और उस राशि पर एक माह तक रहता है। इस प्रकार प्रत्येक माह सूर्य संक्रान्ति आती है। इन संक्रान्तियों में सर्वश्रेष्ठ संक्रान्ति **''मकर संक्रान्ति''** को माना गया है। इस संक्रान्ति दिवस पर ही शिशिर ऋतु, वसन्त ऋतु में परिवर्तन होता है, तथा उत्तरायण सूर्य दक्षिणायन हो जाते हैं।

सूर्य साधना-उपासना

इन विशेष क्रियाओं के फलस्वरूप ही सभी तांत्रिक ग्रंथों, उपनिषदों, पुराणों एवं शास्त्रों में मकर संक्रान्ति सूर्य साधना का विशिष्ट सिद्धिदायक पर्व माना गया है। अतः इस विशेष दिवस पर सभी योगी, ऋषि, महर्षि, संन्यासी तथा गृहस्थ सूर्य की साधना, आराधना कर पूरे वर्ष पर्यन्त अपने-आप को रोग मुक्त व स्वास्थ्य युक्त बनाये रखते हैं।

मकर संक्रान्ति का साधना क्षेत्र में अद्वितीय महत्व है, क्योंकि यह एक ऐसा समय है, जब सूर्य उस कोण पर आ जाता है, जहां से वह अपनी पूर्ण तेजस्विता मानव की देह में उतार सकता है।

मनुष्य शरीर विभिन्न प्रकार के राग-द्वेष, छल - कपट आदि से भरा हुआ है, हमसे जाने- अनजाने निरन्तर गलतियां होती ही रहती हैं, और इसके फलस्वरूप उन दोषों के समावेश से हमें साधना में सफलता नहीं मिल पाती। इसलिए सिद्धाश्रम ने यह व्यवस्था की है कि यदि मकर संक्रान्ति के अवसर पर **''सूर्य साधना-उपासना''** सम्पन्न कर ली जाए,

"सूर्य के समान तेजस्विता, आकर्षक चुम्बकीय व्यक्तित्व, मेधावी, विलक्षण पुत्र एवं अद्वितीय धन सम्पदा. . . सभी भौतिक - आध्यात्मिकता से परिपूर्ण पूरे वर्ष की एक अपूर्व अद्वितीय साधना. . ."

तो निश्चय ही अन्य सभी साधनाओं में सफलता प्राप्त होती ही है।

सूर्य पूजा-साधना के नियम

१. साधक कोई भी साधना करे, उसे प्रातः उठ कर सर्वप्रथम सूर्य नमस्कार करना तो आवश्यक है।
२. सूर्योदय होने से पूर्व ही साधक नित्य क्रिया से निवृत्त हो कर, स्नान कर, शुद्ध वस्त्र अवश्य धारण कर ले।
३. सूर्य की मूल पूजा उगते हुए सूर्य की पूजा ही है, और यही फलकारक है, अतः सूर्योदय के पश्चात् पूजन से कोई प्रयोजन सिद्ध ही नहीं होता।
४. सूर्य को लाल कनेर के पुष्प विशेष प्रिय हैं, अतः साधक यही पुष्प सूर्य को अर्पित करे।
५. सूर्य देव को सूर्योदय के समय पुष्पों के साथ ताम्रपात्र से तीन बार अर्घ्य देकर प्रणाम करना चाहिए।
६. रोग तथा निर्बलता से पीड़ित सूर्य-उपासक को रविवार के दिन नमक व तेल रहित भोजन केवल एक समय ग्रहण करना चाहिए।

सूर्य साधना का क्रम

रविवार के दिन प्रारम्भ की जाने वाली इस साधना के समय ऊपर लिखे हुए नियमों का पालन करते हुए, साधक अपने सामने **'सूर्य यंत्र'** को स्थापित कर, उस पर चन्दन, केसर, सुपारी तथा लाल पुष्प अर्पित करें, इसके साथ ही गुलाल तथा कुंकुम के साथ-साथ सिन्दूर भी अर्पित करें, और अपने सामने सिन्दूर को शुद्ध जल में घोल कर, दोनों ओर सूर्य चित्र बनाएं तथा पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना करें, कि—

"हे आदित्य! आप सिन्दूर वर्णीय, तेजस्वी मुखमण्डल, कमलनेत्र स्वरूप वाले, ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र सहित सम्पूर्ण सृष्टि के मूल कारक हैं, आपको इस साधक का नमस्कार! आप मेरे द्वारा अर्पित कुंकुम, पुष्प, सिन्दूर एवं चन्दन युक्त जल का अर्घ्य ग्रहण करें।"

इसके साथ ही ताम्रपात्र से जल की धारा को, अपने दोनों हाथों में पात्र लेकर, सूर्य को तीन बार अर्घ्य दें, और इसके पश्चात् **'सूर्य मणिमाल्य'** धारण कर अपने पूजा-स्थान में स्थान ग्रहण कर, पूर्व दिशा में सूर्य की ओर मुंह कर निम्न सूर्य मंत्र का १५ मिनट जप करें—

मंत्र

।।ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।।

सूर्य साधना का यह प्रयोग यदि साधक प्रतिदिन करें, तो अत्यन्त श्रेष्ठ रहता है, और उनकी समस्त साधनाएं तथा समस्त इच्छाएं पूर्ण होती हैं।

सूर्य तो आरोग्य के देव हैं, इनके सामने निर्बलता, रोग, जड़ता ठहर ही नहीं सकती, सूर्य का तात्पर्य ही आयु, बल, आरोग्य है।

नित्य प्रति सूर्य नमस्कार और प्राणायाम से शरीर का दूषित रक्त साफ होता है, और इस पूजा के निरन्तर अभ्यास से शरीर स्वस्थ, बलिष्ठ एवं दीर्घजीवी बनता है।

'गायत्री मंत्र साधना' मूल रूप से 'सूर्य साधना' ही है, जिसमें सविता अर्थात् सूर्य से बल, बुद्धि, वीर्य, पराक्रम, तेज तथा सब प्रकार से उन्नति, प्रगति की प्रार्थना की गई है।

जीवन का तात्पर्य है— "पूर्णता"। पूर्णता का तात्पर्य है – पूर्ण आरोग्य एवं सभी प्रकार से सर्वोन्नति, और सर्वोन्नति का तात्पर्य है एकाग्रता से सूर्य साधना . . .

बत्तीसा यंत्र भी सूर्य का स्वरूप माना जाता है, और इस यंत्र को स्थापित कर प्रतिदिन **'ॐ ह्रीं हंस'** बीज मंत्र का **आरोग्य वर्द्धनी माला** से जप कर, सूर्य को अर्घ्य देने से नेत्र रोग के अलावा पेट सम्बन्धित **एसीडीटी रोग, पीलिया, गठिया, शारीरिक दुर्बलता** दूर होती है।

लाल रंग की बोतल में जल भर कर, सूर्य के प्रकाश में दिन भर रख कर वह जल ग्रहण करने से पेट सम्बन्धित बीमारियां दूर होती हैं।

यह सूर्य ही है, जिसके द्वारा प्रकृति की समस्त शक्तियां मनुष्य को प्राप्त होती हैं। नवग्रहों में ये प्रथम देव हैं, इनकी साधना-उपासना विजय की साधना है।

एक दिन प्रातः जरा उठ कर, उदय होते हुए सूर्य की पूजा कर, नमस्कार कर इस साधना का आनन्द तो लें, यह आनन्द शरीर को ही नहीं मन को भी, कुण्डलिनी जागरण के बिन्दुओं को भी कंपित कर आनन्द से ओत-प्रोत कर देने वाला होता है।

मानव मन स्वभाव से ही अतिशय चंचल है, इस चंचलता का शमन कर उसे किस प्रकार अपने वश में लिया जाए, किस प्रकार इसकी इतस्ततः बिखरी हुई शक्तियों को केन्द्रीभूत कर सर्वोच्च लक्ष्य में एकाग्र किया जाए, यही राजयोग का विषय है।

हठयोग की साधना से जो साधक प्राण पर संयम कर अपने भीतर के प्रसुप्त अनन्त ज्ञान और शक्ति को जाग्रत करने के इच्छुक हैं, उनके लिये राजयोग ही सर्वश्रेष्ठ योग है।

इसी राजयोग के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालता हुआ प्रस्तुत है यह लेख—

अन्तर्जगत में मनोनिवेश

बाह्य जगत के व्यापारों पर मन स्थिर करना अपेक्षाकृत एक सहज क्रिया है, क्योंकि मानव मन प्रकृति से ही बहिर्मुखी है, परन्तु जब तक हम आंतरिक जगत का पर्यवेक्षण नहीं कर लेते, तब तक हम अपने मन के सम्बन्ध में, आभ्यान्तरिक प्रकृति के सम्बन्ध में, मानव विचारों के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जान सकते।

लेकिन मन को अन्तर्मुखी करना, उसकी बाह्य प्रकृति को रोकना, उसकी बिखरी हुई शक्तियों को केन्द्रित कर, मन पर ही उन्हें प्रयुक्त करना, जिससे कि वह अपना निरीक्षण कर सके, आन्तरिक जगत में परिभ्रमण कर सके। यह एक अत्यन्त ही दुष्कर कार्य है, जिसकी शिक्षा हमें आज तक नहीं दी गई, हमें तो मात्र बाह्य जगत में ही विचरण करना सिखाया गया है।

और राजयोग इसी अन्तर्जगत का पर्यवेक्षण करना सिखाता है, मन ही उस आन्तरिक पर्यवेक्षण का यंत्र है। यह मन अपनी शक्तियों को प्रकाश किरणों के समान यत्र-तत्र बिखेरे हुए है। राजयोग के माध्यम से इन समस्त शक्तियों को एकत्र करके मन पर ही उनका प्रयोग करना होता है। जिस प्रकार सूर्य की प्रखर रश्मियों के समक्ष घने अंधकारमय स्थान भी प्रकट हो जाते हैं, उसी प्रकार यह एकाग्र मन भी अपने सभी आन्तरिक रहस्यों को प्रकाशित कर देता है, और अन्तर्जगत का समस्त व्यापार हमारे ज्ञान चक्षुओं के समक्ष उद्‌भासित हो उठता है।

मन और शरीर का सम्बन्ध

प्रकृति का द्वार खटखटाने का क्या उपाय है? उस पर कैसा आघात करना चाहिए? यदि केवल यही हमें ज्ञात हो जाए, तो प्रकृति स्वतः अपने रहस्य उजागर कर देगी। इस आघात में शक्ति और तीव्रता, एकाग्रता से ही आनी सम्भव है। मानव मन की शक्ति अपरिमित है, पर वह जितना अधिक एकाग्र होगा उसकी शक्ति उतनी ही अधिक अपने लक्ष्य पर आघात करेगी।

यह मन शरीर पर आश्रित है। वस्तुतः हमारा मन शरीर की मात्र एक सूक्ष्म अवस्था है, और मन एवं शरीर दोनों ही एक-दूसरे पर कार्यरत रहते हैं। बहुधा हम देखते हैं— क्रोध की अवस्था में मन के साथ-साथ शरीर भी अस्थिर हो जाता है, इसी प्रकार शरीर के अस्वस्थ होने पर मन भी रुग्ण हो जाता है. . . और इसीलिए अधिकांश व्यक्तियों का मन उनके शरीर के अधीन ही रहता है।

अतः मन पर आधिपत्य स्थापित करने हेतु शरीर पर संयम रखना आवश्यक है, और जब शरीर पर अधिकार हो जाएगा तो मन भी स्वतः कुछ अंशों तक हमारे नियन्त्रण में आ जाएगा और तब हम चित्त-वृत्तियों को अन्तर्मुखी करने का प्रयत्न कर सकेंगे।

प्रकृति पर विजय

यह सम्पूर्ण सृष्टि स्थूल व सूक्ष्म दो भागों में विभक्त है। जो कुछ भी बाह्य जगत में विद्यमान है, वह

अन्तर्जगत या सूक्ष्म जगत का स्थूल विकास मात्र है। राजयोग के मतानुसार बाह्य जगत कार्य है, और अन्तर्जगत उसका कारण। इस प्रकार बाह्य जगत की सभी दृश्य शक्तियां आन्तरिक सूक्ष्म शक्तियों का ही स्थूल भाग हैं। इसीलिए जिन व्यक्तियों ने आन्तरिक जगत का साक्षात्कार कर सूक्ष्म शक्तियों को अपनी इच्छानुसार प्रयुक्त करना सीख लिया है, वे सम्पूर्ण प्रकृति पर अधिकार कर सकते हैं।

इस अवस्था में पहुंचे योगियों पर प्रकृति के नियमों का प्रभाव नहीं पड़ता अपितु वे तो आन्तरिक एवं बाह्य दोनों ही प्रकृतियों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लेते हैं। राजयोगी की चेष्टा भी यही होती है, वह पहले अन्तर्जगत का ज्ञान प्राप्त करके इसी के द्वारा बाह्य एवं आन्तरिक उभय प्रकृति को अपने वशीभूत कर लेता है।

राजयोग के अंग

पातंजलि के अनुसार अष्टांग योग के अगले चार चरण राजयोग के अन्तर्गत आते हैं, जिन्हें अन्तरंग योग भी कहा गया है—

१. प्रत्याहार

स्वविष्यासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः।

— प्रत्याहार का तात्पर्य है, एक ओर आहरण अर्थात् खींचना— "मन की बाह्य गति को रोकते हुए इन्द्रियों की अधीनता से मन को मुक्त करके उसे अन्तर्जगत की ओर खींचना।"

हमारी इन्द्रियों के समक्ष जो कुछ भी आता है, उसके साथ यह मिलकर उसी का रूप धारण कर लेती है। जब योगी इन्द्रियों की बाह्य वस्तु का रूप धारण करने से रोककर उन्हें चित्त के साथ एक कर लेते हैं, तभी वे जितेन्द्रिय हो पाते हैं, सम्पूर्ण शरीर, समस्त भावों और सभी कार्यों पर वे जय प्राप्त कर पाते हैं।

२. धारणा

" देशबन्धश्चित्तस्य धारणा ।"

(योग पा० ३ सूत्र)

अर्थात् चित्त को किसी विशेष वस्तु में स्थिर करके रखने को ही 'धारणा' कहा जाता है।

धारणा के अभ्यास से व्यक्ति अपनी आत्मिक शक्ति को एकत्र कर उसे एक निश्चित लक्ष्य की ओर प्रसारित करता है। यह धारणा भी अन्तः तथा बाह्य दो प्रकार की होती है, जिसमें बाह्य धारणा के भी पांच स्वरूप होते हैं, यथा—

१. **जलीय**— नदी, सरोवर या समुद्र तट पर बैठकर शान्त जल को स्थिर दृष्टि से देखने का प्रयत्न करना।
२. **आग्नेय**— दीप शिखा, मध्यम प्रकाश के बल्ब अथवा यज्ञ की अग्नि जैसे तेजस पदार्थ को स्थिर दृष्टि से देखने का प्रयत्न करना।
३. **पार्थिव**— किसी पिण्ड, पुष्प, देवमूर्ति अथवा "ॐ" अक्षर को लक्ष्य करके दृष्टि स्थिर करना।
४. **वायवीय**— वायु के निरन्तर स्पर्श को अथवा प्रश्वास की गति को अनुभव करते हुए मन को स्थिर करने का प्रयत्न करना।
५. **शाब्दिक**— मंत्र-जप पर, जल निनाद पर अथवा अनहदनाद पर मन को बांधने का प्रयत्न करना।

जो कुछ भी बाह्य जगत में विद्यमान है, वह अन्तर्जगत या सूक्ष्म जगत का स्थूल विकास मात्र है। राजयोग के मतानुसार बाह्य जगत कार्य है, और अन्तर्जगत उसका कारण। इस प्रकार बाह्य जगत की सभी दृश्य शक्तियां आन्तरिक सूक्ष्म शक्तियों का ही स्थूल भाग हैं। इसीलिए जिन व्यक्तियों ने आन्तरिक जगत का साक्षात्कार कर सूक्ष्म शक्तियों को अपनी इच्छानुसार प्रयुक्त करना सीख लिया है, वे सम्पूर्ण प्रकृति पर अधिकार कर सकते हैं।

धारणा की अन्तिम अवस्था ही ध्यान की प्रारम्भिक अवस्था होती है, अतः ध्यान में प्रवेश करने हेतु धारणा का बलवती होना आवश्यक है।

ध्यान

" तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् "

(योग पा० ३,सूत्र २)

— धारणा में चित्त जिस ध्येय में संलग्न होता है, जब वह वृत्ति समान प्रवाह से उदय होती रहती है, और कोई दूसरा विचार बीच में नहीं आता, उसे 'ध्यान' कहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए, तो जिस बिंदु पर धारणा की जाए, उसी में चित्त जब एकाग्र हो जाए, तो ध्यान की स्थिति बनती है।

३. समाधि

" तदेवार्थ मात्रनिर्भास स्वरूपशून्यमिव समाधि "

(योग पा० ३,सूत्र ३)

जब साधक अपने लक्ष्य, इष्ट या ध्येय के साथ एकाकार हो जाता है, और जब उसे अपनी देह का भी भान नहीं रहता, उसे ही "समाधि" अवस्था कहते हैं।

वास्तव में समाधि, चित्त और बुद्धि तत्व की ऐसी सूक्ष्म अवस्था है, जो पदार्थ के तत्व का विश्लेषण कर, उसके सूक्ष्म स्वरूप का साक्षात्कार करा देती है, अतीन्द्रिय भावों का दर्शन कराकर मोक्ष के द्वार पर लाकर खड़ा कर देती है।

योग शास्त्र के अनुसार प्रकृति के सभी पदार्थ व अवस्थाएं त्रिगुणात्मक हैं, अतः समाधियां भी त्रिगुणात्मक होती हैं, क्योंकि यह भी त्रिगुणात्मक चित्त व बुद्धि की ही विशेष अवस्था है। इस प्रकार समाधि के भी तीन भेद हैं—

१. तमः प्रधान समाधि

इस समाधि में तमस की प्रधानता के कारण शून्य के अतिरिक्त अन्य किसी भाव का ज्ञान या स्मृति नहीं होती। तमोमयी अवस्था में होने वाली अनुभूति निद्रावृत्ति से मिलती जुलती है। नियमित अभ्यास से तथा आत्म चिन्तन में प्रबल होने से धीरे-धीरे सत्व गुण की प्रधानता बढ़ने लगती है और शेष दोनों गुण भी न्यून मात्रा में विद्यमान रहते हैं।

२. रजः प्रधान समाधि

इसमें रजस गुण की प्रधानता होती है। इसमें भी सर्वप्रथम सविकल्प समाधि की अवस्था आती है, जो कि स्थूल पदार्थों के स्थूल रूपों को स्थूल रूप में दर्शाने वाली समाधि है। तत्पश्चात् उस स्थूल पदार्थ के सूक्ष्म व अतीन्द्रिय तत्वों का दर्शन होता है, जिसे सविचार समाधि भी कहते हैं, इस अवस्था में प्रत्येक वस्तु अपने दिव्य स्वरूप को प्रकट करने लगती है।

३. सत्व प्रधान समाधि

इसमें रजोगुण की तीव्रता मिट कर सत्व प्रधान अवस्था आती है, और सत्व के प्रकाश में ही वस्तु मात्र प्रकाशित होती है। निर्विचार समाधि सत्व प्रधान समाधि है, जिसमें ग्राह्य और ग्रहण के सूक्ष्म रूप में समाधि करते समय शब्द, अर्थ और ज्ञान का विकल्प नहीं रहता। निर्विचार की एक अवस्था विशेष ही आनन्दानुगत समाधि है, जिसमें आनन्द का अनुभव और "अहं ब्रह्मास्मि" का बोध होता है।

ये सभी समाधियां सबीज कही जाती हैं, क्योंकि इन सभी अवस्थाओं में चित्त किसी न किसी वस्तु "स्थूल या सूक्ष्म" का आधार लिए रहता है, जिसके कारण समस्त वृत्तियों का निरोध नहीं हो पाता।

४. असम्प्रज्ञात समाधि

यह अंतिम अवस्था है, जिसमें सभी वृत्तियों का निरोध होकर मात्र संस्कार ही शेष रह जाते हैं। परम वैराग्य द्वारा ही असंप्रज्ञात समाधि में संस्कारों का भी निरोध हो जाता है और आत्मा की स्वरूप स्थिति प्राप्त होती है।

❋

सूचना

पत्रिका के पाठकों, साधकों एवं शिष्यों को यह सूचित किया जाता है कि वे साधना- सामग्री से सम्बन्धित अपना ऑर्डर जोधपुर टेलीफोन नं०- ०२९१-३२२०९ द्वारा लिखाएं। क्योंकि आप के द्वारा भेजा हुआ पत्र कार्यालय को १० दिन बाद मिलता है और कार्यालय द्वारा भेजी गयी सामग्री आपके पास १० दिन बाद पहुंचती है। इन २० दिनों के चक्र में कभी-कभी साधना से सम्बन्धित विशेष दिवस बीत जाता है।

अतः आप इस प्रकार की असुविधा से बचने के लिए अपना ऑर्डर जोधपुर कार्यालय में प्रातः ६.०० से रात्रि १२.०० तक नोट करा सकते हैं। जोधपुर टेलीफोन नं० - ०२९१ : ३२२०९

पूज्य गुरुदेव
श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी
के सान्निध्य में
पद्मावती तंत्र पर आधारित

"सर्व सिद्धि प्रदायक महालक्ष्मी साधना शिविर"

दिनांक : १३ नवम्बर १९९४

संयोजक : श्री गणेश वटाणी,
फोन : ०२२-८०५७११०

: स्थान :

सीता सिन्धु भवन हॉल, नेहरू रोड, मिड लैण्ड होटल के सामने, टी. पी. एस. रोड-१, राम पंजवानी चौक के बाजू में, गीताजंली कम्पाउण्ड, सांताक्रुज (पूर्व), बम्बई-४०००५५

जीवन को सफल बनाती हैं ये साबर साधनाएं

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में कलियुग के प्राणियों की भावनाओं पर विचार करते हुए बताया कि भगवान शिव ने स्वयं साबर मंत्रों की रचना की, जो कि सरल होने के साथ-साथ प्रभाव पूर्ण एवं सफलतादायक होते हैं –

कलि बिलोकि जगहित हर गिरिजा।
साबर मंत्रजाल जिन्ह सिरजा।।
अनमिल आखर अरथ न जापू।
प्रगट प्रभाव महेस प्रतापू।।

इसका मुख्य कारण यह है कि, अन्य मंत्र जहां कीलित हैं, वहां साबर मंत्र स्वतः ही अपने - आप में पूर्ण हैं, और कीलित नहीं होने की वजह से कम समय में ही साधना के द्वारा सिद्ध हो जाते हैं, साबर मंत्र के लिए कोई विशेष पूजा पद्धति या अनुष्ठान आदि की जरूरत नहीं है, क्योंकि इस प्रकार के मन्त्रों के शब्द समूह अपने - आप में विशिष्ट प्रक्रिया से परस्पर गुंथे हुए हैं, जिसके उच्चारण से एक विशेष प्रकार की ध्वनि तरंग उत्पन्न होती है, और इन तरंगों के सहारे शीघ्र ही सफलता और कार्य सिद्धि हो जाती है।

परन्तु इस प्रकार के मन्त्रों में श्रद्धा, विश्वास और भावना पूर्ण रूप से होनी चाहिए –

मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवै देवेज्ञै भैषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशा।।

अर्थात् मन्त्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, दवा तथा गुरु में जिस तरह की भावना होती है, उसी के अनुसार उसे सफलता और शक्ति प्राप्त होती है।

साबर साधना में दृढ़ संकल्प और पूर्ण इच्छा - शक्ति आवश्यक है, क्योंकि इसके द्वारा ही साधक उस मन्त्र के द्वारा पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

इन प्रयोगों को निर्धारित तिथियों के अनुसार करना अत्यधिक अनुकूलता प्रदायक है, वैसे किसी भी अमावस्या की रात्रि को ये प्रयोग सम्पन्न किए जा सकते हैं –

"लक्ष्मी का तात्पर्य मात्र धन ही नहीं अपितु पूर्ण आयु, संचित धन, पराक्रम, सुख, योग्य सन्तान, शत्रु-निवारण, पूर्ण गृहस्थ, राज्य सम्मान एवं सफल भाग्योदय होता है।

सही प्रकार से, सही समय पर किया गया प्रयोग अचूक ही होता है।"

१. दरिद्रता निवारण प्रयोग -

माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी मंगलवार तदनुसार ०७/०२/६५ को यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है, काले कपड़े में एक मुट्ठी तिल, सात काली मिर्च के दाने, एक लोहे की कील और एक **हल्ट हकीक** बांध कर, रात्रि को अपने सामने रख कर तेल का दीपक लगावे और निम्न मन्त्र की दस मालाएं फेरे—

मंत्र -

ॐ नमो काली कंकाली भैरव हुक्मे हाजिर रहे मेरा कारज तुरन्त करे, घर की गरीबी दरिद्रता बांधे मुख बांधे, शरीर बांधे, कोटा बांधे, उसका अंग - अंग बांधे, उटाके गिरे, गिराकर उटावे, घर से दूर भगावे, चोट पर चोट करे, मेरा कारज सिद्ध करे, कालिके पुत्र कंकाल भैरव फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र की दस मालाएं जब पूरी हो जाए, तो मिट्टी की एक हंडिया में यह पोटली रखकर, रात्रि को सड़क के बीच ले जाकर रख दे, और साथ में पानी का एक लोटा भी भरकर ले जावे, जिससे उस हंडिया के चारों ओर पानी का घेरा बना दे, फिर लोटा लेकर अपने घर आ जावे, हंडिया वहीं रहने दे, वापिस आते समय मुड़ कर नहीं देखे।

इस प्रकार करने से दरिद्रता का नाश हो जाता है।

२. आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग -

माघ शुक्ल पक्ष नवमी गुरुवार तदनुसार ०६/०२/६५ यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है, रात को साधक बैठ जाय और सामने **''बिकिना औल''** रख दे, जो मन्त्र- सिद्ध होनी चाहिए, फिर किसी भी माला से नीचे लिखे साबर मंत्र की दस मालाएं फेरे —

मंत्र -

ॐ नमो महादेवी महाशुक्ला कमलदल निवासी लक्ष्मी माई सत्य की सवाई अचानक धन लेकर आवो माई, करो भलाई, मना करे तो सात समुद्र की दुहाई, ऋद्धि सिद्धि नहीं लाओगी तो नवनाथ चौरासी सिद्ध की दुहाई।

मंत्र - जप करते समय सामने तेल का दीपक लगा लेना चाहिए, और जब दस माला पूरी हो जाए, तब उस बिकिना औल को लाल वस्त्र में बांध कर घर की तिजोरी में रख देना चाहिए, ऐसा करने पर शीघ्र ही मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है, और लॉटरी, घुड़दौड़ या अन्य किसी उपाय से विशेष आकस्मिक धन प्राप्ति हो जाती है।

यह प्रयोग एक विशिष्ट महात्मा का बताया हुआ है, और उन्होंने कई साधकों को यह मंत्र सिद्ध कराया था।

३. व्यापार वृद्धि प्रयोग -

व्यापार बढ़े, बिक्री बढ़े और यदि दुकान पर किसी ने कोई प्रयोग कर दिया हो तो वह हट जाए, इसके लिए यह विशेष साबर प्रयोग है।

इसके लिए दक्षिणावर्ती शंख की आवश्यकता होती है, यह शंख छोटा या बड़ा किसी भी आकार का हो सकता है, यह प्रयोग माघ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी मंगलवार तदनुसार १४/०२/६५ की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है।

सामने लाल वस्त्र बिछाकर उस पर दक्षिणावर्ती शंख रख दे और उसे चावलों से भर दे, फिर नीचे लिखे मंत्र की दस मालाएं फेरे — मंत्र जप करते समय तेल का दीपक लगा ले, इसमें किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

मंत्र -

हुकम सेख फरीद कमरिया, निखि, अधीरिया आगं पानी पथरिया, मेरा कारज सिद्ध करो नजर टोना टोटका, व्यापार बंद, बिक्री बढ़ावो धन - धान्य पूर्ण करो, जसमति हाथी बैठ पधारो, दुहाई गुरु गोरखनाथ की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

जब दस मालाएं पूरी हो जाए, तो उस लाल कपड़े में वह शंख चावलों सहित बांध ले, और दूसरे दिन प्रातः काल ही अपनी दुकान पर ले जाकर इसको ऐसे स्थान पर रख दें, जहां आने- जाने वाले ग्राहक की नजर पड़ती रहे।

यह मंत्र अत्यन्त प्रभाव पूर्ण है, और एक उच्चकोटि के साबर मंत्र - सिद्ध योगी से यह प्रयोग प्राप्त हुआ था, उनके अनुसार इस प्रयोग से उन्होंने लाखों व्यापारियों का भला किया है, यदि दुकान पर या दुकान की बिक्री पर शत्रु अथवा विरोधी ने कोई प्रयोग कराया हुआ हो तो वह भी समाप्त हो जाता है, तथा आश्चर्यजनक रूप से उसकी बिक्री बढ़ जाती है, इसे साबर मंत्रों में शिरोमणि कहा जाता है।

वस्तुतः साबर मंत्र अपने - आप में महत्वपूर्ण और प्रभाव युक्त होते हैं, तथा ये शीघ्र एवं अचूक प्रभाव देने में समर्थ होते हैं।

'आत्मा' और 'ईश्वर' की शक्तियां तो सर्वत्र विद्यमान हैं। हमारी चेतना जब प्रस्तर-खण्ड पर केन्द्रित होती है, तो हमारे भीतर विद्यमान शक्ति क्रियाशील हो जाती है, तब पत्थर के भीतर देवत्व स्थापित हो जाता है। यदि बहुत सारे लोगों की चेतना उस पत्थर पर केन्द्रित होगी, तो पत्थर की क्रिया शक्ति का, देवत्व का और अधिक विकास होगा। मूर्ति पूजा का यह एक रहस्य है।

"मानस कन्या की दिव्य सिद्धि"

● विजय कुमार शर्मा
रायपुर,

भौतिकवादी मनुष्य की दिव्यता को स्वीकार नहीं करते। भौतिकवादी कहते हैं— मनुष्य भी एक यंत्र की तरह है, उसमें जो चेतना है, वह भौतिक पदार्थों के संयोजन का चमत्कार है, किन्तु इस विचारधारा के विपरीत आध्यात्मवादियों का यह विश्वास है, कि चेतना आत्मा का गुण है, उसका स्वरूप है। विभिन्न योनियों में, जिनमें मनुष्य भी शामिल है, आत्मा की शक्ति के कारण गति, तेज, ऊर्जा, संकल्प आदि वैशिष्ट्य दिखलायी देते हैं।

सम्पूर्ण पृथ्वी पर जीवन के रूप में आत्मा एक ऐसा सत्य है, जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। आत्मा के विषय में 'गीता' में कहा गया है— वह अजर है, अमर है, जैसे पुराने कपड़ों को उतार कर हम नवीन वस्त्रों को धारण कर लेते हैं, वैसे ही हमारे शरीर के जीर्ण-शीर्ण होने के बाद आत्मा भी दूसरी योनियों में संक्रमित हो जाती है।

उपनिषदों में आत्मा का वर्णन अनेक रूपों में प्राप्त होता है। "माण्डोक्योपनिषद्" में आत्मा के दो रूपों की कल्पना की गई है, इसे एक खग रूपक के द्वारा समझाया गया है— एक ही वृक्ष पर दो पक्षी निवास करते हैं, उनमें से एक तो कर्मों के फलों को भोगता है और दूसरा केवल द्रष्टा मात्र है, उसी प्रकार जीव के रूप में माया के प्रपंचों में आत्मा उलझी रहती हैं, किन्तु ईश्वर के रूप में आत्मा कर्मों की साक्षी होती है तथा ईश्वर का अंश होने के कारण इस आत्मा में दिव्य शक्तियों का समायोजन रहता है।

हमारे भीतर समाविष्ट यही आत्मा हमारे देवत्व का आधार है। इसी की शक्ति से दिव्य साधनाएं भी की जाती हैं। **हमें यह सदैव याद रखना चाहिए कि कुछ शक्तियां हमारे भीतर ही होती हैं, जो साधनाओं से प्रकट होती हैं, और कुछ शक्तियां ब्रह्माण्ड में होती हैं, जो अवतरित होने के लिए सदैव व्याकुल रहती हैं। जब हम साधना करते हैं तो ब्रह्माण्डव्यापी उन शक्तियों से हमारा साक्षात्कार होता है, और तब कोई भी चमत्कार घटित हो जाता है।**

कोई साधक ही यह बतला सकता है, कि जब कोई चमत्कार घटित होता है, तब उसमें कितना अंश भौतिक होता है और कितना आध्यात्मिक। यह सत्य अवश्य स्वीकार करना होगा, कि चमत्कार के क्षणों में हमारी चेतना सामान्य नहीं रहती।

एक अघोरी हमारे समक्ष अचानक प्रकट होता है, अपनी जटाओं को खोलकर निचोड़ता है और पानी की धारा प्रकट कर देता है, वह कहता है— "लो बच्चा, गंगा को प्रकट कर

दिया!'' यदि हम आस्थावान होते हैं, तो तुरंत श्रद्धानत होकर उस अघोर साधु का सत्कार करते हैं और अनास्थावादी होने पर उसकी ओर ध्यान नहीं देते।

यदि इस घटना का विश्लेषण करें, तो अनेक महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रकट होंगे। यह भी संभव है, कि वह अघोर साधु सम्मोहन जानता हो और ''नजरबंद'' की क्रिया के द्वारा गंगा के प्राकट्य की क्रिया प्रदर्शित करता हो, किन्तु ऐसी स्थिति में भी उसे साधना तो करनी ही पड़ेगी।

सम्मोहन साधना आसान नहीं है, वर्षों तक अभ्यास करने से ही सम्मोहन विद्या आ पाती है। हां! तंत्र-विधियों में कुछ ऐसे प्रयोग अवश्य हैं, जिनमें भौतिक पदार्थों के प्रयोग से दूसरों को सम्मोहित किया जा सकता है, किन्तु ऐसी विधियां जनसामान्य को ज्ञात नहीं होतीं।

अब मान लें, उस अघोर साधु ने जादू की क्रिया से गंगा को अपनी जटाओं से प्रकट किया हो, तो इस साधना में भी ऐसे उपकरणों का प्रयोग अपेक्षित होता है, जिन्हें काफी कुशलता पूर्वक, चातुर्यता से संचालित किया जाना होता है।

यदि हम इसे सचमुच सिद्धि मान लें, तो कल्पना नहीं की जा सकती, कि इसे प्राप्त करने के लिए उस अघोर साधु को कितनी कठोर साधना करनी पड़ी होगी। गंगा को साक्षात् अपनी जटाओं में धारण करना तो किसी सिद्ध साबर की हिम्मत का काम है।

कहने का आशय यह है, कि चमत्कार तो हमारे सामने घटित होते ही रहते हैं, किन्तु उन्हें देखने और समझने का हमारा-अपना दृष्टिकोण होता है। यदि हम आस्थावादी होते हैं, तो चमत्कार की शक्ति को शीघ्र ही समझ जाते हैं। एक आस्थावादी सड़क के किनारे, वृक्ष के नीचे बड़े पत्थर की पूजा करता है और अपने इच्छित फल को प्राप्त कर लेता है। इसके पीछे

मनोविज्ञान क्या है?

सर्वात्मवाद और सर्वेश्वरवाद की दृष्टि से देखें, तो स्पष्ट होगा— 'आत्मा' और 'ईश्वर' की शक्तियां तो सर्वत्र विद्यमान हैं। हमारी चेतना जब प्रस्तर-खण्ड पर केन्द्रित होती है, तो हमारे भीतर विद्यमान शक्ति क्रियाशील हो जाती है, तब पत्थर के भीतर देवत्व स्थापित हो जाता है। यदि बहुत सारे लोगों की चेतना उस पत्थर पर केन्द्रित होगी, तो पत्थर की क्रिया शक्ति का, देवत्व का और अधिक विकास होगा। मूर्ति पूजा का यह एक रहस्य है।

मूर्ति पूजा का आध्यात्मिक महत्व इस बात में भी है, कि उसमें प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है, और उस ''प्राण-प्रतिष्ठा'' के कारण ही मूर्ति में अलौकिक शक्ति का समायोजन हो जाता है, जिसके कारण कोई भी मूर्ति सामान्य पत्थर, मिट्टी या धातु नहीं होती, उसमें चेतना-शक्ति होती है, प्राण होते हैं, मंत्रबद्ध देवता होता है, और इसी तरह कोई भी मूर्ति अपने-आप में चमत्कारिक हो जाती है।

'ध्यान' और 'समाधि' के लिए इससे उत्तम कोई साधन ही नहीं है, कि देव-मूर्ति को सामने रख लिया जाए और ध्यान का अभ्यास किया जाए।

कोई भी साधना करनी हो, यदि गुरु का अभाव हो, तो देव-प्रतिमा के सामने बैठकर आशीर्वाद प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। प्राण-प्रतिष्ठा युक्त, सिद्ध देव-प्रतिमाओं की मुद्राओं में परिवर्तन देखा गया है।

क्रियात्मक तंत्र शास्त्र में गुरु की अत्यधिक आवश्यकता होती है, क्योंकि तांत्रिक क्रियाओं में जब तेजसतत्व सक्रिय होता है, तो सामान्य मनुष्य उसके आवेगों को बरदाश्त नहीं कर सकता, ऐसी स्थिति में गुरु के समीप ही रहकर कोई साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

''मानस-कन्या'' की सिद्धि के लिए 'ध्यान' और 'धारणा' की वैदिक विधि से दीक्षा लेनी आवश्यक है। समूचे ब्रह्माण्ड में देवताओं की शक्तियां निवास करती हैं, और साधना-आराधना से वे शक्तियां साक्षात् प्रकट होती हैं। तंत्र शास्त्रों में आदिशक्ति के प्रकट होने के अनेक उदाहरण मिलते हैं, इसका सर्वाधिक रोमाञ्चक वर्णन श्री दुर्गा सप्तशती में मिलता है।

श्री दुर्गा सप्तशती के द्वितीय अध्याय में आदिशक्ति के नारी रूप में

प्राकट्य का रोमांचक वर्णन करते हुए ऋषि का कथन है, कि महिषासुर द्वारा तीनों लोकों को पीड़ित किये जाने पर समस्त देवताओं की क्रोधित मुद्राओं से जो तेज प्रकट हुआ, उसी के पुञ्जीभूत रूप को तांत्रिक 'आदिशक्ति' की संज्ञा देते हैं।

श्री दुर्गा सप्तशती के अनुसार महान तेज का वह पुञ्ज जाज्वल्यमान पर्वत सा जान पड़ा। देवताओं ने देखा उसकी ज्वालाएं सम्पूर्ण दिशाओं में व्याप्त हो रही थीं। सम्पूर्ण देवताओं के शरीर से प्रकट हुए उस तेज की कहीं कोई तुलना नहीं थी, एकत्रित होने पर वह एक नारी के रूप में परिणत हो गया और अपने प्रकाश से तीनों लोकों में व्याप्त जान पड़ा।

भगवान शंकर के तेज से उस देवी का मुख प्रकट हुआ। यमराज के तेज से उसके सिर में बाल निकल आये। श्री विष्णु भगवान के तेज से उसकी भुजाएं उत्पन्न हुईं। चन्द्रमा के तेज से दोनों स्तनों का और इन्द्र के तेज से कटि प्रदेश का प्रादुर्भाव हुआ। वरुण के तेज से जंधा और पिंडलीं तथा पृथ्वी के तेज से नितम्ब भाग प्रकट हुआ। ब्रह्मा के तेज से दोनों चरण और सूर्य के तेज से उसकी उंगलियां प्रकट हुईं। वसुओं के तेज से हाथों की उंगलियां और कुबेर के तेज से नासिका प्रकट हुई, उसकी भौहें संध्या और कान वायु के तेज से उत्पन्न हुए थे।

इसी प्रकार अन्यान्य देवताओं के तेज से उस कल्याणमयी देवी का आविर्भाव हुआ। तदन्तर समस्त देवताओं के तेज पुञ्ज से प्रकट हुई उस देवी को देखकर महिषासुर से पीड़ित देवता बहुत प्रसन्न हुए।

तेजसतत्व के रूप में वह आदिशक्ति चराचर जगत में व्याप्त हैं। भारतीय दार्शनिकों के अनुसार देवी-देवताओं का निर्माण तेजसतत्व से ही होता है, वास्तव में यह तेजसतत्व शक्ति का पर्याय ही है। अतः हम यह कह सकते हैं, कि जहां-कहीं भी तेजसतत्व है, वहां शक्ति का अस्तित्व है, और इस शक्ति की आराधना से
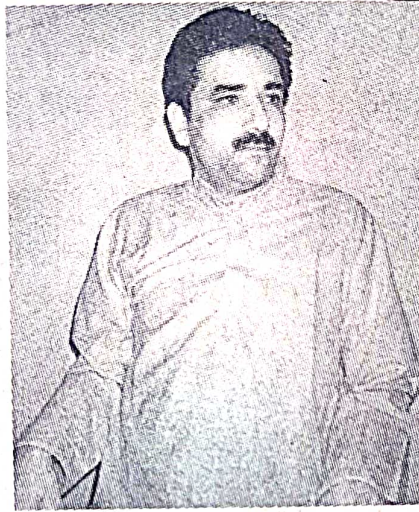
मनुष्य के स्वार्थ सिद्ध हो सकते हैं।

हमारी पृथ्वी में तेजसतत्व का केन्द्र "आदित्य" को माना जाता है, और पृथ्वी में आदित्य की विशेषता यह होती है, कि वह वस्तुओं के रूपों में परिवर्तन कर देती है। **अग्नि में जब आहुति दी जाती है, तो वह वस्तुओं को तो राख में परिवर्तित कर ही देती है, किन्तु उसके सारभूत अंश सुगंध के रूप में अंतरिक्ष के देवताओं को आकृष्ट करते हैं, और हमें उन देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त होता है।**

मानव-शरीर में तेजसतत्व की विशेष स्थिति होती है, यदि कोई चाहे तो "मानस-कन्या" के रूप में इस तेजसतत्व को प्रकट कर सकता है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है, कि "मानस-कन्या" को सिद्ध कैसे किया जाए?

योगीजन 'समाधि' की प्रक्रिया से अपने भीतर प्रच्छन्न मानस-कन्या को जाग्रत कर सकते हैं और उससे इच्छित कार्य करवा सकते हैं। इच्छित कार्यों से मेरा आशय दुराग्रह पूर्ण कार्यों से नहीं है। मनुष्य को सदैव अपनी आत्मा के कल्याण के विषय में सोचना चाहिए।

गीता के बहुचर्चित श्लोक—
"ममैवांशी जीवलोके जीवभूता सनातना"
के अनुसार सम्पूर्ण जीव समुदाय परमात्मा का ही अंश है, अतः दूसरों को नुकसान पहुंचाने की दृष्टि से किसी सिद्धि का प्रयोग नहीं करना चाहिए, ऐसा करने से वृत्तियां दूषित हो जाती हैं, और सिद्ध की "मानस-कन्या" विलुप्त हो जाती है।

समाधि को प्राप्त योगी 'मानस-कन्या' को स्थूल रूप में प्रकट कर सकते हैं। हमें जीवन में इसका प्रत्यक्ष अनुभव हो चुका है। विगत कुम्भ पर्व पर हम उज्जैन गये थे।

१६ अप्रैल की वह मध्यरात्रि थी। हम महाकालेश्वर के दर्शन के बाद अपना डेरा खोजते हुए भटक गए और क्षिप्रा के उस पार संभवतः मंगलनाथ की ओर एकांत जंगल में पहुंच गए। दूर एक वृक्ष की छाया में चार-पांच साधु बैठे पूजा की तैयारी कर रहे थे, उनके नजदीक जाकर पूछने पर पता चला, कि साधु बाबा अपने चंद शिष्यों के साथ वहां "पार्थिव शिवलिंग" का निर्माण कर रहे थे।

साधु बाबा बड़े तेजस्वी लग रहे थे, उनकी सिद्धियों के बारे में हमने काफी सुन रखा था। अखबारों में भी उनके बारे में काफी कुछ छपा

था। बाबा की अनुमति से हम भी वहां बैठ गए और पूजा-विधि देखने लगे। साधु बाबा पार्थिव शिवलिंग की पूजा में तल्लीन थे। उनकी तेजस्विता को देखकर ऐसा प्रतीत होता था, जैसे वहां स्वयं भगवान शंकर अवतरित हो गए हों और स्वयं अपनी ही पूजा कर रहे हों।

बाबा की बगल में पूजन-सामग्री रखी थी। मंत्रोच्चार करते हुए वे एक के बाद एक अभ्यस्त हाथों से पूजन-सामग्री का उपयोग करते जा रहे थे। अचानक उनके हाथ स्थिर हो गए, माथे पर शिकन पड़ गया. . . अधरों से अभिषेक के मंत्र प्रस्फुटित हो रहे थे और बगल में वह इच्छित वस्तु नहीं थी, जिसका प्रयोग किया जाना था। मंत्र समाप्त कर बाबा ने शिष्यों से पूछा– ''गंगा जल कहां है? . . .कैसी व्यवस्था है यहां?

बाबा के पास बैठे शिष्य हड़बड़ा गए। तीन शिष्य एक साथ उठ कर आसन के आस-पास रखे पात्रों में गंगाजल ढूंढने लगे. . . किन्तु गंगाजल तो वहां था ही नहीं।

बाबा की मुखमुद्रा उदास हो गई, कुछ व्याकुल होकर वे पुकार उठे– ''मां! मां!! कहां हो तुम?''

हमने बड़े आश्चर्य से देखा, पास ही एक वृक्ष के पीछे से पायलों की छुन-छुन आवाज गूंज उठी, और ७-८ साल की एक अति सुंदर बालिका प्रकट होकर बाबा के सामने आ खड़ी हुई। सचमुच वह बालिका दिव्य थी। आंखों में विकट सम्मोहन. . . अधर ऐसे खिले थे, कि जो शब्द फूटे– वह तुरंत सत्यघटित हो जाए। किसी को श्राप दे -''मर जा!'' तो तुरंत प्राणान्त हो जाए।

बालिका की देह से एक मादक सी गंध प्रस्फुटित हो रही थी। बाबा ने कहा-''मां! मां!! गंगे कहां है?''

बालिका तुरंत मुड़ी और चार पग चल कर वृक्ष के पीछे विलुप्त हो गई. . . और कुछ ही पलों में जब वह प्रकट हुई तो. . . उसकी समूची देह से जैसे प्रकाश का एक झरना सा फूट रहा था– वह कहीं से नहा आई थी और उसके हाथों में एक स्वर्ण-कलश था, जिसमें गंगा जी उफन रही थीं।

ध्यानावस्था में ''मानस- कन्या'' का प्राकट्य टी०वी० के पट पर उभरती छवियों की तरह होता है। शुरू-शुरू में इन छवियों में अस्थिरता होती है, किन्तु अभ्यास के साथ-साथ. . .

– बाबा! लो, गंगा आई है।

– तपोवन से लाई हूं।''

बाबा ध्यानस्थ थे, उन्होंने आंखें खोली और कांपते हाथों से कलश ले लिया तथा पार्थिव शिवलिंग का अभिषेक करने लगे।

इस बीच वह बालिका न जाने कहीं चली गई या अन्तर्ध्यान हो गई।

बाबा ने जब अपनी पूजा समाप्त की, तब हमें समझाया– वह ''मानस-कन्या'' थी, जो रहस्य की तरह प्रकट हुई और गायब हो गई।

हमारी जिज्ञासा को शांत करते हुए बाबा ने हमसे, जो सारगर्भित चर्चा की थी, उसके अनुसार *''मानस-कन्या'' एक विलक्षण सिद्धि होती है। समाधि अवस्था को प्राप्त योगी ''मानस-कन्या'' को स्थूल रूप में प्रकट कर सकते है एवं उनके सभी मनोरथों को वह ''मानस-कन्या'' पूर्ण करती है।*

सर्वसाधारण के लिए यह सम्भव नहीं है, कि वह समाधि के द्वारा ''मानस-कन्या'' की सिद्धि प्राप्त कर ले, **किन्तु 'ध्यान' की सतत् क्रिया से यह सिद्धि सामान्य मनुष्य को भी प्राप्त हो सकती है।**

पवित्र शरीर और पवित्र मन से आसन पर बैठ कर या लेटकर ''मानस-कन्या'' का ध्यान करना चाहिए। दो महीने के अभ्यास से ही ध्यान पट पर ''मानस-कन्या'' की क्षीण सी छवि उभरने लगती है। ''मानस-कन्या'' का यह सूक्ष्म रूप होता है, किन्तु इसमें बड़ी शक्ति होती है, और ध्यानकर्त्ता की क्रिया शक्ति एवं संकल्प शक्ति के अनुसार त्वरित इच्छित कार्यों में सफलता प्रदान करती है।

भारतीय साधना पद्धतियों में ध्यान एक महत्वपूर्ण अविष्कार है। पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ देवी की प्रतिमा या चित्र के सामने ही यह ध्यान किया जा सकता है। मन की वृत्तियों को शांत करना और चित्त को एकाग्र करना ही 'ध्यान' है।

ध्यानावस्था में ''मानस-कन्या'' का प्राकट्य टी०वी० के पट पर उभरती छवियों की तरह होता है। शुरू-शुरू में इन छवियों में अस्थिरता होती है, किन्तु अभ्यास के साथ-साथ इन छवियों में सघनता और स्थिरता आती जाती है। एक स्थिति ऐसी भी आती है, कि ध्यान-पट पर मानस-कन्या पूर्ण स्पष्ट हो जाती है। वह बातें भी करती है और उसकी अस्फुट ध्वनियां भी सुनाई पड़ती हैं। यह ''मानस - कन्या'' हमें बुराइयों से बचाती है और सद्कृत्यों की प्रेरणा देती है।

आप विश्व की सर्वश्रेष्ठ सौन्दर्यवती बन सकती हैं–

मंत्र-योग से नारी सौन्दर्य

यदि यह कहा जाए कि, 'योग' मानव जीवन की पहली और अंतिम शर्त है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। योग का तात्पर्य – केवल आत्मा का परमात्मा से मिलन ही नहीं, वह तो इसकी सर्वोच्च दशा है। योग तो सम्पूर्ण रूप से जीवन में पल-प्रति पल चलने वाली प्रक्रिया है।

मानव अपने-आप में सम्पूर्ण नहीं है, पग-पग पर उसे किसी न किसी का सहयोग लेना ही पड़ता है तो, क्या फिर यह भी योग नहीं होता? **सच्चा योग तो वह है, कि जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों का योग हो। एक ही भाव होना अपने-आप में अपूर्णता है, और जीवन के उल्लास का अभाव है।** जीवन में एक स्त्री और एक पुरुष का योग इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। स्त्री और पुरुष के योग का तात्पर्य केवल दैहिक अर्थों में ही नहीं, वरन् दैहिक अर्थों से भी अलग हट कर दोनों के मिलन से जो मानसिक परिपूर्णता प्रस्फुटित होती है और तृप्ति का वातावरण बनता है – वही जीवन का सच्चा सौन्दर्य है।

इस विषय में एक रोचक कथा है – "ब्रह्मा ने जब सृष्टि का निर्माण किया, तो उन्होंने उसकी वृद्धि का कोई उपाय नहीं सोचा। फलस्वरूप उनके मानस पुत्र एक के बाद एक वीतरागी होते गए, और उनकी सृष्टि की वृद्धि भी रुक सी गई। यह देख कर उन्हें क्रोध आया, तो प्रेत व पिशाच योनियां उत्पन्न हो गई, वे और झुंझलाये, तो इसी प्रकार रुद्रगण आदि योनियां उत्पन्न हो गई, किन्तु मानव जाति की वृद्धि का कोई उपाय नहीं सूझा, तब वह हारकर भगवान शिव की शरण में गए, और तब भगवान शिव ने 'काम' का सृजन किया, जिसके फलस्वरूप जहां एक ओर जीवन की वृद्धि सम्भव हो सकी, वहीं विभिन्न कलाओं, जैसे – संगीत, आमोद-प्रमोद, उल्लास एवं जीवन की गति का सृजन भी सम्भव हो सका।"

सभी ललित कलाओं के मूल में काम ही तो प्रेरणादायक, आह्लादक शक्ति है। यदि जीवन में से 'काम तत्व' को निकाल दिया जाए, तो जीवन में शेष रह ही क्या जाता है?

"सौन्दर्य साधनाओं के लिए अत्यधिक उपयुक्त दिवस होता है– "रतिकामोत्सव दिवस"।

यह दिवस इस बार ०४/०२/६४ अर्थात् वसन्तोत्सव को सम्पन्न हो रहा है। यह साधना अतिशीघ्र प्रकाशित करने के पीछे पत्रिका का यही उद्देश्य है कि अधिकांश पाठक इस अद्वितीय मुहूर्त का लाभ उठा सकें, क्योंकि पत्रिका कार्यालय को इस प्रकार की सौन्दर्य साधना प्रकाशित करने के लिए चार सौ पत्र पिछले दो माह में प्राप्त हो चुके हैं।"

जब 'काम तत्व' की चर्चा चले, तब नारी सौन्दर्य की बात न हो, यह सम्भव नहीं। नारी सौन्दर्य ही तो 'काम' की सही परिभाषा है। पुरुष सौन्दर्य भी 'काम' का एक प्रकार है, किन्तु वह बस प्रकार मात्र है, सम्पूर्ण रूप से परिभाषा नहीं।

नारी देह की चाहे मांसलता हो, चाहे उसके चेहरे की कोमलता और चाहे उसके तैरते हुए चलने की अदा – सभी कुछ सौन्दर्य की परिभाषा की एक-एक पंक्ति, काव्य का एक-एक छन्द ही तो है। वस्तुतः नारी सौन्दर्य देह से भी ज्यादा उसका आन्तरिक पक्ष है।

नारी का लास्य, मधुरता, सलज्जता, दबे-दबे हंसना, कनखियों से देख लेना, अपने प्रेम को हर बार नए ढंग से कुछ छिपा कर और कुछ दिखा कर अभिव्यक्त कर देना, एकदम से अपने प्रिय पर न्यौछावर हो जाना, उसे मुग्ध होकर निहारना – यह सब तो पुरुष बहुत-बहुत प्रयास करके भी अपने जीवन में नहीं उतार सकता, क्योंकि अन्तर मूल प्रवृत्तियों का है।

पुरुष की मूल प्रवृत्ति होती है भोग करने की, और

वहीं स्त्री की प्रवृत्ति होती है समेट लेने की। जहां प्रवृत्ति ही भोग करने की हो, वहां कोमल भावनाओं के लिए जगह कहां?

यद्यपि नारी का आन्तरिक सौन्दर्य ही उसका वास्तविक सौन्दर्य है, किन्तु जो प्रथम दृष्टि में आकर्षित करता है, वह तो शारीरिक सौन्दर्य ही होता है।

शारीरिक सौन्दर्य भी श्रेष्ठ होना उतना ही आवश्यक है, जितना कि आन्तरिक सौन्दर्य। दोनों का मेल ही सौन्दर्य की पूर्ण परिभाषा है। श्रेष्ठ शारीरिक सौन्दर्य से युक्त स्त्री को देखना ही अपने-आप में एक ऐसी सनसनी से भर जाना है, जो मन के सारे तनावों को खींच लेती है। मन में अंगड़ाई सी उठने लगती है, उस सौन्दर्य को अपनाने की।

इन अंगड़ाइयों में, तन की इन थिरकनों में सौ-सौ परदे हटते हैं, तनाव के ताने-बाने टूटते हैं, मानो किसी झील पर बर्फ की हल्की सी पर्त आ गई हो, उसे सूरज की कोई किरण चिटका दे और अन्दर का जल छलछला कर बाहर आ जाए। सौन्दर्य की ऊष्मा से प्रबल ऊष्मा भला और होगी भी क्या? इसमें मन तो मन, तन भी पिघल कर बह जाते हैं।

नारी तन की बात चले, तो सबसे पहले दृष्टि जाती है नारी के उभरे हुए समुन्नत वक्षस्थल पर। जैसे कि पुरुष का बलिष्ठ और विशाल वक्ष स्त्रियों को पागल कर देता है, उसी तरह से पुरुषों की आंखों के आगे एक चित्र सा नाचता रहता है किसी स्त्री का सुडौल वक्षस्थल।

सिगमंड, जो कि विश्व का सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक हुआ और जिसने भली-भांति यह सिद्ध किया, कि किस तरह से मानव जीवन सम्पूर्ण रूप से 'काम तत्व' पर आधारित है। उसने परीक्षणों के आधार पर सफलता पूर्वक निष्कर्ष निकाला, कि पुरुषों की सर्वप्रथम दृष्टि स्त्री के जिस अंग पर जाती है, वह होता है उसका वक्षस्थल। पुरुष, स्त्री का चेहरा भी इसके बाद ही देखता है।

— और चहेरे पर प्रकृति ने पुरुष को आकर्षित करने के लिए एक से एक ललचाने वाली वस्तुएं इस प्रकार से सजा दी हैं, मानो कोई कंजूस अपनी तिजोरी में स्वर्ण आभूषणों को, जो विविध रत्नों से गढ़े हों, उन्हें सजा दे, चांहे वह स्त्री की बड़ी-बड़ी आंखें हों, या उसके स्वस्थ कपोल या फिर उसके होंठ, सभी तो अपने- आप में मानो पुरुषों को भ्रमित करने के लिए रचे गए हैं।

उस पर से घने, काले बाल, जिन्हें पुरुष छूने के लिए, अपनी मुट्ठियों में भींचने के लिए और अपने वक्षस्थल पर बिखेरने के लिए मचल उठते हैं। पतली गर्दन हो या पतली कमर। गढ़ी हुई रोम रहित भुजाएं हों या रोम रहित सुडौल जंघाएं अथवा उफान की तरह उठे भारी नितम्ब, जो आमंत्रण दे रहे हों पुरुषों के उफान को भी समेट लेने का— सभी कुछ अपने-आप में अवर्णनीय है।

सौभाग्यशाली होती है वह स्त्री, जो ऐसी देह पाती है, कि सैकड़ों-सैकड़ों मर्दों को अपने आगे-पीछे नाचने के लिए मजबूर कर दे।

युगों से आयुर्वेद के माध्यम से, विभिन्न व्यायामों के माध्यम से यही प्रयास रहा, कि नारी ऐसी देह की स्वामिनी बने और भला क्यों न बने, फिर वह अभिमानिनी जो बन उठती है, इठलाने और इतराने के दिन जो आ जाते हैं उसके।

क्या-क्या नहीं किया इतिहास में प्रसिद्ध राजाओं ने अपनी प्रेमिकाओं को सजाने-संवारने के लिए। कायाकल्प से उनको सुडौल करने के लिए, उनको चुम्बकत्व से भर देने के लिए क्या-क्या उपाय नहीं ढूंढे गए। यहां तक, कि प्रसिद्ध सुन्दरी **क्लियोपेट्रा** तो गधी के दूध से प्रतिदिन स्नान करती थी, अपने-आप को गोरा बनाए रखने के लिए।

और कहते हैं, कि प्रसिद्ध अभिनेत्री **मार्लिन मुनरो** भी इसी उपाय को अपनाती थी, जिसकी सुन्दरता तो आज तक सौन्दर्य का प्रतिमान बनी है।

हमने पत्रिका के पिछले अंकों में वर्णन दिए, कि किस प्रकार से ईश्वर की पुरुष को अप्रतिम भेंट नारी देह सजाई जा सकती है। पत्रिका के विगत अंकों में हमने जो विवरण दिए, वे मुख्य रूप से आधारित थे आयुर्वेद पर और योग के आसनों पर। इस बार जो प्रयोग लेकर हम उपस्थित हुए हैं, वे सर्वथा नूतन और ताजगी से भरे हैं।

ये रुढ़िवादी उपायों से नितान्त हटकर हैं, जिसे करने में उल्लास तो होता ही है, साथ ही जब इसके परिणाम प्राप्त होते हैं, तो वे जीवन को एक नई आशा और चमक से भर जाते हैं, इच्छाओं के फूल मन में खिला जाते हैं, साथ ही स्वप्न देखने के दिन आ जाते हैं युवतियों के।

हमें यह गोपनीय प्रयोग तब मिले, जब कुछ वर्ष पूर्व हमारी पत्रिका टीम कामाख्या क्षेत्र में सम्पन्न हो रहे तांत्रिक सम्मेलन की पत्रिका हेतु रिपोर्टिंग करने गोहाटी के कुछ आगे किसी अज्ञात स्थान में घने जंगलों के मध्य गई थी। उसी अवसर पर सिक्किम के वज्रयान के प्रमुख विशेषज्ञ **स्वामी अच्युतानन्द जी** से हमें परस्पर ज्ञान के आदान-प्रदान में ये विशेष प्रयोग मिले।

अच्युतानन्द जी अपने साधनात्मक जीवन के कुछ क्षणों में 'पूज्य गुरुदेव' के संग भी रहे थे, यद्यपि पूज्य गुरुदेव का उनके मत से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था, किन्तु ज्ञान रूप में तो वे वज्रयान के गुह्य सूत्रों से भी परिचित हैं ही, और उन्होंने अच्युतानन्द जी की कुछ गुत्थियों का समाधान किया था, जिसकी कृतज्ञता स्वरूप उन्होंने हमें अपने मत के यह दुर्लभ प्रयोग बिना किसी झिझक के दिए और साथ ही यह अनुमति भी दे दी, कि हम इन्हें सार्वजनिक कर सकते हैं।

वास्तव में वज्रयान में इन विशिष्ट प्रयोगों को साधक, साधिकाएं अपने ऊपर कर, स्वयं को सदैव चिरयौवन युक्त और वेग से भरा रखते हैं, जिससे कि वे साधनाओं में निरन्तर गतिशील रहें।

स्वामी जी इन प्रयोगों को अपनी एक शिष्या पर सफलता पूर्वक सम्पन्न कर सभी प्रमाणों के साथ उस सम्मेलन में उपस्थिति हुए थे, किन्तु हमने भी गोहाटी से लौटने के बाद यह उचित समझा, कि पहले हम भी इनका परीक्षण अपने ढंग से कर लें, तभी अपने पाठकों के समक्ष इसे रखें।

इस हेतु हमने केरल प्रान्त की एक साधिका को चुना, जिसका रंग हल्का सांवला था, उसके चेहरे पर आकर्षण तो था, किन्तु चेहरा मुहांसों से भरा होने के कारण और होंठों के बेडौल हो जाने के कारण चेहरे पर कुरूपता की झलक आ गई थी। शरीर, वक्षस्थल से लेकर नाभि प्रदेश तक कुछ फूला सा था। वक्षस्थलों का उभार समुचित नहीं हो सका और पेट के फूले हुए होने के कारण वे दब से गए थे। इसी प्रकार से नितम्ब प्रदेश और जंघाओं में प्राकृतिक मांसलता तो थी, किन्तु सुडौलता के अभाव में वे आकर्षित करने में समक्ष नहीं थे।

सम्पूर्ण रूप से दबे-दबे व्यक्तित्व के कारण उसके मन में हीन भावना घर कर गई थी। हमने उसके अभिभावकों से अनुमति लेकर, उसे उसकी आवश्यकता के अनुरूप **रतिकाम्य यंत्र** के सामने मंत्र-जप करने को कहा और स्वामी जी की बताई कई विधियों के अनुसार उसे उचित आहार-विहार एवं वातावरण में रखा। छः माह के बाद जो परिणाम मिले, वे स्वामी जी के बताए अनुसार ही मिले।

सचमुच उनके प्रयोगों में न तो कोई न्यूनता थी और न ही कोई अतिशयोक्ति। केरल की उस साधिका को तो जैसे एक नया जन्म ही मिल गया हो। जहां उसने जीवन के २३ वर्ष उपेक्षा और व्यंग बाणों को सुनने में बिताये थे, वहीं वह हैरान व परेशान होती है सड़क पर चलते समय मिलने वाले प्रशंसात्मक वाक्यों से। अब जाकर वह जीवन में उस आनन्द को ले रही है, जिसकी अभिलाषा संसार में प्रत्येक स्त्री रखती ही है, कि उसके सौन्दर्य को निहारा जाए और प्रशंसा की जाए।

हमें सम्पूर्ण रूप से २१ प्रयोग प्राप्त हुए थे और हमने लगभग सभी प्रयोगों को अपनी भी कसौटी पर खरा पाया है, किन्तु स्थानाभाव के कारण हम केवल ऐसे पांच चुने हुए प्रयोग दे रहे हैं, जिनकी उपयोगिता का निर्णय हमने पत्रिका कार्यालय में मिलने वाले पत्रों के आधार पर किया है। इनमें से प्रमुख प्रयोगों का वर्णन इस प्रकार है—

१. गोल व कठोर वक्षस्थल के लिए

स्त्री का वक्षस्थल होना ही ऐसा चाहिए, जिसे देखते ही पुरुष उसे पाने के लिए व्यग्र हो उठे। दबे-दबे अविकसित या गिरे-गिरे वक्षस्थल होने में नारी सौन्दर्य की कोई शान ही नहीं।

इसके लिए आवश्यक है, कि हम नित्य प्रति स्नान के बाद एकांत कमरे में शांत चित्त होकर हल्के वस्त्र धारण कर बैठ जाएं। मन में किसी प्रकार का कोई तनाव न हो और बालों को खोल कर पीठ पर फैला दें तथा निम्न मंत्र का एकाग्रता पूर्वक जप हल्के स्वर में बीस मिनट तक करें। इस समय आपकी आंखें आधी खुली और आधी बंद हों। मन में कोई व्यग्रता या हड़बड़ी न हो। यह विशिष्ट मंत्र है—

मंत्र -

ॐ ऐं स्वर्ण वल्लभाये फट्

२. आंखों के कटाव व निखार के लिए

स्त्री के चेहरे में ईश्वर ने ऐसी विशेषताएं दी हैं, कि वह बहुत कुछ बिना कुछ, बोले भी अभिव्यक्त कर सकती है। वह अपने नयनों की भाषा से भी संदेश दे सकती है, तो अपने ओठों को दबा कर, हौले से मुस्करा कर भी कुछ गुनगुना सकती है।

आप का यह सलोनापन और खिले, इसके लिए आवश्यक है, कि आपकी आंखें सामान्य स्त्रियों की आंखों से हटकर विशेष हों। इसके लिए भी साधना विधि तो उपरोक्त है, किन्तु इस हेतु जिस विशिष्ट मंत्र का उच्चारण करना होता है, वह इस प्रकार है—

मंत्र -

ॐ ह्रीं ऐं ऐं ह्रीं

३. मुहासों, झाइयों से रहित स्वस्थ व ताजगी युक्त चेहरे के लिए

चेहरा कितना भी सुन्दर व आकर्षक हो, यदि उसमें किंचित मात्र भी बेडौलता आ जाए, तो चेहरे की आब चली जाती है, जबकि सुडौल चेहरा तो अपने-आप में ऐसा नूर खुद भर लेता है, कि फिर न तो कृत्रिम प्रसाधनों की आवश्यकता रहती है और न योगासनों की।

आपके चेहरे पर झाइयां या मुहासे न हों, गाल न तो अधिक फूले-फूले हों न अधिक दबे-पिचके, साथ ही दोनों ओंठ पतले-पतले एक-दूसरे के ऊपर चिपक कर बैठे हों, तो ही चेहरे में वास्तविक सौन्दर्य है। इस हेतु जिस मंत्र का प्रयोग उचित पाया गया, वह इस प्रकार है—

मंत्र -

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं

४. आकर्षक, सुडौल व रोम रहित भुजाओं के लिए

जैसा कि पहले कहा, नारी का सम्पूर्ण शरीर अपने-आप में काव्य ही है, जिसमें से यदि एक भी पंक्ति या एक भी शब्द इधर-उधर कर दिया जाए, या वह शब्द कर्कश हो, तो पूरे काव्य की लय बिगड़ जाती है।

इसी प्रकार से नारी देह में एक प्रमुख अंग है उसकी भुजा। ये भुजाएं बेडौल हों, कोहनियों के पास झुर्रियां हों, उंगलियां कड़ी और बेडौल हों तथा कंधे से कोहनी के मध्य मांस झूलता हो, जैसा कि प्रायः देखने को मिलता ही है, तो इन सभी वातों के निदान के लिए यदि निम्न मंत्र का नित्य प्रति बीस मिनट तक जप करें, तो कुछ समय पश्चात् ऐसे लाभ होने प्रारम्भ हो जाते हैं, जो कि अन्यथा किसी उपाय से सम्भव ही नहीं—

इतिहास प्रसिद्ध राजाओं ने क्या-क्या नहीं किया अपनी प्रेमिकाओं को सजाने-संवारने के लिए . . . कायाकल्प से उनको सुडौल करने के लिए, चुम्बकत्व से भर देने के लिए . . .

मंत्र -

ॐ ऐं सुरसुन्दर्यै फट्

५. आकर्षक नितम्ब प्रदेश के लिए

नारी शरीर का यह अंग भी उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में श्रेष्ठ स्थान रखता है, मानो यही प्रदेश उसके सारे शरीर को सुडौलता तो देता ही है, साथ ही आकर्षक व भारी नितम्ब प्रदेश से युक्त स्त्री की चाल में स्वतः लय व गति बन जाती है, जो पुरुष को आकर्षित करने के लिए, उसे अपने पीछे-पीछे मंडराने के लिए बाध्य सा कर देती है।

केवल सौन्दर्य की दृष्टि से ही नहीं वरन् नारी देह की आंतरिक संरचना को भी ध्यान में रखें, तो इस प्रदेश में उसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग गर्भाशय होता है। अतः इस प्रदेश का सुविकसित और सुगठित होना तो नितान्त आवश्यक हो ही जाता है।

इस प्रयोग को शवासन में लेट कर, शांत चित्त से अपने नितम्ब प्रदेश की पुष्टि की भावना देते हुए, उसके सबल होने का विश्वास रखते हुए निम्न मंत्र को लगभग २० मिनट के जप के साथ किया जाता है। कोई आवश्यक नहीं, कि आप मंत्रों को जोर-जोर से बोलें। सही रूप में तो इन मंत्रों का गुंजरण सा करके उनकी लय को अपनी देह में व्याप्त करना है—

मंत्र -

ॐ ऐं ऐं दिव्यै ऐं ऐं

'मंत्र योग' का क्षेत्र सुविस्तृत है। नारी सौन्दर्य के साथ पुरुष सौन्दर्य भी इसकी विषय- वस्तु तो है ही, काम कला के अनेक पक्षों को भी यह विज्ञान अपने में समेटता है।

जन-समाज के समक्ष इस विज्ञान का प्रकाशन बहुत कम हुआ— इस कारणवश कि इसका दुरुपयोग न हो। वज्रयान तो अपने-आप में पूर्णरूप से काम शास्त्र पर आधारित है, इसी कारणवश इस विद्या का सर्वाधिक विकास भी वहीं हुआ है, जिसमें से कुछ प्रयोग हमें इस अंक में आपके समक्ष रखते हुए प्रसन्नता हो रही है।

दीपावली महोत्सव विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका-पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना से सम्बन्धित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है तथा साधना से सम्बन्धित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
विश्व वशीकरण ऐश्वर्य महालक्ष्मी यंत्र		पोस्ट कार्ड संलग्न
गणपति पंचानन	११	४००/-
काल भैरव गुटिका	१७	१०१/-
पांच आक्रान्त चक्र	१७	६०/-
काल भैरव महायन्त्र	१७	३६०/-
काल भैरव महाशंख	१८	१००/-
नाग चक्र	१८	५१/-
सौन्दर्या पैकेट	२५	४२१/-
तान्त्रोक्त लक्ष्मी गणपति विग्रह	२८	२००/-
तान्त्रोक्त माला	२८	२१०/-
महामाया महालक्ष्मी यंत्र	२८	२४०/-
आठ तांत्रोक्त फल	२८	८८/-
महामाया माला	२८	२४०/-
गौरा लक्ष्मी यंत्र	२६	१५०/-
१०८ कमल गट्टे के बीज	२६	१५०/-
चैतन्य शालिग्राम	३१	२४०/-
गोमती चक्र	३१	२१/-
माधव प्रिया माला	३१	२४०/-
घण्टाकर्ण यंत्र	३३	२४०/-
श्री यंत्र	३६	२४०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
श्री वृद्धिकारक माल्य	३६	२१०/-
नर्मदेश्वर शिवलिंग	३६	३००/-
गौरी गुटिका	३७	१०१/-
गौरी माला	३७	३००/-
लक्ष्मी-जगदम्बा यंत्र	३७	२४०/-
द्विशक्तिरूपा माला	३७	३००/-
तांत्रोक्त फल	३७	११/-
तांत्रोक्त माला	३७	२१०/-
त्रैलोक्य वर्षेश्वर यंत्र	५१	२४०/-
त्रैलोक्य विजय माला	५१	११०/-
गुरु यंत्र-चित्र	५१	१५०/-
पुत्रोन्नति यंत्र	५६	२४०/-
पुत्रोन्नति माला	५६	१५०/-
सूर्य यन्त्र	६६	१५०/-
सूर्यमणि माल्य	६६	२४०/-
बत्तीसा यंत्र	६६	१५०/-
हल्ट हकीक	७१	५०/-
बिकिनाऔल	७१	१००/-
दक्षिणावर्ती शंख	७१	६००/-
रतिकाम्य यंत्र	७८	२४०/-

दीक्षा	पृष्ठ	न्यौछावर
उर्वशी दीक्षा	६१	२१००/-
मनोवांछित कार्य सिद्धि दीक्षा		३१००/-
आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा		३५००/-
गृहस्थ सुख समृद्धि दीक्षा		३०००/-
गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा		२१००/-
धन प्रदाता अप्सरा दीक्षा		२१००/-
वीर वेताल सिद्धि दीक्षा		५१००/-
अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा		२१००/-
भविष्य सिद्धि दीक्षा		३०००/-
कुबेर सिद्धि दीक्षा		१८००/-
क्रिया योग दीक्षा		६०००/-
ऋण मुक्ति दीक्षा		१५००/-
रोग मुक्ति दीक्षा		२१००/-
धनवन्तरी दीक्षा		२१००/-
महालक्ष्मी दीक्षा		२१००/-
सम्मोहन दीक्षा		३०००/-
यक्षिणी दीक्षा		२१००/-
ब्रह्माण्ड दीक्षा		६०००/-

नोट : साधना सामग्री आप हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु डाक द्वारा मंगाने की स्थिति में केवल हमारे जोधपुर केन्द्र से ही सम्पर्क करें, ऐसी स्थिति में डाक खर्च भी देय होगा। सम्पूर्ण धन राशि पर मनीआर्डर कमीशन के रूप में यथोचित अतिरिक्त धन राशि पोस्ट ऑफिस द्वारा ली जाती है, जिसका संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-३४२००१(राज.),टेलीफोन : ०२६१-३२२०६

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

३०६,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. १३ , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र - यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर, (राज.), फोन : ०२९१-३२२०९

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोन-०११-७१८२२४८, फेक्स - ०११-७१८६७००

रजिस्ट्रेशन नं० ५५७६१/६३ A.H.W. पोस्टल-डी.एल.नं० १६०५२/६३

वर्ष- १४ अंक-१०